मिथिला मे जल संसाधन ओ प्रबंधन

नरेन्द्र झा

संसाधन कें समस्या बनि जायब आ ओकर निदान सुदीर्घ भविष्य मे नहि भेटब लोक कें असोथकित क' दैत छै, किंकर्तव्यूविमूढ़ आ अन्ततः यथास्थितिवादी बना दैत छै। मिथिलाक लोकक दशा कमोवेश येह अछि। यथास्थिति कें तोड़बाक वैकल्पिक बाट अपन मांटि-पानि स' पलायन, परिजन-पुरजन कें त्यागि, समाज-संस्कृति कें छोड़ि कोनो नगर-महानगरक छोटछीन यंत्र मे बदलि जेबाक नियति होइ छै। एना त' नहि छल। मिथिलाक सप्त-कन्या-गंडक,बूढ़ी गंडक, बागमती, कमला, कोसी, महानन्दा आ अधवारा समूहक नदी एतयक लेल कहियो वरदान छल। एकरे कछेड़ पर त' बसल अछि मिथिला आ एकरे स' निसृत-सृजित रहल अछि हमर संस्कृति। नचारिक भास अही सप्त-कन्याक निनाद स' भेल अछि। मुदा, बर सुखसार पाओल तुअ तीरे अभिशाप मे कोना बदलि गेल। जे दू-तीन फसली जमीन छल ओतय कयक बेर रोपल धान कियैक डूबि जाइत अछि, गहूंमक सीस कियैक खेते मे झरकि जाइए। संसाधनक उचित प्रबंधन नहि भेल- आजादी स' आइ धरि। अनियोजित बान्ह आ तटबंध बांटि देलक मिथिला कें बाढ़ि आ सुखाड़वाला क्षेत्र मे, तटबंधक भीतर आ बाहरक मिथिलावासीक रूप मे। प्रस्तुत पोथी सप्त-कन्याक यात्रा-पथ कें चिह्नित करैत जल संसाधन कें वरदान मे बदलि देबाक देखाओल गेल सपना कें उधार करैत अछि आ उचित जल प्रबंधन मे एकर निसतार तकैत अछि।

- अग्निपुष्प

ने

छु
ला

धि
शा

र्ष

वर्ष

मिथिला मे
जल संसाधन
ओ प्रबंधन

मिथिला मे जल संसाधन ओ प्रबंधन

नरेन्द्र झा

शिखा प्रकाशन, पटना

कृति स्वाम्य :
नीलिमा चौधरी

प्रकाशक :
शिखा प्रकाशन
झा एण्ड एसोसिएट्स
एस.पी. वर्मा रोड
पटना - 800 001

प्रथम संस्करण : नवम्बर 2006

आवरण सज्जा :
रमेश कुमार

मुद्रक :
ओम प्रिंटिंग प्रेस
शिवपुरी
पटना - 800 023

मूल्य : 100 रु.

Mithila Mein Jal Sansadhan O Prabandhan by Narendra Jha

समर्पण

बाढ़ि स' बेर-बेर
विस्थापित होइत
आ जीवनयापनक
लेल संघर्षरत
अदम्य साहसी
मिथिलावासी कें

अनुक्रम

अपन बात

जल कें जीवन कहल गेल छैक। जलक बिना जीवनक कल्पना करब कठिन अछि, किन्तु ई दिनानुदिन एकटा दुर्लभ संसाधन भेल जा रहल अछि। बढ़ैत जनसंख्याक कारणें पेयजल, सिंचाइ एवं औद्योगिक उद्देश्यक लेल जलक कमीक समस्या स्थानीय स्तर स' विश्व स्तर धरि अनुभव कयल जाइत अछि। जल संरक्षणक लेल सरकार तथा जनसंगठन कें मिलि कय काज करबाक चाही। जल संकटक गंभीरता सोचनीय भ' गेल छैक। पृथ्वीक कुल क्षेत्रफलक 70.8 प्रतिशत पर जल ओ मात्र 29.2 प्रतिशत स्थल अछि। सम्पूर्ण जल भंडारक मात्र 2.7 प्रतिशत स्वच्छ जल छैक। एकर 75 प्रतिशत बर्फक रूप मे अछि। बाकी 2.2 प्रतिशत भूगर्भ मे। मात्र 3 प्रतिशत व्यवहार योग्य जल अछि। भारत मे दुनियाक 4 प्रतिशत जल अछि। अर्थात् सम्पूर्ण जल-संसाधन 690 घन किलोमीटर सतह पर ओ 396 घन किलोमीटर भू-जल अछि। 2050 मे भारत मे जलक जरूरत 1180 घन किलोमीटर आंकल गेल छैक। भूमिक नींचा ओ सतहक जल कम भेल जा रहल छैक। शहर ओ गाम, प्रत्येक ठाम पेयजलक संकट बढ़ि रहल छै। बढ़ैत आबादीक लेल अधिक अन्नक जरूरत हेतैक। जलक अभाव मे अधिक अन्नक उत्पादन असंभव अछि। जल कें बिकाऊ बना देल गेल छैक। बोतल बन्द जलक व्यापार दिनानुदिन बढ़ि रहल छैक। दोसर दिस नदीक जल प्रदूषित भ' रहल छैक। गंगा ओ यमुना नदीक प्रदूषण रोकबाक हेतु अनेक प्रयास भेल छैक। अपना देश मे जलक हेतु विभिन्न राज्य मे संघर्ष चलि रहल छैक।

वैज्ञानिक शोध स' सिद्ध भ' गेल छैक जे जीवन जल स' प्रारम्भ भेल ओ पृथ्वी पर रहय स' पहिने प्रारम्भिक जीवधारी दीर्घ अवधि तक जले मे रहल। विश्वक प्राय: सब संस्कृति ओ सभ्यताक जन्म नदीक कछेड़ मे भेल। पृथ्वी पर उपलब्ध प्राकृतिक संसाधन मे जल व्यक्तिक लेल सर्वाधिक मूल्यवान अछि। जलक कोनो विकल्प नहि छैक। हमर ऋषि-मुनि प्राचीन काल स' जलक

महत्व कें मानल तथा जल ओ नदी कें पूजनीय मानि कय एकर महिमाक वर्णन कयलनि। एहि काल मे जल स' रोगक उपचारक विस्तृत वर्णन उपलब्ध अछि। जलक महिमा कें कवि ओ साहित्यकार दर्शन, जीव, प्रकृति, सौन्दर्य ओ प्रेमक प्रतीकक रूप मे वर्णन कयने छथि। विश्वक प्रमुख धर्मक अन्तर्गत कयल जाइत धार्मिक अनुष्ठान मे जलक प्रमुख स्थान छैक। लोकाचार ओ भारतीय लोक संस्कृति मे जलक केन्द्रीय स्थान छैक। विश्व मे, मुख्यत: विकासशील देश मे बढ़ैत जनसंख्या तथा जल पर बढ़ैत दबावक कारण आब एतेक दूर धरि सोचल जा रहल अछि जे अगिला विश्वयुद्ध जलक हेतु लड़ल जायत।

जल मात्र जीवनदायी नहि, अपितु गाछ-वृक्ष, मनुष्य, जानवर ओ सब जीव-जन्तुक विकासक लेल आवश्यक अछि। आर्थिक विकास ओ पर्यावरणीय सम्पोषणीयताक लेल सेहो ई परमावश्यक अछि। सबस' दुर्लभ तथा बहुमूल्य प्राकृतिक संसाधन। पृथ्वी पर जल जाहि मात्रा आ स्वरूप मे 2000 वर्ष पहिले उपलब्ध छल आइ ओही रूप ओ मात्रा मे उपलब्ध नहि अछि। अनुमान कयल जाइछ जे वर्ष 2025 तक 48टा देश मे जलक संकट मे वृद्धि होयत जाहि स' 2.8 अरब लोक प्रभावित होयत। जलक महत्व एवं उपयोग ओ भविष्य मे कमीक आशंका कें देखैत अत्यावश्यक भ' गेल छैक जे एकर प्रबंधन ओ नियोजन एहि तरहें कयल जाय जे वर्त्तमान मे सब जीवधारी ओ पर्यावरणक सुरक्षाक लेल प्रचुर मात्रा मे उपलब्ध रहय तथा भविष्यक लेल सुरक्षित सेहो।

मिथिलांचल मे नदीक बाहुल्य अछि। नदीक तट पर लोक सभ बसैत गेल तें तीरभुक्ति, तिरहुति वा तिरहुत नामान्तर एहि अंचलक भेल। पूब स' पश्चिम धरि नदीक भरमार अछि। बाढ़ि, जल विभीषिका, प्रलय, महाप्रलय एहि अंचलक लेल स्थायी समस्या अछि। डूबल सड़क, डूबल घर, ऊब-डूब करैत गाछ-वृक्ष, कोसक कोस जलमग्न धरती। बाढ़ि मे डूबैत लोक। विनाशक ऊंच ग्राफ। नदीक प्रवाह मे डूबल गाम-घर। नदी कें लय कें अनेक लोककथा, लोकगाथा ओ लोकगीत। मांटिक लोक सोनाक नैयावला गीत-कथा। मिथिला मे सातटा मुख्य नदी अछि। गण्डक, बूढ़ी गण्डक, बागमती, अधवारा समूहक नदी, कमला, कोसी तथा महानन्दा। सभ नदी गंगा मे समाहित भ' जाइछ। बूढ़ी गण्डक ओ महानन्दा कें छोरि सभ नदीक उद्गम स्थान नेपाल मे अछि। बूढ़ी गण्डक पश्चिम चम्पारण जिलाक चौतरवा चौर स' तथा महानन्दा पश्चिम बंगाल मे कार्सियांग लग स' निसृत होइत छथि। एहि दुनू नदीक अधिकांश जल ग्रहण क्षेत्र नेपाल मे छैक। एतयक सभ नदी अपन प्रवाह मे अत्यधिक मात्रा मे मांटि ओ बालु बहा कय लबैत अछि। हिमालय पर्वतमाला अपन निर्माणक प्रारम्भिक अवस्था मे अछि। भुरभुर मांटिक ढेर। एहि तरहक मांटि नदी कें सुगमताक संग कटाव कय दैछ तथा मांटि ओ बालु कें मैदान मे पहुंचा दैछ। नदी जखन पहाड़ स' मैदान मे उतरैत अछि त' ओकर वेग कम रहैत छैक। पानि, मांटि ओ रेतक संग विस्तृत क्षेत्र मे ई पसरि जाइछ तथा नदीक कछेड़क निर्माण होइछ। कछेड़ मे जमा होइत मांटि ओ बालु अगिला वर्षाक मौसम मे नदीक प्रवाह कें रोकैत छैक; जकरा काटि कय नदी अपन नव रास्ता बना लैत छैक। नदीक

धारा परिवर्तन एहिना होइछ। हिमालय स' निसृत नदीक कछारक निर्माणक प्रक्रिया रूकल नहि छैक। धारा परिवर्तन बन्द नहि भेल छैक। तें हेतु बाढ़ि अबैत अछि। बाढ़िक कारण खेत मे नव मांटि परैत छैक जे पोषक तत्व छैक। एतयक उपजाऊ मांटी आ जल बहुतायत लोक कें बसबाक हेतु आकर्षिक कयलक। फलस्वरूप एहि अंचल मे जनसंख्याक घनत्व अधिक छैक। एहि अंचलक अन्य छोट-छोट नदी – बाया, लखनदेई, खिरोई, व्याघ्रमुखी, जमुनिया, जीवछ, करेह, कमला बलान, भुतही बलान, तिलयुगा, कौशिकी उपधारा (बेतु, घेमुरा, तिलाबह, परवाने, चिलौनी, हइयाधार, लच्छाधार, कारी कोसी), सउरा, पनार, कवर, कंकई, मेची आ अन्य मिथिलाक भू-खंड कें पटबैत गंगा मे विलीन भ' जाइछ। धन-धान्य स' परिपूर्ण करैछ तथा जनक, याज्ञवल्क्य, गौतम, तीर्थंकर महावीर, कुमारिल भट्ट, मण्डन मिश्र, वाचस्पति, ज्योतिरीश्वर, विद्यापति अन्य सारस्वत विभूतिक संवर्धन करैछ।

विगत कयक दशक स' विश्व मे जलक समस्या विकट भेल जा रहल छैक। एकर कारण ई नहि जे जलक कमी भ' गेल छैक, अपितु बढ़ैत जनसंख्या, उद्योगीकरण, वाष्पीकरण ओ जल प्रदूषण जल संकटक लेल उत्तरदायी अछि। जलक दुरुपयोग जलक अपर्याप्तता उत्पन्न करैछ। जलक उचित प्रबंधनक अभाव दैनिक जीवन मे जलक कमीक प्रमुख कारण अछि। मिथिलांचल मे नदीक बहुतायत छैक मुदा जल प्रबंधन नदारद। जल बहि कय समुद्र मे चलि जाइछ। जलक प्रबंधन कोना कयल जाय से प्रमुख चुनौती अछि। जल संसाधनक नियोजन ओ प्रबंधन अत्यन्त जटिल काज छैक।

प्राचीन काल स' मिथिला मे जल संचयनक परम्परा अछि। पोखरि, इनार, कूप आदिक माध्यम स' जल संचयन होइत छल। आजुक युग मे पारम्परिक जलसंचय प्रणालीक उपादेयता छैक। मुदा आब पोखरि, इनार ओ कूप नहि खुनायल जाइछ। ट्यूबवेल प्रणाली चालू भेल छैक। एहि स' वर्षाक जलक संचयन भ' रहल छैक। एखन भूजल पेयजल तथा सिंचाइक रुप मे अर्थव्यवस्था मे आधारभूत महत्व अर्जित कयलक अछि। वर्त्तमान मे सिंचाइक हेतु 50 प्रतिशत, ग्रामीण क्षेत्र मे घरेलू उपयोगक लेल 80 प्रतिशत तथा शहरी ओ औद्योगिक क्षेत्रक लेल 50 प्रतिशत अनुमानित छैक। विश्व बैंकक एकटा अध्ययनक अनुसार सकल घरेलू उत्पाद मे भूजलक योगदान 9 प्रतिशत अछि। भूजल मे ई कमी चिन्ताक विषय अछि। वर्षा जलक संग्रहण जलक अभाव कें समाप्त करबाक प्रभावी साधन बनि सकैछ।

जल संसाधनक विकास, संरक्षण तथा प्रबंधनक विषय बहुआयामी तथा विशद अछि। जलक उपलब्धता कें बनाकय राखक लेल आवश्यक छैक विकास संग प्रबंधन कें उचित महत्व दैत प्रदूषण पर नियंत्रण रखबाक उपाय कयल जाय। बढ़ैत जनसंख्याक कारणें जलक मांग मे निरन्तर वृद्धि भ' रहल छैक। गरीबी उन्मूलनक लेल आर्थिक विकासक पूर्व शर्त होइत छैक जलक उपलब्धता। अत: जल संसाधनक एकीकृत विकास एवं प्रबंधन अपेक्षित अछि। एहि हेतु कुशल उपयोग द्वारा जलक मांग मे कमी, राष्ट्रीय स्तर पर विभिन्न नदी-घाटी मे असमान जलक न्यायसंगत अधिकारक समानताक आधार

पर प्राप्तिक दिशा मे प्रयास होयबाक चाही। जनताक अधिकाधिक सहभागिता स' जल संरक्षण एवं प्रबंधनक प्रयास कें अधिक उपयोगी तथा टिकाऊ बनायल जा सकैछ।

ब्रिटिश शासनकाल मे सरकार, प्रशासक तथा इंजीनियर सभ बाढ़ि नियंत्रणक बदला मे जलनिकासी पर जोर देलक। हुनक अवधारणा छल जे बाढ़ि नियंत्रण पर कयल गेल कोनो काज जलक निकासी मे बाधक होइछ। संगहि बाढ़ि नियंत्रण परियोजना असफल भेला पर राहत ओ पुनर्वासक खर्च सरकार कें उठाबय परैत छैक। एहि व्यय स' सरकार बचय चाहैत छल। आजादीक बाद राष्ट्रीय स्तर पर तत्कालीन केन्द्रीय योजना ओ सिंचाइ मंत्री गुलजारी लाल नन्दा 3 सितम्बर 1954 कें संसद मे बाढ़ि जनित समस्या ओ ओकर निदानक हेतु वक्तव्य देलनि। सरकार पैघ बांध बनाय बाढ़िक समस्याक निदान करय चाहि रहल छल। दामोदर घाटी निगम, भाखड़ा-नांगल परियोजना तथा हीरा कुंड बांध पर काज चालू भ' गेल छल। अर्थाभावक कारण सरकार अन्य योजना मे हाथ नहि लगबय चाहैत छल, जाहि मे कोसी परियोजना सेहो छल। प्रथम पंचवर्षीय योजना मे सरकार 'ग्रो मोर फुड' अभियानक अन्तर्गत लघु सिंचाइ योजना पर विशेष जोर देलक। दोसर पंचवर्षीय योजना मे पैघ योजना बनायल गेल तथा बिहार इरिगेशन एण्ड फ्लड प्रोटेक्शन ऐक्ट बनायल गेल। तेसर पंचवर्षीय योजना मे जल संसाधनक प्रबंधन कें महत्व देल गेल तथा बजटक 40 प्रतिशत हिस्सा जल संसाधनक हेतु प्रावधान भेल। चारिम पंचसाला योजना मे कमांड एरिया डेवलपमेन्ट एजेन्सीक सूत्रपात कयल गेल। पांचम पंचसाला योजना मे रौदी प्रभावित क्षेत्र पर विशेष ध्यान देल गेल। छठम पंचवर्षीय योजना मे लक्ष्य कयल गेल जे अग्रिम तीन पंचवर्षीय योजना मे मध्यम ओ वृहत परियोजना पैंसठि लाख हेक्टेयर सिंचाइ क्षमता सृजित कयल जायत। मुदा तेसर पंचवर्षीय योजना काल मे जे लक्ष्य राखल गेल छल ओ योजना आइ दशम पंचवर्षीय योजनाक अन्तिम वर्ष तक अपूर्ण अछि। 69टा मध्यम श्रेणीक योजना एखन तक फाइल मे परल अछि। धनक लेल मात्र सरकार पर निर्भर रहला स' सैकड़ो वर्ष तक देशक बाढ़ि रोकथाम आ सिंचाइ योजना परले रहि जायत। 47 लाख हेक्टेयर भूमि मिथिलांचल मे बाढ़ि स' पीड़ित अछि। एहि क्षेत्रक कृषि ओ आर्थिक विकासक लेल सरकार एखन तक कोनो ठोस नीति निर्धारित नहि कयलक अछि। कोसी, गंडक, बागमती, महानन्दा योजना पर आधा-अधूरा काज भेल छैक। सप्त कोसी योजना एखन तक लसकले अछि। 15 मइ 1993 क' बिहार सरकारक जल नीति बनल मुदा कार्यान्वयन नहि भेल। मिथिलांचलक सामाजिक ओ आर्थिक जीवन कें समृद्ध करबाक लेल बाढ़ि नियंत्रण, नदी सब स' सिंचाइ योजना, सिंचाइक सुविधा, नौवहन, जलापूर्ति, मत्स्य उद्योग, लवण तथा प्रदूषण नियंत्रण, 34 मिलियन किलोवाट ऊर्जाक उत्पादन कें लक्ष्य राखि दृष्टिपत्र बनय आ सख्ती स' ओकर अनुपालन शीघ्रातिशीघ्र कयल जाय तखनहि हम अपन प्रचुर प्रकृति प्रदत्त जल सम्पदा स' लाभान्वित भ' सकब। ■

गंडक

गंडकी या नारायणी कें नेपालक तराइ भाग मे शालग्रामी सेहो कहल जाइछ। गंडकीक उद्गम कथा देवीभागवतक नवम स्कंधक चौबिसम अध्याय मे वर्णन कयल गेल छैक। भगवान नारायण छल कयकें तुलसी कें अपन पत्नी बनायल जे नारायणी नाम स' जानल गेली। नारायणक छल स' तुलसी बहुत दुखी भेलीह। तखन नारायण कहल अहां अपन वर्तमान स्वरूप त्यागि कय दिव्य शरीर धारण करू तथा लक्ष्मीक स्थान प्राप्त करू ओ हमरा संग विहार करू। नारायणक एहि कथन स 'तुलसी' नदी रूप मे परिणत भ' गेलीह आ पुण्यभूमि मिथिला मे अत्यन्त पवित्र ओ पुण्यदा भ' कय गंडकी नाम स' प्रतिष्ठित भेलीह। गंडकी भगवान विष्णुक उपासना कयल। विष्णु वचन देल जे भक्त पर कृपा करबाक निमित्त हम अहांक गर्भ में शालग्राम-शिलाक रूप मे वास करब आ पुत्रत्वक लाभ देब। ओही दिन स' गंडकीक धारा मे उद्गम स्थान स' आरम्भ कय कें त्रिवेणी घाट तक सर्वत्र शालग्राम विष्णुक पाथर भेटैत अछि।

नेपालक उत्तरी सीमा पर हिमालय मे सातटा दर्रा अछि, जाहि स' तिब्बत मे प्रवेश कयल जा सकैछ। सब स' पश्चिम मे 'तकला दर्रा' छैक। एकर पश्चिम मे नंदा देवी शिखर ओ पूब मे धौलागिरी शिखर तथा सामने ब्यास हिमालय। एहि दर्रा स' कर्णाली नेपाल मे प्रवेश करैछ। एकरा पूब मे 'मुस्ताङ्' दर्रा छैक जाहि स' कारी गंडकी नेपाल मे प्रवेश करैछ। मुस्ताङ् दर्राक उत्तर पश्चिम धौलागिरी शिखर तथा दक्षिण अग्निकोण मे अन्नपूर्णाक चोटी अछि तथा पूब मे मन्ना तथा रसुआ गढ़ीक शृंग छैक। एतहि करोङ दर्रा स' गंडकीक एक शाखा, त्रिशूली नेपाल मे प्रवेश करैछ। एकर उद्गम मुस्ताङ् गिरी स' 40 मील पूब मे परैछ आ कारी गण्डकी दक्षिण दिस धौलागिरी अंचल मे बहैत प्रवेश करैत अछि। गंडकीक त्रिवेणी क्षेत्र मे देविका संगम तीर्थ, पुलस्त्य ओ पुलहक

आश्रम, ब्रह्मा-तनया संगम, कोटि-वटतीर्थ, और्व आश्रम, गोनिष्क्रमणतीर्थ, गोस्थलक तीर्थ, सुदर्शन तीर्थ, पंचनद तीर्थ, ब्रह्मपद तीर्थ, विष्णु सरोवर, गजोद्धार तीर्थ ओ अन्य पुण्यस्थल अछि। पंचनद क्षेत्र लग गंडकी नदी भारतीय सीमा तथा मिथिलाक पश्चिमी चम्पारण जिला मे प्रवेश करैत अछि। एहि स्थान कें भैंसालोटन कहल जाइछ। एकर नाम वाल्मीकि आश्रम राखल गेल छैक। पंचनद संगम गंडकक वाम पार्श्व मे ठीक नेपाल ओ चम्पारणक सीमा पर अछि। संगमक बाद गंडक नदी पश्चिम भ' जाइछ जकरा त्रिवेणी कहल जाइछ।

गंडक 14,900 वर्गमील जलग्रहण सम्प्रसार क्षेत्रक संग निसृत होइछ। पंचनद संगम गंडक नदीक वाम पार्श्व मे ठीक नेपाल ओ चम्पारणक सीमा पर अछि जे त्रिवेणी सेहो कहल जाइछ। वर्षा ऋतु मे बाढ़िक कारण गंडक एतय 8,50,000 घनफुट जलक निकासक क्षमता रखैछ। वर्ष 1954 मे 7,00,000 घनफुट प्रति सेकेण्ड जलक निस्सरण भेल छल। वाल्मीकिनगर स' थोड़ेक दूर पश्चिम जा कय गंडक दक्षिण दिस मुड़ि जाइछ। प्रथम मोड़ स' लगभग 11½ मील तक गंडक दहिना तट नेपालक भूमि मे सटैत अछि आ पूर्वी तट मिथिलाक पश्चिमी जिला स'। अर्थात् गंडक एतय 11½ मील तक चम्पारण ओ नेपालक सीमा बनि कय बहैत अछि। तत्पश्चात् उत्तर प्रदेश आ मिथिलाक सीमा रेखा बनिकय बहैछ। एतय स' गंगा संगम तक (हाजीपुर) गंडकक प्रवाह मार्ग 170 मील पूव-दक्षिण कोण मे प्रवाहित होइत अछि। गंडक जखन चम्पारणक पश्चिमी-उत्तरी कोणक सीमा स' अग्निकोण मे प्रयाण करैछ तखन 'सत्तार' घाटक पास दू धारा मे बँटि कय 'पियुराघाट'क पास एक भ' जाइछ। उक्त दू धारा मे पूर्वी धाराक तट पर 'ठाढ़ी' गाम अछि। गंडकक एहि भाग मे घड़ियाल बहुत अछि। गंडकक मुख्य धार ठाढ़ी गामक दक्षिण रामपुरवा ओ लक्ष्मीपुर गामक पश्चिम भाग स' सर्वप्रथम दक्षिण-पश्चिम मुड़ि जाइछ तथा उत्तर प्रदेशक पंडरौना तहसीलक अनहरिया गाम तक ओही दिशा मे बहैछ। एतय स' पुन: पूव भ' कय आगू होइछ तखन मिथिला ओ उत्तर प्रदेशक सीमा बनिकय अग्निकोण मे बहैत अछि तथा चम्पारण जिलाक बलुआ-वत्सराक नैऋत्य कोण मे मदनपुर गाम पहुंचैत अछि। मदनपुर स' आगू बढ़ला पर गंडकक दहिना किनार मे देवरिया जिलाक गंधवा गाम पहुंचैत छैक। एतय स' आगू अयला पर छितौनी घाट छैक जतय बगहा रेलवे स्टेशन छैक। एतय तक गंडक नदी 30 मील यात्रा पूरा करैछ। छितौनी घाटक उत्तर उपरी भाग मे गंडकक बामा किनार मे अनेक छोट-छोट नदी मिल जाइछ जे, अपन जल स' गंडक कें समृद्ध करैछ। एहि मे हरहा, सोनाह, रोहुआ, मनोर ओ भवसान नदी अछि। गंडकक जल स्वच्छ, शीतल, अतिशय प्रवाहमय ओ प्रस्तर-खंड स' भरल छैक।

बेतिया अनुमंडलक सीमा समाप्त कय गंडक मोतिहारी अनुमंडल मे प्रवेश करैत अछि।

एकर कछेड़ मे मंझरिया-निजामत, तेजपुरवा, गुंजखलिया, बरहरवा, घटिया, नगदहा ओ सखवा गाम छैक। खसवाक बाद गंडक नदी अग्निकोण स' थोड़े दूर पूर्ववाहिनी भ' जाइछ। एहि पूर्ववाहिनी धारक वाम पार्श्व मे सरेयां, नवादा आ गोबिन्दगंज अछि। गोविन्दगंज स' तीन मील पर विख्यात लौरिया अरेराज अछि, जतय सम्राट अशोक द्वारा स्थापित प्रस्तर-स्तम्भ छैक जकर ऊंचाई साढ़े 36 फुट, निचला भाग 41.8 इंच तथा शीर्ष भागक व्यास 37.6 इंच छैक। शीर्ष भाग टूटि गेल छैक जाहि पर अनुमानत: सिंहमूर्ति छल। ब्राह्मलिपि मे स्तम्भक उत्तर भाग मे 18 पंक्ति आ दक्षिण भाग मे 23 पंक्ति एखनो पठनीय अछि। आगू बढ़ला पर प्रसिद्ध ऐतिहासिक स्थल केसरिया अछि जतय सातम सदीक मध्य मे चीनी यात्री ह्वेनत्सांग आयल छलाह। एतय पैघ भग्नावशेष अछि जकर ऊंचाई एखनो 62 फुट तथा आधार पर व्यास-घेरा 1400 फुट छैक। गंडकक पूर्वी तट पर स्थित ढेकहा गाम लग चम्पारण जिलाक सीमा खत्म होइत छैक। एकर बाद अग्निकोण वाहिनी गंडकक बामा तट मुजफ्फरपुर जिला स' तथा दहिना तट सारण जिला स' सटले चलैत। चम्पारण जिला मे गंडक नदी 140 मील बहैत छथि। मुजफ्फरपुर ओ सारण जिलाक सीमा बनिकय गंडक दक्षिण-पूब कोण मे बहैत छथि। बामा तट पर मुजफ्फरपुरक विशुनपुर, चकपहाड़ तथा वगैरह निजामत नामक प्रसिद्ध गाम छैक। एहि ठाम 'मखबा' नदी उत्तर स' दखिण बहैत साहेबगंजक पश्चिम सटिकय जाइछ। वैशालीक एक मार्ग फतेहाबाद मे गंडक कें पार कय मशरक (सारण) तक जाइछ। गंडक थोड़क दूर बहला पर पुन: अग्निकोण वाहिनी होइत छथि। एतहि रेवाडीह गाम छैक। प्रसिद्ध रेवाघाट एतहि अछि। दिघवारा एतहि स जाय परैत छैक। रेवाघाट स' दक्षिण प्रसिद्ध ऐतिहासिक स्थान 'बसाढ़' अछि जे वैशाली मे पड़ैछ। वैशाली लग बाया नदी बहैत अछि। आगू लालगंज अछि। एतय स' गंडक नदी हाजीपुर पहुंचि जाइत छथि। एतहि 'कोनहरा घाट' अछि। किंवदंती छैक जे जनकपुर जयबा काल भगवान राम एहि घाट कें पार कयने छलाह। हाजीपुर स' गंडक नदी अग्निकोण मे कनेक पूब दिस झुकैत बहैत छथि। गंगा-गंडक संगम हाजीपुरक बाद प्रारम्भ होइछ जे पटना शहरक रानीघाटक आमने-सामने अछि। गंडकक एहि संगमक कछेड़ मे सारणक अन्तिम गाम सब्बलपुर छैक। यैह धार महनार पहुंचैत अछि। अग्निकोण मे मुड़ैत गंगाक दहिना कछेड़ मे बख्तियारपुरक पश्चिम गंगाक वाम पार्श्व मे गंडक-गंगा संगम करैत छथि। गंडक नदीक बामा तट एहि तरहें अछि जे मिथिलाक क्षेत्र थिक। दाहिना भाग सारण जिला ओ उत्तर प्रदेशक भूभाग अछि। गंगा-गंडक नदीक संगम पर बसल सोनपुर मे कार्तिक पूर्णिमा मे 'हरिहर क्षेत्र' मेला लगैत छैक प्रतिवर्ष। हरिहर क्षेत्र लग हाजीपुर आ सोनुपर कें जोड़यबला रेलपुर 1857 मे बनल जकर लम्बाई 2176 फुट अछि। आब नब पुल बनल अछि।

गंडक धौलागिरि पर्वत लग स' कारी गंडकक रूप मे नेपालक भैरवा जिला मे त्रिवेणी नामक स्थान स' 7620 मीटरक उंचाई स' उदगम कय मिथिलाक पश्चिमी चम्पारण जिलाक भैंसालोटन मे प्रवेश करैत 18.5 किमी तक भारत आ नेपालक सीमा बनबैत बहैत अछि। एकर बाद 80 किमी तक मिथिला ओ उत्तर प्रदेशक सीमा बनबैत अछि। त्रिवेणी स' सोनुपर तक 277 किमी मार्ग 37,407 वर्ग किमी जलग्रहण क्षेत्र छैक। सदानीरा नदी। प्रत्येक वर्ष बाढ़ि प्रभावित। नदीक जलग्रहण क्षेत्रक उपरी भाग मे 2000 किमी तथा निचला भाग मे 1250 किमी तक वर्षा होइछ। नदीक घाटीक तल सपाट अछि तथा 15 सेन्टीमीटर प्रति किमी स' ल' कय 10 सेन्टीमीटर प्रति किमी तक सीमित छैक। सतहक कम ढाल तथा अधिक मात्रा मे सिल्टक कारण गंडकक धारा मे परिवर्तन होइत रहैत छैक जे कोसी नदीक तुलना नगण्य। पश्चिमी एवं पूर्वी चम्पारणक 43टा चौरक ृंखला स' अन्दाज लगैछ जे गंडक एहि चौर सब स' अवश्य बहैत हेतीह।

गंडक क्षेत्र मे बाढ़िक रोक-थाम, सिंचाइक सुप्रबंध, ऊर्जा उत्पादन तथा पर्यावरणक समुचित व्यवस्था विगत 60 वर्ष मे नहि भ' सकल अछि। बंगाल-बिहारक शासक नवाब अलीवर्दी खांक सूबेदार मीर कासिम सर्वप्रथम गंडकक कछेड़ मे तटबंधक योजना बनौलक। तत्कालीन एक लाख रुपया व्यय कयल। मुदा राजनीतिक अस्तव्यस्तताक कारण तटबंध अपूर्ण रहि गेल। एहि अपूर्ण तटबंध कें अंग्रेजी शासन काल मे वर्ष 1769 मे पूरा कयल गेल। जाहि मे 35,940 रुपया व्यय कयल। एहि 35,940 रुपया मे स' 34,432 रुपया गंडक तटबंधक आसपास बसयवला स' ओसूल कय लेलक। 1824 एवं 1932 मे बाढ़ि स' गंडकक पश्चिमी तटबंध अनेक स्थान पर छिन्न-भिन्न भ' गेल। 1834 मे स्थानीय जनता स' पैसा ओसूल कय तटबंध कें जिला बोर्ड द्वारा ठीक करायल गेल। वर्ष 1877 मे बाढ़ि स' तटबंध जगह-जगह पर टूटि गेल जे दू लाख रुपयाक लागत स' दुरूस्त कयल गेल। 1971 मे गंडक मे पुन: भीषण बाढ़ि आयल जाहि स' कतेको गामक नामोनिशान नहि रहल।

1873-74 मे अकाल पड़ल छल। सरकार सारण जिला मे सारण नहर आ चम्पारण जिला मे तिउर नहरक काज शुरू कयलक। त्रिवेणी नहर (चम्पारण) मे काज 1913 मे पूरा भेल किन्तु सिंचाइ 1909 मे शुरू भ' गेल छल। एहि नहर स' एक परेशानी छल। ई नहर भैंसालोटन स' प्रारम्भ भ' सोझे पूब दिस जाइत छल। जमीनक ढाल छल उत्तर स' दक्षिण दिस। उत्तर स' बहैत जल एहि नहर कें जगह-जगह पर तोड़ि दैत छल जाहि स' एकर मरम्मति मे बहुत खर्च होइत छल। साधारण वर्षावला वर्ष मे एहि नहरक आवश्यकता नहि पड़ैत छल। जखन जरूरत होइत छल नहर कें टूटल रहला स' सिंचाइ नहि भ' पबैत छल। सारण तथा तिउर नहरक हालत एहन भ' गेल छल जे निलहा गोरा ओ चम्पारणक जमींदार एकर संचालनक खर्च पेशगी मे देबाक हेतु तैयार छल। सिंचाइ

विभाग तैयार नहि भेल।

1946 मे डा. राजेन्द्र प्रसाद अन्तरिम सरकार मे कृषि मंत्री केन्द्र मे बनायल गेलाह। गंडक नदी स' सिंचाइक सम्भावना हेतु सरकार स' प्रस्ताव कयल गेल। बिहार सरकार सिंचाइ योजनाक प्रारूप प्रस्तुत कयलक। मुदा उत्तर प्रदेश सरकार गंडक नदी सिंचाइ योजना पर कोनो ध्यान नहि देलक। गंडक परियोजनाक प्रति उत्साहित नहि भेल। वर्ष 1954 मे 31.94 करोड़ लागत वला गंडक योजना सरकार कें समर्पित कयल गेल। बाद मे 1956 में केन्द्रीय सिंचाइ ओ ऊर्जा मंत्री हाफिज मुहम्मद इब्राहिमक सत्प्रयास स' भैंसालोटन मे बराज बनयबाक सहमति बनल। 7 मार्च 1956 मे बिहार ओ उत्तर प्रदेशक बीच समझौता कयल गेल। कारण गंडकक जल एहि प्रदेश स' सेहो सरोकार रखने अछि। पुन: दोसर समझौता भारत ओ नेपाल सरकारक बीच 4 नवम्बर 1959 मे भेल। वर्ष 1947 स' 1964 तक अर्थात 17 वर्ष तक योजनाक तैयारी, सर्वेक्षण, रूपांकण आदि मे लागि गेल। 4 मइ 1964 कें नेपालक तत्कालीन महाराजाधिराज महेन्द्र एहि योजनाक उद्घाटन वाल्मीकिनगर मे कयल। बराजक शिलान्यास भेल। एहि परियोजनाक निम्नांकित अंग छल :

1. सुमेश्वर पहाड़ मे भैंसालोटन (आब वाल्मीकिनगर) मे गंडक नदी पर एकटा बराजक निर्माण।

2. 200 किमी मुख्य पश्चिम नहरक निर्माण जकर 19 किमी नेपाल मे, 112 किमी उत्तर प्रदेश मे आ 69 किमी मिथिलांचल मे। एकरा सारण मुख्य नहरक नाम स' जानल जाइछ। बराज स' एकर जलस्राव क्षमता 18,800 क्यूसेक जाहि स' नेपालक भैरवा जिला मे 0.11 लाख हेक्टेयर मे, उत्तर प्रदेशक देवरिया ओ गोरखपुर मे 3.78 लाख हेक्टेयर तथा गोपालगंज, सिवान, सारण ओ पश्चिमी चम्पारण जिला मे 4.00 लाख हेक्टेयर भूमि मे सिंचाइ करत। सारण मुख्य नहरक सात शाखा नहर – कटैया, चपटा, पतेहरा, चपिया, हथुआ, भढ़ौरा, महराजगंज ओ सीवान नहर अछि।

3. 283 किमी मुख्य पूर्वी नहरक, जे तिरहुत नहर कहल जाइछ, जलस्राव क्षमता 15,645 क्यूसेक अछि। शाखा नहर अछि - दोन, सुगौली, जमुलिया, वैशाली, जैतपुर, घोड़ासाहन, मालिकपुर ओ डुमरिया। एहि नहर प्रणाली स' पश्चिमी ओ पूर्वी चम्पारण, मुजफ्फरपुर, वैशाली ओ समस्तीपुर जिलाक 5.44 लाख हेक्टेयर भूमिक सिंचाइ प्रावधान अछि।

4. 97 किमी लम्बा नेपाल पूर्वी नहर।

5. 34 किमी लम्बा नेपाल पश्चिमी नहर।

6. नेपाल पश्चिमी नहर पर सुरजपुरा मे 15 मेगावाट जल विद्युत उत्पादन केन्द्र।
7. 43टा चौरक जल निकासीक लेल जल निकास वाहिकाक निर्माण।
8. त्रिवेणी नहरक आधुनिकीकरण एवं गंडक नहर मे आत्मसातीकरण।
9. 907 किमी सिकरहना तटबंधक निर्माण।
10. नेपाल मे सीमित नौका संचालनक सुविधा।

एहि बांधक जल निकास मार्गक लम्बाई 2749 फुट ओ बांधक शिखरक सतह 347 फुट ऊंच बनल छैक तथा जल-निकास द्वार 60 फुटक अछि।

एहि परियोजना पर व्यय 40.47 करोड़ रुपया प्राक्कलित छल जे वर्ष 1985 तक 365. 59 करोड़ रुपया खर्च भ' गेल छैक। बराज ओ तटबंध निर्माणक काज पूरा भ' गेल। नहरक निर्माण काज एखनो कतेको ठाम बाकी अछि। जलजमावक क्षेत्र तटबंधक बाहर बनि गेल छैक। जाहि नहरक निर्माण भेल ओकर वितरण प्रणाली नहि बनल। जतय बनवो कयल ओ ठीक स' नहि बनल। जे वितरण प्रणाली बनल ओकर रखरखाव गाम मे जल पंचायत कें करबाक छल। जल पंचायतक नामोनिशान नहि। परिणामस्वरूप बहुतो नाली मे गाद जमा भ' जाइछ, घास उगि जाइछ या पूर्ण रुपेण विनिष्ट भ' जाइछ। जल अनावश्यक रूप स' खेत मे छितरा जाइछ, किसानी कें नष्ट कय दैत अछि या जल धरातलक अन्दर समा जाइछ। 1985-86 मे सिंचन क्षमता मात्र 52.47 प्रतिशत छल। जल-निकासीक लेल 143.38 करोड़ रुपयाक अनुमानित लागत स' अलग स' तैयार कयल गेल छल जकर अनुमोदन बाकी अछि। अद्यतन एकटा सरकारी रपटक अनुसार पूर्वी चम्पारणक क्षेत्र मे खरीफक काल मे 4,02,175 एकड़ जमीन जलमग्न रहैछ जखन कि खरीफक लाभान्वित क्षेत्र 268175 एकड़ तथा रबीक लाभान्वित क्षेत्र 128,843 एकड़ अछि। 1985 मे गंडक परियोजनाक फेज 2क परम्परागत काज बन्द कय देल गेल छैक। बांध अधिकांश ठाम अपूर्ण अछि जाहि स' खतरा बढ़ि गेल छैक। त्रिवेणी नहरक काज अपूर्ण अछि। नदीक जलग्रहण क्षेत्रक ग्रहण क्षमता घटि गेला स' गंगाक समतल मैदान मे जलप्रवाहक गति बढ़ैत जा रहल छैक। नेपालक उपरी जल ग्रहण क्षेत्र मे जल कें बिना रोकने तटबंधक निर्माण जरूरी छैक। एकरा पर काज परमावश्यक। कारण कोनो दोसर उपाय नहि। आइ गंडक परियोजनाक मूल समस्या जलजमाव, जलनिकासी ओ जलग्रहण क्षेत्र मे वृक्षरोपण अछि।

गंडक परियोजना अपूर्ण छल। 1985 मे योजना आयोग, भारत सरकारक निर्देश पर रोकि देल गेल। फलस्वरूप मिथिलांचल मे 11 लाख 52 हजार हेक्टेयर सिंचन क्षमताक विरुद्ध मात्र 8 लाख 96 हजार हेक्टेयर भूमि सिंचन व्यवस्था भ' सकल। वर्ष 1985 तक गंडक पूर्वी नहर प्रणालीक सिंचन क्षमता 5 लाख 76 हजार हेक्टेयर छल। सम्प्रति सिल्ट

ओ जल जमावक कारणें सिंचन क्षमता 2 लाख 26 हजार हेक्टेयर घटि कय भ' गेल छैक। सिंचन क्षमताक पुनर्स्थापनक हेतु केन्द्र राष्ट्रीय समविकास योजना कार्यक्रमक अन्तर्गत एहि काजक सम्पादनक निर्णय लेने अछि। एहि काजक विस्तृत प्रतिवेदन भारत सरकारक वैपकास प्रस्तुत कयलक अछि जकर प्राक्कलित राशि 310 करोड़ रुपया स्थिर भेल छैक। एहि काजक मानिटरिंग वैपकास कय रहल अछि। शत प्रतिशत व्यय केन्द्र सरकारक। एहि काज कें पूरा भ' गेला पर 3 लाख 50 हजार हेक्टेयर सिंचन क्षमता मे वृद्धि होयत। वर्ष 2008 तक काज पूरा होयत। मुख्यत: पूर्वी चम्पारण, पश्चिमी चम्पारण, मुजफ्फरपुर ओ वैशाली जिला लाभान्वित होयत। खेतीक लेल प्राणदायी होयत। जीर्णोद्धार काज पर योजना आयोग, जल संसाधन मंत्रालय, केन्द्रीय जल आयोग, वैपकास, राज्य सरकारक अधिकारीक संयुक्त बैठक कयल गेल। कार्यान्वयनक लेल उपस्थित कठिनाई पर विचार भेल अछि। काज विशेषज्ञ कम्पनी कें देल जा रहल अछि। ■

बाया

बाया एहि अंचलक एकटा महत्वहीन तथा क्षीण नदी अछि। पुराण ओ महाभारत मे विशल्या, विशाला नाम स' चर्चित। वैशाली नगरीक क्षेत्र स' बहबाक कारणे विशाला या विशल्या नाम छल। एकरे अपभ्रंश बाया थिक। एहि नदीक उद्गम स्थान गंडक नदीक तटबंध स' सटल सुन्दरपुर गामक दक्षिण ढेकहाक अग्निकोण मे अछि। थोड़ेक दूर पूब-दक्षिण बहला पर भखवा नामक नदी एहि मे संगम करैछ। बाया नदी समस्त सोमेश्वर पहाड़क जल लय कें भखवाक धार स' बहिकय मुजफ्फरपुरक साहेबगंज तथा करनउल अबैत छल। भखवाक संबंध सोमेश्वर पहाड़क नदी स' टूटि चुकल अछि एवं महत्वहीन नदी भ' गेल अछि। आब भखबाक उद्गम मोतिहारी शहर स' 9 मील दक्षिण-पश्चिम तुरकौलिया गामक दक्षिण मे अछि। बाया नदी चिंतापुर स' जगदीशपुर तक अग्निकोण-वाहिनी भ' कय चलैत जगदीशपुर स' पूर्व-वाहिनी रसूलपुर पहुंचैत अछि जे गोरौल रेलवे स्टेशन स' थोड़ेक दूर अग्निकोण मे बहैत हाजीपुर-मुजफ्फरपुर रेल लाइन कें पार कय जाइछ। करहरो गाम मे अबैछ जे भगवानपुर रेलवे स्टेशनक पूब मे अछि। एतय स' अग्निकोण मे बहैत महुआ पहुंचैत अछि। महुआ स' सिंघरा बजुर्ग, जनदाहा ओ सालहा अयलाक बाद देढ़पुरा तथा मुहम्मदपुर गाम अबैछ जतय एकटा छोट नदी सरिता बाया मे मिल जाइछ। ई नदी लालगंजक पास बहैत अबैछ एवं महनार रोड रेलवे स्टेशनक पास मुहम्मदपुरक निकट बाया मे मिल जाइछ। एहि संगमक बाद बाया मुजफ्फरपुर जिला स' वासुदेव चंदल गाम स' निकलि कय समस्तीपुरक हसनपुर एवं शाहपुर पटोरीक पास पहुंचैत अछि। एतय स' बाया नदी अग्निकोण मे बहैत अरैया, नंदिनी परशुराम, शरहद माधो गाम मे बहलाक बाद अपन धार कें उत्तर दिशा मे मोड़ैत अछि तथा मोहीउद्दीननगर रेलवे स्टेशन स' पश्चिम रेल लाइन मे सटि जाइछ। तकर बाद बाजितपुर पहुंचैत अछि। बाजितपुर मे गंगाक एकटा स्रोत बाया स' मिल जाइछ। यैह ओ बाजितपुर थिक जाहि स' आगू महाकवि विद्यापति नहि बढ़ि सकलाह आ गंगा हुनका अपन शरण मे लय लेलखिन्ह। एतहि ओ अन्तिम गीतक रचना कयलनि –

> बड़ सुख सार पाओल तुअ तीरे। छाड़इते निकट नयन बहुनीरे।
> करजोड़ि बिनमओं बिमल तरंगे। पुन दरसन होअ पुनमति गंगे।।

बाया नदी खान मिरजापुर गामक बाद बेगूसराय जिला मे प्रवेश करैछ। बाजितपुर गाम स' दक्षिण भरगंगबला स्रोत समस्तीपुर ओ बेगूसरायक सीमा रेखा बनबैत अछि। बाया चमथा गाम दिस बहिकय अबैछ आ वर्षा ऋतु मे बाया एवं गंगाक जल बछबारा स' बरौनी तकक भूमि कें आप्लावित कय दैत छैक। एतहि बायाक पूर्वी कछेड़ पर बृहत तटबंधक निर्माण भेल छैक। एतय स' बाया नदी पूब दिशा मे बहैत तेघड़ा स' पश्चिमोत्तर दलसिंगसरायक मार्ग स' सटि जाइछ। तेघड़ाक बाद बाया अग्निकोण मे बहैत अछि। एकर बाद फुलबड़िया तथा बरौनी अछि जे एकर वाम पार्श्व मे स्थित अछि। एतय स' बाया दक्षिण दिशा मे मुड़िकय निपनिया, बारो तथा अमरपुर पहुंचि कय गंगा मे प्रवेश कय जाइछ।

विशाला नगरी जे वैशाली स' ख्यात अछि वज्जि प्रदेशक राजधानी छल। जतय विश्वक प्रथम गणराज्य स्थापित भेल छल। वैशाली तीन भाग मे बटिकय बसल छल। प्रथम मे 7000 प्रासादक गुंबद स्वर्ण-पत्र स' मढ़ल, दोसर मे 14000 गुंबद रजत पत्र तथा तेसर मे 21,000 गुंबद ताम्रपत्र स' आच्छादित छल। एकर पूब भाग मे कुंडग्राम अछि जतय जैनधर्मक 24म तीर्थंकर भगवान महावीरक जन्म भेल छल। एतयक शासक चेटक छलाह जकर छोट कन्या मगध सम्राट बिंबिसार स' व्याहल गेल छलीह। अजातशत्रु हिनके बालक छलाह। अम्बपाली वैशालीक सुप्रसिद्ध वारवनिता छलीह। हिनके ओतय भगवान बुद्ध अपन संघक संग भोजन कयने छलाह तथा ओहि श्रद्धावतीक सौभाग्य बढ़ोने छलाह। वैशाली जैन ओ बौद्ध धर्मक केन्द्र नगर छल। वैशालीक प्राचीन गौरवक इतिहास बड्ड विशाल अछि।

तेघड़ा थाना मे बाया नदीक तट पर तटबंध आदिकाल मे बनल छल जाहि स' तेघड़ा थानाक पैघ भूभाग कें बाढ़ि स' सुरक्षा भेटैत छलै। ■

बूढ़ी गंडक

बूढ़ी गंडक नदी सोमेश्वर पहाड़क पश्चिम भाग हरहा दर्राक समीप स' 900 वर्गमील सम्प्रसारक संग निकलैत अछि। पश्चिमी चम्पारणक बगहा स' अग्निकोण दिस चारि मील दूर पर स्थित विश्वम्भरपुर गामक एकटा चौर स' निसृत होइछ। एहि जिला मे ई सिकरहना नाम स' ख्यात अछि। शिकार योग्य वन स' ई नदी बहैछ तें सिकरहना नाम स' एहि जिला मे जानल जाइत अछि। एहि मे 15 सहायक निर्झरिणी-हरहा, कापन, मसान, रामरेखा, वाण गंगा, पण्डई, घोरम, करटहा, उरई, कोनहरा, झरही, तेलाबे, तियर, अनुखा ओ घनौती अछि। चम्पारण, मुजफ्फरपुर, समस्तीपुर, बेगूसराय, खगड़िया जिला कें सिंचैत मानसी स' 7 मील दूर अग्निकोण मे गोगरी तक बूढ़ी गंडक आ गंगाक संगम क्षेत्र अछि। एहि नदीक चालि-ढालि अत्यन्त कुटिल। चम्पारणक लौरिया नन्दनगढ़क पास स' एकर चालि वक्र होइत छैक जे गंगा संगम तक बनल रहैछ। सर्पिल चालिक कारण अनेक प्रवाह पथक निर्माण करैछ। सम्पूर्ण सोमेश्वर पहाड़ श्रेणीक जल बहिकय एहि मे अबैछ जाहि स' बूढ़ी गंडक विशाल नदी बनि जाइछ। किन्तु बूढ़ी गंडक कोनो अलग नदी नहि अछि। एकर वास्तविक मूल स्रोत हरहाक मूल स्रोत जे आगू बढ़ला पर मसान नदी तथा दूर गेला पर सिकरहना नाम स' अभिहित होइछ। एहि नदीक लम्बाई 580 किमी तथा बाढ़ि प्रवण क्षेत्र 8.21 लाख हेक्टेयर अछि।

हरहा बूढ़ी गंडक नदीक संग संगम चौतरवा गामक उत्तर दिशा मे तथा पिपराक नैर्ऋत्य कोण मे करैछ। एकरा मसान नदी सेहो कहल जाइछ। हरहा नदी पर्वतीय भाग स' उतरैत अछि। ओतय स' मसान नाम स' जानल जाइछ। मसान नाम धारण करबाक प्रमुख कारण अछि जे स्रोत वाणेश्वर महादेवक पश्चिमी हिस्सा स' चलि कय पश्चिम दिस बहैत अछि। ई स्रोत डुमरी गामक

सटले नैर्ऋत्य कोण मे हरहाक संग संगम करैछ। हरहाक नाम समाप्त कय अपन नाम कें विख्यात करैत अछि। हरहा स' सम्मिलित भ' मसान आगू बढ़ैत अछि तखन चुरहरवा गाम लग एक दोसर नदी सिंगहा नाम स' अभिहित कयल जाइछ। एकर उद्गम स्थान मसानक पूब मे अछि। सिंगहाक एकटा शाखा चुरहरवाक गाम संगम करैछ ओ दोसर धार रामनगर गाम मे अबैत अछि। ओतय स' लौरिया नन्दन गढ़क उत्तर तथा मठिअरियाक नैर्ऋत्य कोण मे बूढ़ी गंडक स' संगम करैछ। सिंगहाक एहि भागक नाम रामरेखा नदी अछि। संगमक पूर्वहि वाणेश्वर, सोमेश्वर, मानदेवा तथा कुम्भकरण आदि चोटी स' बहयवाली अनेक निर्झरिणीक जल लय कें बहैत अछि। रामनगर स्टेशन लग अबैत अछि। एतय स' दक्षिण दिस बहैत पचरुखा, पकरी, मधुबनी गवनन गाम अबैत अछि। सात नदीक जलभंडारक संग रोआरीक पास रामरेखा संयुक्त होइत छथि। एहि सातो नदी मे सब स' पश्चिम भागक नदी थिकीह वाण गंगा जे नरकटियागंजक उत्तर सोमेश्वरक अन्य पांच नदीक जलग्रहण कय नरकटियागंज पहुंचैत अछि। रेल लाइन कें पार कय नरकटियागंज-लौरियाक बगल स' सिरहथवा गाम होइत मढ़ियाक उत्तर मे आबि कय नैर्ऋत्य कोण मे चलैत अछि जतय एकटा छोट नहरक पानि एहि मे खसैत अछि। जे वाणगंगाक छारन धार थिक। एतहि लौरिया नन्दन गढ़क पूर्वोत्तर कोण मे बूढ़ी गंडक मे प्रवेश कय जाइछ। बेतिया नगरक पश्चिम कोण मे झुकि कय उत्तर दिशा मे 12 मील धरि जाइत अछि।

बूढ़ी गंडक अपन उद्गम स्थान विश्वम्भरपुर चौर स' चलि कय चौतरवा, करजनिया, हरपुर, डुमरा, लिपनी, गंदौली आदि गामक पूब स' बहैत तथा उपरोक्त नदी सबहक स्थान-स्थान पर जलग्रहण करैत लौरियानन्द गढ़क उत्तर अबैछ ओ वाण गंगा स' संगम करैत अछि। एतय एकटा पैघ नदीक स्वरुप धारण करैत अछि। एहि संगमक बाद बूढ़ी गंडक मे गति अधिक भ' जाइत छैक आ ई बिन्द्रावन नामक स्थान धरि पहुंचैत छथि जतय गांधी सेवा संघ संस्था अछि। एतहि 1936 मे अखिल भारतीय गांधी सेवा संघक अधिवेशन भेल छल। ई नदी बिन्द्रावनक अग्निकोण मे अपन धारा कें उत्तर-पूब आ फेर दक्षिण मुड़िकय गोपुर-द्वार बनवैत छथि तथा अग्निकोण मे बहैत चनपटिया पहुंचैत छथि। एतय स' एकर धारा सोझे पश्चिम स' पूब मुड़िकय बहैत बकुलहर नामक स्थान मे अबैत छथि जतय पंडई नामक नदी स' संगम करैत छथि। चम्पारणक जिला मे सोमेश्वर पर्वतक पूर्वी सीमा एहि पंडई नदीक तट पर छथि। छरदवाली गामक उत्तर मे घोरम नामक नदीक जल कें पंडई आत्मसात करैत छथि। घोरम नदी नेपालक पश्चिम स्थित चुरियाघाट पहाड़ी भाग स' निकलैत अछि। चम्पारण जिला मे ई दू धारा मे बंटि जाइछ। करटहा घोरमक सहायक निर्झरिणी एहि जिलाक उत्तर-पूब कोण पर स्थित पंचगछिया गाम स' चलैत अछि। ई मैनाटांड थानाक उत्तरी सीमा पर अछि। करहटा दक्षिण चलिकय बलिरामपुर ओ महुआवा नामक गाम होइत भेड़िहारी गाम लग घोरम

स' संगम करैत छथि। घोरम समूह ओ करटहा समूहक अनेक स्रोतक जलभंडार लय कें पंडई नदी बकुलहरक पास बूढ़ी गंडक मे समाहित होइत छथि।
बूढ़ी गंडक नदी सोनबरसा स' थोड़े दूर पूब दिशा मे बहला पर फुलवरिया गामक दक्षिण अयला पर उरई निर्झरिणी मे संगम करैछ जे नेपाल मे लखरिया नदी कहल जाइछ। सिकटा स' होइत तीन धारा–सकती, भेलवा ओ बैरियावर्त्त बूढ़ी गंडक मे खसैत अछि तथा बहुआरो गामक समीप उरई स' मिलैत अछि। ई सब तिलाबे नदीक पश्चिमी भाग मे मनुसमारा नामक नदीक धारा थिक। उरई नदी चम्पारण ओ नेपालक परसा जिला सीमा बनबैत दक्षिण दिशा मे बहैत मैनाटांड नामक स्थान मे अबैत क्रमशः भेड़िहरवा, पकुरवा भउंरा गाम धरि 13 मील तक चलैत अछि। किछु दूर बढ़ला पर रक्सौल-नरकटियागंज रेल लाइन कें पार करैछ। सुगौलीक पास मोतिहारी मे पद-निक्षेप करैत अछि। कोनहरा चम्पारण जिलाक हृदय प्रदेशक नदी एहि जिला मे जनमैत अछि आ विलीन भ' जाइछ। झरही बेतिया नगरक पश्चिमोत्तर कोण मे स्थित दुलारपट्टी गामक पासक चौर स' निकलैत छैक। झरही चन्द्रावत नाम स' सेहो जानल जाइछ। जखन ई नदी सुगौली आ झंझवलिया नामक स्टेशनक मध्य रेललाइन कें पार कय नारायणपुर गामक पश्चिमोत्तर भाग मे अबैछ कोनहरा नाम स' जानल जाइछ। कोनहरा कें आत्मसात कयला पर बूढ़ी गंडक मोतिहारी मे प्रवेश करैछ सुगौलीक पास। सुगौलीक बाद एकर धारा अग्निकोण बाहिनी अत्यन्त कुटील ओ ओंठिया लट सन ऐंठैत बहैत छथि। लोकनाथपुर नामक गामक पास तेलाबे नदी एहि मे प्रवेश करैत छथि। तेलाबे नदी नेपालक बीरगंजक पश्चिम भाग स' दक्षिण दिस स' बहैत रक्सौलक पश्चिमी भाग मे एहि अंचल मे प्रवेश करैछ। रामगढ़वा मे पहुंचि तेलाबे नदी अग्निकोण वाहिनी भ' सुगौली-रक्सौल रेल पथ कें पार करैत अछि। एतय बूढ़ी गंडक तियर नामक नेपालक उपत्यका मे दक्षिण दिस बहैछ नैऋत्य कोण मुंह कय कें महुआवा गामक पास एहि अंचलक सीमा मे प्रवेश करैत छथि। छोड़ासाहन मे बूढ़ी गंडक मे संगम करैछ। एतहि अनुखा नामक नदी दक्षिण स' अबैछ जे जमुई सेहो कहल जाइछ। एतय सिमरांव गाम अछि। अनुरखा नदी घोड़ासाहनक पूब भाग मे स्थित भगवानपुर स' होइत नैऋत्य मे चलैछ बूढ़ी गंडक मे मिल जाइछ। धनौती गंडकक शाखा नदी अछि जे हरसिद्धि थानाक तेजपुरवा गामक पश्चिम स' तथा झझरिया निजामत गामक पश्चिमोत्तर भाग मे निकलैत अछि जे बेतिया आ मोतिहारीक सीमारेखा बनवैछ एवं मोतिहारी नगर मे दूटा झीलनुमा दू पैघ पोखरि मोतीक हार सदृश स्वच्छ अछि। बूढ़ी गंडक बाराक (चकिया रेलवे स्टेशन) बाद अग्निकोण मे चलैत मेहसीक पूर्वोत्तर मे पहुंचैत छथि। ओतय स' नदीक धार तीव्र ओ वक्र भ' जाइछ आ पूब दिशा मे बहैत पिपरा गाम अबैत अछि। वृजी नामक गाम मे पहुंचैत छथि जे चम्पारण जिलाक पूब दक्षिण सीमाक अन्तिम गाम अछि।
बूढ़ी गंडक अपन प्रवाह-पथ मे विभिन्न अलंकरण कें ग्रहण करैत मुजफ्फरपुर जिला

पहुंचैत छथि। औंठीनुमा धारा, चन्द्रहार सदृश झूलैत धार, कारी औंठिया कोश, हंसुली सदृश वक्र, झुमका सदृश गोल धारा धारण करैत एहि जिला मे पहुंचैत छथि। प्रवेशक बाद सभ स' पहिने दक्षिण दिशा मे बहैत तीनटा द्वीप बनबैत नरियर तथा पानापुर गाम धरि डोरी सन ऐंठैत पहुंचैत छथि। पानापुर स' पूब खरिका गाम होइत पूर्वोत्तर कोण मे मुड़ैत भिलाईपुर, मधुबनी-कांटी अबैत छथि। एतय घाट अछि जे मुजफ्फरपुर स' कांटी रेलवे स्टेशन होइत शिवहर मार्ग अछि। एकर समीपे मे बागमती स' संगम करैत रायपुरा गाम पहुंचैत छथि। आब एतय बागमतीक नामोनिशन नहि। एकर बाद कुशी-कांटी नामक स्थान मे पहुंचि अपन दुनू तट पर दूटा टापू बनबैत अछि। एहि द्वीप स' थोड़ेक दूर पर पैगम्बरपुर कोझुआ पहुंचैत छथि जतय हिनक धार अंग्रेजीक यू अक्षर समान। एकर बादे मुजफ्फरपुर शहरक पश्चिमोत्तर कोण मे पहुंचैत छथि। ई नदी मुजफ्फरपुर शहरक उत्तर मे पश्चिम स' पूब दिस गोमूत्रिका आकृति मे बढैत क्रमशः नजीरपुर, पीरमुहम्मदपुर, रोशनपुर, राजवारा गामक निकट होइत दक्षिण दिस मुड़िकय बिंदा गाम पहुंचैत छथि। एतहि मुजफ्फरपुर नगर स' सिलौत होइत दरभंगा जायबला सड़क बूढ़ी गंडक कें पार करैत अछि। मुहम्मदपुर-मोहन-दामोदरपुर गाम पहुंचैत छथि। ओतय स' ई नदी समस्तीपुर जायबला मार्गक उत्तर-पूब भाग मे सटिकय अग्निकोण वाहिनी होइत छथि।
अब्दुलपुर रैनी गाम स' बूढ़ी गंडक उत्तर पूब चलि कय समस्तीपुर जिलाक समीप प्रवेश करैत छथि। दहिना तट पर पूसा अछि। बथुआक पास समस्तीपुर जायबला सड़क स' सटिकय बहैत छथि। बथुआ गामक पास ओयनी गाम अछि जतय मिथिलाक शासक रहैत छलाह। कीर्ति सिंह प्रतापी राजा भेलाह। हिनके नाम पर महाकवि विद्यापति कीर्तिलता नामक पुस्तक लिखलनि। ओयनीक बाद ई नदी पूर्वोत्तर कोण मे बहैत छथि। जतय मुक्तापुर गाम अछि। ओतय स' समस्तीपुर नगरक सटले उत्तर-पूब भाग मे पहुंचैत छथि। समस्तीपुरक उत्तरी भाग मे प्रवाहित बूढ़ी गंडक नदीक बाम तट पर अकबरपुर सारी गाम अछि। ई नदी बागमतीक दहिना धार कें सटकय अग्निकोण मे बढ़ैत सिंघिया-बुजुर्ग पहुंचैत छथि। प्रवाहक बामा तट पर रोसड़ा अछि। एकर बाद महथो नामक गाम मे प्रवेश करैत समस्तीपुर ओ बेगूसराय जिलाक सीमा रेखा बनबैत छथि। देसरी (समस्तीपुर) ओ बेगूसराय जिलाक रामपुरक पास स' बूढ़ी गंडक एहि जिला मे प्रवेश करैत छथि। धारा कुटिल ओ पग-पग पर ऐंढैत चलैत चेरिया-बरियारपुर पहुंचैत छथि। एतय स' दक्षिण बढ़िकय नदी पूर्वोत्तर कोण मे मुड़ैत ठठा गाम अछि। एहि गामक सामने नदीक बाम भाग मे प्रसिद्ध मझौल गाम छैक। मझौलक पश्चिम नदी अपन धाराक उत्तर, पूब ओ दक्षिण दिस बहाकय नैऋत्य कोण मे एक अन्तरीप बनबैत छथि। उत्तर मे मेघौल स' प्रारम्भ कय कें दक्षिण मे मझौल तकक पूर्वी भाग मे एकटा विशाल झील अछि। जकर मध्य मे जय मंगलगढ़ नामक द्वीप अछि। यैह झील कबरताल नाम स' ख्यात अछि। लम्बाई 8 मील आ चौड़ाई दू मील, 1800 एकड़ मे फैलल।

चेरिया-बरियारपुर स' 4 मील उत्तर-पूब आ बेगूसराय स' 12 मील उत्तर मे। ढढा गामक बाद नैऋत्य कोण मे चलि कय ई नदी डीहपुर पहुंचैत छैक, जतय छोटकी जमुआरक जल लय कें बलान नदी बूढ़ी गंडकक दाहिना भाग मे प्रवेश कय मिथसारी गाम मे संगम कय पानापुर गाम पहुंचैत छथि। एकर बाद किछु दूर बहला पर बलिया लखमिनिया स' पूर्वोत्तर कोण मे चलैत खगड़िया पहुंचैत अछि। सादपुर मे बूढ़ी गंडक कें पार करैछ। खगड़िया नगर स' सोझे पूब भाग मे चलैत नदी मानसी पहुंचि जाइछ। तखन बख्तियारपुर नामक गाम आबि जाइछ। मानसीक पूब तथा बख्तियारपुरक दक्षिण मे बूढ़ी गंडकक एकटा धार कटिहार जायबला रेल लाइन कें पार कय महेशखूंटक उत्तर पिपरा तथा पकरैल गाम तक पहुंचि चौर बनबति छथि। खगड़िया स' पूब मे मानसी आ मानसी स' 7 मील दूर गोगरी तक बूढ़ी गंडक आ गंगाक संगम क्षेत्र अछि। एहि नदीक संगम क्षेत्र बेगूसराय स' पूब गोगरी तक 25 मील मे विस्तृत अछि। बेगूसरायक पूब लखो गामक उत्तर भाग मे बड़की सनवक तथा कुसभउ तक जे स्रोतक चिन्ह अछि ओ बूढ़ी गंडकक प्राचीन प्रवाह थिक। एक पश्चात लखमनियाक दक्षिण भगवतपुरक पास गंगा मे संगम होइछ जकर मुहाना पर साम्हो गाम अछि।

बूढ़ी गंडक स' पश्चिमी चम्पारण, पूर्वी चम्पारण, मुजफ्फरपुर, दरभंगा, समस्तीपुर, बेगूसराय एवं खगड़िया जिला प्रभावित होइत अछि। 1810 मे कांटी नील फैक्टरी कें बाढ़ि स' सुरक्षाक हेतु 41.6 किमी लम्बा तटबंध कोठीबाल साहेब बनौलन्हि। एहि स' बागमती ओ बूढ़ी गंडकक दोआब मे 30.08 वर्ग किमी मे बाढ़ि स' सुरक्षा छल। उद्गम स्थल स' नीचा एहि नदीक दुनू तट पर लगभग 41.5 किमी लम्बा बाढ़ि सुरक्षा तटबंध बनल अछि। ■



बागमती

बागमती काठमांडू नगरक पूर्वोत्तर कोण स' हिमालयक गोसाईंनाथ उच्च शिखरक दक्षिणी ढलान स' निकलैत छथि। गोसाईंनाथ शिखरक उंचाई समुद्र तल स' 26305 फीट अछि तथा एकरे दर्रा-भाग स' ओ राजमार्ग अछि जे तिब्बत आ काठमांडू कें जोड़ैत अछि। बागमतीक उद्गमक समीपे मे शिवपुरी नामक तीर्थ छैक जकर सन्निकट नूनथर नामक स्थान स' ई नदी प्रवाहित होइत अछि। बागमती काठमांडू क्षेत्रक नदी कें समेटति महाभारत ओ चूरे शृंखलाक मकवानपुर जिला लांघति रोतहट जिला मे सरलाही ओ रोतहट जिलाक सीमा बनबैत सीतामढ़ी जिलाक बैरगनिया तथा मेजरगंज थानाक बीचो-बीच दक्षिणाभिमुख होइत प्रवेश करैत छथि। एहि नदीक प्रवेश स्थल बैरगनियाक पूब तथा मेजगंजक पश्चिम पाया नं.-52 नेपाल-भारतक सीमारेखाक पास अछि। ई सीतामढ़ी-रक्सौल रेलपथक ढेंग नामक रेलवे स्टेशन स' एक मील उत्तर अछि जतय बागमती भारत भूमि मे प्रवेश करैछ। ढेंग रेल पुल तक बागमती 1430 वर्गमीलक आ लगभग 91 मील लम्बा पर्वतीय क्षेत्रक वर्षाकालीन जलग्रहण कय लैछ। पुलक दक्षिण एकर कछेड़ मे गंभरिया गाम अछि। बागमतीक जलग्रहण क्षेत्र नेपालक नूनथर मे 2729 वर्ग किलोमीटर, रामनगर बराज स्थल तक 3745 वर्ग किलोमीटर तथा कोसी संगम स्थल पर 13279 किलोमीटर अछि। एकर तलक ढाल ढेंग पुल तक औसतन 0.87 किमी, रामनगर मे घटिकय 0.17 किमी आ बदलाघाट मे 0.07 किमी भ' जाइत अछि। स्थलक आकृति मे एहि आकस्मिक परिवर्तनक कारण एहि नदीक धारा स्थिर नहि रहैछ आ समय-समय पर एकर प्रवाह धारा मे अत्यधिक गाद जमा होइत रहबाक कारण परिवर्तन होइत रहैत छैक। एकर अतिरिक्त बागमती बेसिन मे

छोटी-छीन नदीक जाल सेहो रहैत छैक।

सर्वप्रथम लालबकेया नदी शिवहर जिलाक अदउरी गाम मे बागमती स' संगम करैत अछि। लालबकेया नेपालक दक्षिण भाग मे स्थित चूरे नामक पर्वत शृंखलाक नीचां स' प्रवाहित भय कें बैरगनिया रेलवे स्टेशनक सटले पश्चिम मे सिरनिया गाम मे भारत भूमि मे प्रवेश करैत छथि। जे मिथिलाक चम्पारण आ सीतामढ़ी जिलाक सीमा रेखाक काज करैछ। लालबकेयाक संगमक बाद बागमदी नदी अभवा डाकबंगलाक पास स' पश्चिमोत्तर कोण मे अभवा गामक पश्चिम मे अबैत छथि। नदीक धार आगू बढ़ैत बेलसंड हिरम्भा पहुंचि दूटा धार भ' जाइछ। बाम धार कें सिआर नदी कहल जाइछ। दहिन धारा विंद्रावन तथा छतौनीक बीच स' बहैत चम्पारण जिलाक पताही थानाक चकनाहा नदी बागमती मे पहिने संगम करैत छल जे आब अपन संगम स्थान पर विलीन भ' गेल छैक। चकनाहाक मूल स्रोत चम्पारण जिलाक ढाका थानाक कोहबरवा तथा सिसउना गाम स' फुटकैत छल। विंद्रावनक दक्षिण मे बागमती चम्पारण जिला मे प्रवेश करैत अग्निकोण दिस मुख कय कें मीनापुर तथा बेलसंड थानाक सीमा पर किसुनपुर गाम मे प्रवेश करैत छथि। वैशाली स' जे मार्ग उत्तर दिस जाइछ ओ कांटी होइत शिवहर जाइछ। बागमतीक धार कें पार करय परैत छैक। किसुनपुरक दक्षिण जे चौर अछि ओ बागमती द्वारा निर्मित छैक। जतय स' बागमती दक्षिण बहैत मीनापुरक पास गंडक मे मिल जाइछ। थोड़ेक दूर बहला पर रून्नीसैदपुरक गंगाधरमपुर ओ ताजपुर पहुंचैत छथि। मुजफ्फरपुर स' मीनापुर होइत जे सड़क बेलसंड जाइछ एहि गामक मध्य भाग मे एहि नदीक धार कें पार करय परैत छैक। मुजफ्फरपुर स' नया गाम तथा पुपरी जायवला सड़क हथौरी मे बागमतीक पुरान धार कें लांघैत अछि। विश्वम्भपुर मे बागमती अग्निकोण मे हसनागढ्ढी गाम पहुंचैत छथि जतय सिआरी धार पुन: बागमतीक धारक निकट भ' जाइत अछि। सिलौत रेलवे स्टेशन स' पूर्वोत्तर कोण मे चलैत जे मार्ग बिंदा गामक पास बूढ़ी गंडक कें पार करैत कटरा पहुंचैत अछि आ कटरा स' कमतौल जाइछ ओ हसनागढ्ढी मे बागमतीक दुनू पुरान धार कें पार करैत अछि। एतय नदी पर पुल अछि जे राज दरभंगा द्वारा बनाओल गेल छल।

हसना गामक पास एकटा अलग नदी कुंड अछि जतय स' थोड़ेक नैऋत्य कोण मे झुकिकय दक्षिण दिस बागमती बहैत गायघाट पहुंचैत छथि। एतय स' नदी लक्ष्मण नगर तथा जातां ठोको गाम होइत हठा गाम अबैत छथि जतय समानान्तर बहिकय आबयबाली सियारो धार कें थरमा गामक दक्षिण मे अपना मे समेट लैत छथि। एतहि मुजफ्फरपुर जिलाक सीमा समाप्त भ' जाइछ। पुरना बागमती कोला नदी स' मिलिकय असामनपुर मे सिपरो स' संगम करैछ। मुजफ्फरपुर स' उत्तर सीतामढ़ी जायवला मार्ग ठकरावां मे

सिपरो कें पार करैत अछि। अग्निकोण मे बहयवाली सिपरो नदीक कछेड़ मे कांटा-पिरौंध गाम अछि एवं आगू बढ़ला पर मकरन्दपुर गाम छैक। मुजफ्फरपुर स' दरभंगा जायवला सड़क कांटा-पिरौंध होइत सिपरो हरनारायणपुर ओ सुस्तानामक गाम मे अबैत अछि। दहिना प्रवाह मे मिलबाक पूर्व सिपरो लखनदेई मे संगम करैत छथि। लखनदेई नदी कें समेट कय फतेहपुर ओ रसूलपुर गाम (दरभंगा जिलाक) क बीच स' अग्निकोण मे हायाघट रेलवे स्टेशनक उत्तर सिरनिया गामक उत्तर मे दरभंगा स' आबयबाली अधवारा समूहक नदी स' मिलैत करेह बनिकय आगू बढ़ि जाइत छथि। किन्तु एखन लखनदेई स्वयं अपन अधिकांश जलक संग सीतामढ़ीक उत्तर अधबारा मे मिल जाइत अछि।

सिपरो नदी कें समेट कय बागमती दरभंगा जिला मे प्रवेश करैत छथि जतय बाम तट पर उत्तर भाग मे सरैया गाम हिनक स्वागत करैत अछि। एतय स' दक्षिण दिश मे चलैत बाम तट पर हसनपुर, विशुनपुर, गोदाई पट्टी तथा दहिना तट पर सलहर ओ कलौंजर गाम छैक। कलौंजर लग नदी मे घाट अछि जतय स' ई नदी टेढ़-मेढ़ चालि मे पूब दिस बढ़ैत रुपौली, उधरा, उचौली गाम पहुंचैत छथि। तकर पश्चात् हायाघाट स्टेशन स' सटले पश्चिम खरैन्द गाम मे अबैत छथि। एतय स' बागमती दू धारा मे बंटि जाइत छथि। दहिन बागमती तथा बाम धारा दरभंगा दिस स' बहिकय आबयवाली व्याघ्रवती (अधवारा समूहक नदी) स' मिलिकय करेह नाम स' बहय लगैत छथि। खैरन्द गाम स' बागमतीक दहिन धार अग्निकोण मे प्रयाण करैत समस्तीपुर-दरभंगा रेल लाइन कें पारकय देकुली गाम पहुंचैत छथि। एतहि ओइनवार बंशीय राजाक शिवै सिंहपुर या गजरथपुर अछि। बंगालक मुस्लिम शासक शिवसिंह स' मिथिला राज छीन लेने छलाह आ मिरजापुर गामक नामकरण कयने छलाह। हायाघाटक दक्षिण मे बागमती रेल लाइन कें पार कय अग्निकोण मे रामभद्रपुर गाम मे अबैत छथि। एहि गाम स' पहिने उत्तर दिस घूमि कय जखन पुन: अग्निकोण मे चलैत छथि आ बागमतीक दहिन कछेड़ मे गुमला आ बाम भाग मे रसूलपुर, घोसरामा, चकवा आदि गाम बसल अछि। एकर पश्चात् नदीक धार हथौरी कोठी, मथुरापुर गाम अबैत अछि। मथुरापुर स' बागमती थोड़ेक अग्निकोण मे झुकि कय दक्षिणा दिश मे संगम स्थान दिस बढ़ैत छथि आ बामा भाग मे पुनवा, रहथौली सिरपुर गाहर, बल्लीपुर आदि गाम पहुंचैत छथि। समस्तीपुर जिलाक रोसड़ा स' लगभग दू मील पश्चिमोत्तर कोण मे तथा सिंघियाक निकट उत्तर भाग मे बूढ़ी गंडक नदी स' बागमतीक संगम होइत अछि जे पहिल धार थिक। दोसर धार लहेरियासरायक दक्षिण 6 मील दूर स्थित हायाघाटक पश्चिमोत्तर मे करेह नदीक नाम स' ख्यात भ' गेल छथि। एतय स' ई धार कमला नदी स' मिलिकय बेलाही गामक पास कोसी मे खसैत छथि।

बागमती ओ लक्ष्मीक मूर्ति छथि जिनक उद्‌गम स्थान पर दहिन भाग मे गंज-गंडकीक त्रिशूली नामक सूंढ़ आ बाम भाग मे कोसीक इन्द्रावती सूंढ अछि। त्रिसूली ओ इन्द्रावती नामक ऋद्धि-सिद्धी बागमतीक माथ पर चामर जंका बहैत छथि। एहि मे हनुमती, मनोहरा, गोदावरी, मणिवती, धर्मवती, विष्णुवती, भद्रवती, इक्ष्यमती आदि सरिता शिरा-तंतु सदृश जुड़ल अछि तथा घाटीक तमाम जल भंडार कें निचोड़ि कय बागमतीक सृजन करैत छथि। अपन स्वच्छ, स्वस्थ ओ सुस्वादु जलक कारण ई मिथिलाक पुण्यमयी नदी मानल जाइत छथि। नेपाल मे हिनका गंगा जकां पूजल जाइछ। बाढ़ि मे जल मे गाद अधिक अनैत छथि जाहि स' एहि क्षेत्रक मांटि उर्वर भ' जाइछ। तीन फसिल आसानी स' होइछ। बागमती क्षेत्र अति उर्वर अंचल मानल जाइत अछि।

वर्ष 1953 मे भयंकर बाढ़ि आयल छल। बिहार सरकारक सिंचाइ विभाग एकटा विस्तृत अध्ययन बागमती पर करौलक। ओकर सिफारिश निम्न छल :

1. नेपालक नूनथरक पास एक बहुउद्देशीय बांध बनायब,
2. बागमती ओ लालबकेया नदीक संगमक नीचा एकटा बराज बनायल जाय,
3. वांछित स्लुइस गेटक संग नदी पर ओहि क्षेत्र मे तटबंध बनायल जाय जतय बाढ़िक आतंक अधिक छैक,
4. बागमतीक पानी कें ढेंगक पास वीयर बनाकय विभिन्न धारा मे सिंचाइक लेल प्रवाहित कयल जाय,
5. जल निस्सरण कें प्रभावी कय कें अनेक उमड़ल धार पर नियंत्रण कयल जाय।

वर्ष 1956 तक बागमतीक बामा तट पर सिरसिया स' फुहिया तक 73 किमी तथा दाहिना तट पर सुरमारहाट स' हायाघाट धरि 17 किमी एवं हायाघाट स' बदलाघाट धरि 86 किमी तटबंध बना देल गेल। 1958 मे बागमती परियोजना कें मूर्तरूप देबाक प्रयास कयल गेल। बाढ़ि नियंत्रण तथा सिंचाइ कें दू अंश मे विभाजित कयल गेल। बाढ़ि नियंत्रणक लेल 3.17 करोड़ तथा सिंचाइ लेल 5.78 करोड़ रुपया लगा क' दूटा अलग-अलग योजना बनायल गेल। 1969 मे बाढ़ि नियंत्रण योजना 6.54 करोड़ रुपयाक लागत स' केन्द्रीय जल तथा विद्युत आयोग द्वारा स्वीकृत कयल गेल। मूल योजना बागमती तथा लालबकेया नदीक संगमक नीचा देबापुर गामक समीप एकटा बराज बनयबाक प्रस्ताव छल, किन्तु 1969क बाढ़ि मे बागमती अपन पुरान धार स' बहय लगलीह। पुन: स्वीकृति योजना कें छोरि नव परियोजना विचाराधीन भ' गेल। वर्ष 1974-75 मे बाढ़ि नियंत्रणक नवीन योजनाक प्रारूप तैयार भेल जकर लागत 26.72 करोड़ रुपया आंकल गेल। 1976 मे पुनर्मूल्यांकन भेल एवं लागत 36.20 करोड़ रुपया कयल गेल।

बागमती सिंचाइ परियोजना मे परिवर्तन कयल गेल। 1973 मे 22.55 करोड़ रुपयाक

लागतक नवीन योजना बनायल गेल किन्तु केन्द्र ओ राज्य सरकारक बीच विभिन्न अड़चनक कारण लागू नहि भ' सकल। 1977 क अन्त मे 45.05 करोड़ लागत स' बनयबला एकटा परियोजना स्वीकृत भेल। 1980 मे बराज, नहर तथा जल निकासीक बहुउद्देशीय परियोजना बनायल गेल। एहि मे 127.39 करोड़ रुपया आंकल गेल। बराज स्थलक संबंध मे विवाद भेल। अन्तत: पुरनका स्थल ढेंग रेल पुलक तीन किमी नीचा बराज बनव तय भेल। पुन: मूल्यांकन कयल गेल। 1981 मे परियोजना मे सिंचाइ, बराज ओ नहरक संग बाढ़ि नियंत्रण पर कुल 185.69 करोड़ रुपया खर्चक प्रावधान कयल गेल। 1982 मे केन्द्रीय जल आयोग स्वीकृति देलक तथा 24 मार्च 1984 मे बिहारक तत्कालीन मुख्यमंत्री चन्द्रशेखर सिंह बराजक शिलान्यास कयलनि, मुदा निर्माण काज शुरू नहि कयल गेल। 11 माई 1990 मे बागमतीक बेलवाघाट पर बाढ़ि नियामक डाइवर्सन बराजक शिलान्यास तत्कालीन मुख्यमंत्री लालू प्रसाद कयलनि, मुदा काज फेर शुरू नहि भेल। बहुउद्देशीय बांध ओ बराज निर्माणक योजना फाइल मे बन्द अछि तथा तटबंधक निर्माणक योजना अल्पकालिक टुकड़ा-टुकरो मे साकार भेल।

भारत-नेपालक अस्थिर संबंधक नाम पर बागमती-लालबकेयाक संगमक निकट रामनगर मे ढेंग पुलक समीप तीन किमी नीचा 1160 फीट लम्बा 30टा फाटक बला बराजक प्रस्ताव एखनो जीवित अछि। मूल प्रारूप मे रामनगर स' दुलारपुर तक 24 किमी उभारबंध, रेल लाइनक उपर बैरगनिया रिंगबांध 7 किमी तथा बराज स्थल स' शिवहर मार्ग तक बराजक बामा 26.4 किमी ओ दहिना 32.8 किमी उभारबंधक निर्माण प्रस्तावित अछि। हायाघाट स' नीचा कोसीक संगम तक तटबंध बनल। ढेंगक पास प्रस्तावित बराज स्थल स' रुन्नीसैदपुरक पश्चिमोत्तर आ मुजफ्फरपुर-सीतामढ़ी भागक पश्चिम तक तटबंधक निर्माण भ' गेल छैक, लेकिन रुन्नीसैदपुर स' हायाघाट तक दुनू कछेड़क करीब 79 किमी तटबंधक निर्माण अपूर्ण अछि। जौं रुन्नीसैदपुर हायाघाटक तटबंध मुक्त क्षेत्र मे पसरयवाला जल सोझे नदी स' प्रवाहित होयत त' 1,31,000 क्यूसेक पानि कें सम्हारकबाक हेतु तटबंध बनबय परत। एकर वैकल्पिक उपाय अछि देवापुरक पास बागमतीक 50 हजार क्यूसेक प्रवाह बेलवाधार स' निकालि आ कलंजर घाटक पास पुन: बागमतीक मुख्य धारा स' जोड़बाक प्रयास। ई जल बागमतीक मुख्य धारा स' कलंजर घाट तक 56 घंटा मे पहुंचि जायत। बेलवाधार स' घूमिकय कलंजर घाट तक पहुंचय मे ओहि जल कें 72 घंटा लगतै। सरकार कें पसिन्न छैक ई व्यवस्था। तटबंधक कारण सुरक्षित बैरगनिया प्रखंड, हायाघाट-एक्मीघाटक समीपक गाम तथा दरभंगा-नरकटियागंज रेल लाइनक उत्तर ओ दक्षिण मे बसल गाम आब बाढ़ि नहि, जलजमाव स' परेशान रहैत अछि। प्रत्येक वर्ष वर्षाकाल मे बागमती बाढ़ि नियंत्रण परियोजनाक अन्तहीन कथा

दोहरायल जाइछ। समाधानक मात्र चर्चा। वर्ष 1958 स' आइ तक बागमती बाढ़ि नियंत्रण ओ सिंचाइ योजना अपूर्ण अछि। जाबत तक नेपालक नूनथरक समीप एक बहुउद्देशीय योजना नहि बनत बाढ़ि नियंत्रण ओ सिंचाइ योजना लसकले रहि जायत।
12.32 करोड़ रुपयाक लागत स' बनयबला बागमती नहर परियोजनाक लागत 1981-82 मे बढ़ि कय 1.86 अरब रुपया भ' गेल। आब एहि योजनाक लागत साढ़े सात अरब आंकल जाइछ। जीवनदायिनी बागमती सम्प्रति सीतामढ़ी, मुजफ्फरपुर, दरभंगा ओ मोतिहारी जिलाक करीब दू सय वर्ग किलोमीटर मे स्थायी जलजमाव ओ भीषण बालुक कारण कृषि अर्थव्यवस्था कें चरमरा देने अछि। एहि परियोजना मे सीतामढ़ीक बैरगनिया, मेजरगंज, रीगा, पिपराही, बेलसंड, रून्नीसैदपुर, डुमरा, बाजपट्टी, पुपरी तथा नानपुर, मुजफ्फरपुरक औराई ओ कटरा, मोतिहारीक ढाका, पताही तथा दरभंगाक तीनटा प्रखंडक 1, 21, 214 हेक्टेयर भूमि कें सिंचित कय सालाना 4,38,118 टन अन्नोत्पादनक योजना छल, से नहि भ' सकल। एहि परियोजनाक परिधि मे पड़ल गाम बाढ़िक कारण उजड़ैत गेल, फसलक क्षति होइत गेल। परियोजनाक प्रारम्भ स' एखन तक नेपाल सीमा स' दुलारपुरक बराज स्थल रामनगर तक 26.40 तथा 32.80 किमी बांधक निर्माण अपूर्ण छैक। सैकड़ों मीटर तटबंध जीर्ण-शीर्ण भ' गेल छैक। नदीक मुख्य धारा स' सटल गामक स्थिति भयावह छैक। बाढ़िक कारण यातायात व्यवस्था बदहाल अछि। ■

करेह-अधवारा समूह

समस्तीपुर-दरभंगा रेल लाइनक सटले पश्चिम स' सिरनिया गामक सटले पश्चिमोत्तर भाग स' प्रवाहित होइत करेह नदी अग्निकोण मे दरभंगा जिलाक सीमा मे बहैत छथि। व्याघ्रमति (छोटकी बागमती) ओ बागमतीक बामा धारक मिलनक बाद आगू यैह प्रवाह करेह नदीक नाम स' प्रख्यात छथि। ई नदी आकाश बेलक सदृश अनेक नदीक जीवन-रस चूसिकय अपन साम्राज्य स्थापित करैत अछि। करेह स्वतंत्र नदी बनि कय बलिपुर-परशुराम स' बहेड़ी जायवला मार्ग तक लगभग 18-19 मील तक बागमतीक समानान्तर अग्निकोण मे चलैत अछि। करेह रेल लाइन पार कय अग्निकोण मे झुकैत अछि एकर बाम भाग मे लगभग दू मील दूर उत्तर-पूब मे 'शिवै सिंहपुर' नामक गाम अछि जे राजा शिवसिंहक राजधानी छल। रेलवे लाइन पार कय सिरनियाक पूब मे जखन करेह अबैत छथि ओतय भन्नूपुर गाम अछि। एतय स' अग्निकोण मे बहैत एकर बाम तट पर सघुआ गाम छैक। एकर बाद बहेड़ा थाना क्षेत्र मे घुसैत एकटा पैघ चौर स' आगू बढ़ला पर हथौरी कोठी नामक स्थान छैक। हथौरीक पूब एक मील दूर जा कय करेह दक्षिण दिस अपन धार बहबैत छथि। क्रमश: आधारपुर, खरारी, छतैनी तथा भतउरा गाम अबैत अछि। आधारपुरक बाद रोसड़ा थाना क्षेत्र मे प्रवेश करैत छथि। रोसड़ा स' बहेड़ा जायवला पुरना सड़क बोरन मे करेह कें पार करैत अछि। शंकरपुर, धिवाही, अउरा, भोरहा आदि गाम स' चलैत ई नदी रोसड़ा थाना कें पारकय सिंघिया पहुंचैत छथि। रोसड़ा स' सिंघिया तथा बिरौल जायवला मार्ग पर लगमा मे करेह कें पार करैत छैक। पुन: सखवा गामक पास पार करैत छैक। सखवा घाट स' करेह अग्निकोण मे बहय लगैत छथि। एकर बाद करंची गाम अबैत अछि। करंची स' सटले दक्षिण विथान गाम अछि जतय एक चतुर्मुखो ब्रह्माक बहुत प्राचीन

मूर्ति छन्हि।

विधानक बाद करेह पूब दिशा मे अपन धारा मोड़ैत छथि। दहिन भाग मे सोहम तथा सुखासन गाम एवं बाम भाग मे चन्दन ओ फुहिया गाम छैक। फुहिया गामक पूब ओ खुटौनाक पश्चिम करेह जीवछ नदी स' संगम करैत छथि। खुटौनाक आगू पूब दिशा मे तिलकपुर गाम अछि जतय कमला स' संगम होइछ। किछु वर्ष पूर्व तिलकपुरक पास करेह, कमला, बलान, तिलयुगा, घेमुरा आदि नदीक संगम होइत छल एवं सम्मिलित धार कमला तथा घघरी नाम स' खगड़ियाक चौथम थाना स' बहैत कोसी स' संगम करैत छलीह। किन्तु जहिया स' कोसीक दुनू कछेड़ पर तटबंध बनि गेल आ कोसीक धार कें पश्चिम मे मोड़ि कय एहि तटबंधक भीतर तिलयुगा, घेमुरा आदि के विलीन कय देल गेल, तहिया स' करेह आ कमला तिलकपुरक पास कोसी स' संगम करय लगलीह।

अधवारा समूह मे 15टा स' अधिक छोट-छोट नदी अछि जे नेपालक सिवालिकक पदीय भाग मे लगभग 600 मीटरक ऊंचाइ स' उत्पन्न भय मिथिला मे आपस मे मिलिकय खिरोई आ दरभंगा बागमती दूटा स्पष्ट नदीक निर्माण करैछ। खिरोई एकमी घाट मे दरभंगा बागमती स' मिल जाइत छथि। दरभंगा बागमती हायाघाट स' 1.5 किमी पहिने बागमती मे मिल जाइछ। एहि समूहक नदी कें तीन समूह मे संपुंजित कयल जा सकैछ :

1. अधवारा, जमुरा, सिकाओ, बुरहन्द, मोहिनो ओ खिरो समूह,
2. संगाही, भरहा, हरदी, भरदार ओ रातो समूह,
3. धाउस, धोमने, यमुना, बीघी ओ दरभंगा बागमती समूह।

अधवाराक दूटा जलस्रोत तराई नेपाल स' निकलि कय मुजफ्फरपुर जिलाक उत्तरी सीमा पर सोनवर्षा थाना मे प्रवेश करैत छथि। एक स्रोत सोनवर्षा मे आ दोसर स्रोत एहि स' तीन मील पूब मे। एहि दुनू धारक मध्य सिहोरवा ओ इन्दरवा गाम अछि। पूबबला स्रोत नैऋत्य कोण मे बहैत दू भाग मे बंटि जाइछ। पश्चिमबला पुरन्दहा-रजवारा गामक पश्चिम मे सोनवर्षा वला स्रोत स' मिल कय दक्षिण बढ़ैछ ओ पूबवला स्रोत पुरन्दहा-रजवारा कें घेरैत अछि। एहि स' तीन मील दक्षिण मे सम्मिलित बहैत तेतरिया गाम अबैछ आ अधवारा स' जानल जाइछ। जखन ई नदी सिंघवाहिनी गाम पहुंचैत छथि ओतय हरदी नामक नदी स' संगम करैत अछि। हरदी तराई नेपाल स' बहि कय एहि क्षेत्र मे अबैत छथि। हरदीक प्रवेश स्थल अघवारा बला पूर्वी स्रोतक प्रवेश स्थल स' दू मील पूब मे बेला गाम स' तीन मील दूर पश्चिमोत्तर कोण मे अछि। हरदी नदी सिंघवाहिनीक समीप अधवाराक वामा भाग मे प्रवेश करैत छथि। आगा सुतिहारा गाम अबैत अछि जतय अधवारा नदी सोनवर्षा तथा बेला थानाक सीमाक काज करैत अछि। सुतिहाराक उपर स' थोड़ेक नैऋत्य कोण मे झुकि कय भरने नदी कें समेट लैत छथि

तथा सीतामढ़ी - सुरसंड मार्ग कें कुम्भाक पश्चिम पार करैछ। भरने अधवाराक धार छल। बाजपट्टी रेलवे स्टेशन स' उत्तर जे मार्ग कुम्मा पहुंचैत अछि ओ गनपुर जगन्नाथ मे अधवारा कें पार करैत अछि। एकर बाद अग्निकोण मे बहैत सवाईपट्टी गाम कें स्पर्श करैत छथि। एतय पूब दिशा मे मुंह कय बाजपट्टी स' पूर्वोत्तर कोण मे चलैत सुरसंडक पश्चिम पठानपुर पहुंचैत छैक। पुपरी थानाक सवाईपट्टी मे अधवारा कें पार करैत अछि। बाजपट्टी-नरहाक पहिने अधवारा तथा बघोर नदी थोड़ेक दूर सटिकय बहैत अछि। पुपरी तथा मधुबनीक बीच जयन्तपुर गाम अछि जतय लखनदेईक पूर्वी धार बहैत अछि। मधुबनीक पास अधवारा नदी बघोर, मुरहा, बेलौती आदि नदी स' संगम करैछ। बघोर वस्तुत: व्याघ्रमुखी नदी थिक। ई बेला थानाक जगधर तथा भवानीपुरक आसपास बहैत अछि। ई दुनू गाम परिहार स' पश्चिमोत्तर कोण मे दू मील पर अछि। ई नदी एतय स' पिपरा कोइरिया ओ पिपरा खुर्द गाम स' होइत बेला थानाक कोदारी गाम स' निकलि कय सुरसंड थाना अयला पर सीतामढ़ी-सुरसंड मार्ग कें पार कय परो गाम पहुंचैत अछि। परो गामक बाद पुपरी थाना मे प्रवेश करैत अधवारा नदी स' सटैत पूब दिश मुड़ि जाइछ। किछु दूर पर बघोर नदी सुरसंड ओ पुपरी थानाक सीमा रेखा बनबैत मुरहा नदी स' संगम करैत छथि।

मुरहा नदीक उद्गम स्थान सुरसंड स' पूब नेपालक तराई मे अछि। सुरसंड थानाक सरखंडी भोटा स्थान स' आधा मील पश्चिमोत्तर कोण मे सर्वप्रथम एहि अंचल मे प्रवेश करैत छथि। एतय स' पश्चिम मुड़ि जाइत छथि आ नैऋत्य कोण मे चलिकय दरहाबरीक बाम भाग ओ बघारी गामक दहिन भाग छैक। बघारीक बाद मुरहा एकटा पैघ चौर कें पारकय अढ़ाई मील अयला पर बघोर स' संगम करैत छथि। एतय स' सम्मिलित धार पुपरी थाना मे प्रवेश कय आधा मील दक्षिण भेला पर दू भाग मे बंटि जाइछ। पूर्वी धार बसोतरा गामक समीप एकटा टापू बनबैत अछि आ दक्षिण मे ओकर धार फुटिकय पुन: दू भाग मे बंटि जाइछ। भीममकड़ेसर गाम मे एक टापूक निर्माण करैत अछि। दुनू धार मिलि जाइछ आ मधुबनी गामक समीप अधवरा स' संगम करैत छथि। धाउस नदी सुरसंड थानाक सरखंडी मोटा स' डेढ़ मील दूर अग्निकोण मे तथा बिन्दीनवाबाद गाम स' आधा मील दूर पश्चिमोत्तर कोण मे मिथिलाक भूमि पर प्रवेश करैत छथि। एतय स' नैऋत्य कोण मे अढ़ाई मील चललाक बाद सुरसंड ओ पुपरी थाना मे बहैत छथि। परिगवांक उत्तर मे मुरहा नदीक एकटा धार एहि मे मिल जाइछ आ पुपरी थाना मे बहैत छथि। एतय धाउसक दूधारा भ' जाइछ ओ पूर्वी धार बेलौतीक धार स' मिलिकय नैऋत्य कोण मे बहैत अछि। पश्चिमी धार बसोत्तरा गाम स' बहैत बेलौती बला धार स' संयुक्त भ' बहिलवारा गाम स' दू मील उत्तर मे मिल जाइछ। ई संगम चौरोत स' तीन मील पश्चिम अछि। धाउस ओ बेलौती एकटा पैघ चौरक निर्माण करैछ। आगू जा कय ई नदी बघौर ओ मुरहा स' संयुक्त भय दक्षिण चलि कय नैऋत्य कोण

मे झुकिकय अधवारा स' मिल जाइत छथि। बेलौती नदी सेहो नेपालक तराई स' चलिकय मधवापुर ओ कोरियाही गाम पहुंचैत छथि। चौरोत स' लगभग तीन मील उत्तर मुजफ्फरपुर जिला मे नैऋत्य कोण मे मुड़ैत छथि। एकर पश्चात् धाउसक धार स' मिलिकय दक्षिण बहैत बररी बिहटा स' दू मील पश्चिम मे अधवारा स' संयुक्त भ' जाइत छथि। एहि तरहें हरदी, भरने, बघोर, मुरहा, धाउस, बेलौती आदि अनेक छोट-पैघ सरिता कें मधुबनी गामक समीप बररी बिहटाक पश्चिम अधवारा अपना मे समेट लैत छथि। एतय स' नदी दरभंगा जिला मे प्रवेश करैत अछि जतय जमुने ओ थोमनेक धार मे मिल जाइछ। एहि त्रिमुहानी स' जखन धार दक्षिण दिस बढ़ैत अछि ओतय अधवाराक दोसर धार बरी, माधोपुर तथा धनुखी होइत पूब मे अबैत बसैठा गामक पूब मे एहि मे मिल जाइछ। थोड़े के दूर बढ़ला पर लखनदेईक पूर्वी धार एहि सब धारा स' संगम करैत अछि जे बेनीपट्टी थानाक पश्चिमी कछेड़ तथा मधुबनी जिलाक सीमास्थलक समीप अछि।

जमुने नदीक उद्गम स्थल नेपालक जनकपुरक उत्तरी भाग मे अछि। हरलाखी थाना मे ई सर्वप्रथम प्रवेश करैत अछि। ई नदी नेपाल ओ मधुबनी जिलाक सीमा बनबैत छथि। एकर बामा तट पर हरलाखी, नरहरिया, उमगांव, सोथगांव, पिपरूआं, गोपालपुर, गंगौर आदि गाम अछि। मधवापुर स' दक्षिण जमुनेक तट पर शहर गाम अछि। विशुनपुर गाम मे पहुंचला पर जमुने अग्निकोण मे झुकैत अछि जतय अधवारा नदीक उत्तरी धार स' संगम करैत छथि। एक फर्लांग बढ़ला पर एकर बाम भाग मे थोमने नामक नदी संगम करैत अछि जे हरलाखी थानाक विदूहर गामक दक्षिण तथा सिसौनी गामक उत्तर स' चलैत छथि। अपन उद्गम स' नैऋत्य कोण मे बहला पर बेनीपट्टी-हरलाखी मार्ग कें पार कय भैंगरहाट गामक पूब भाग मे अबैत छथि। एतय स' थोमने नदी दक्षिण दिशा मे झुकि कय प्रवाहित होइत अछि जाहि मे क्रमशः सेंभली, सलेमपुर, सलहा ओ बरांटपुर गाम होइत धनौजा गाम अबैत अछि। एतय स' नदी पश्चिम दिशा मे मुड़ि जाइत छथि जतय बामा तट पर उचैठ गाम अबैत अछि। एतय भगवतीक मन्दिर आ कालिदासक डीह छन्हि। ई थाना बेनीपट्टी स' दू मील पश्चिमोत्तर कोण मे अछि। एतय थोमने कमला नाम स' जानल जाइछ। उचैठ स' तीन मील पश्चिम नैऋत्य कोण मे मुड़ि कय थोमने अधवारा तथा जमुनेक संयुक्त धार मे अपना कें समाहित कय लैत छथि। एहि प्रवाह मे लखनदेई, भरने, अधवारा, हरदी, बघोर, मुरहा, धाउस, बेलौती, जमुने तथा थोमनेक सम्मिलित धार छोटकी बागमती– व्याघ्रमुखी या व्याघ्रवती नाम स' जानल जाइत छथि। एतय स' ई धार क्रमशः रानीपुर, पाली (ज्योतिरीश्वर ठाकुरक गाम), मधबन, बरदहा, जगबन (याज्ञवल्क्यवन), माधोपुर, बैंगरा, बलहा ओ रघौली गाम पहुंचैत छथि। छोटकी बागमतीक पूर्वी कछेड़ पर बैंगरा गाम आ दहिना भाग मे कमतौल अछि। कमतौलक नैऋत्य कोण मे अहल्या स्थान ओ गौतमाश्रम अछि जतय स' खिरोई नदी

प्रवाहित होइछ। बैंगराक दक्षिण बलहा गाम मे छोटकी बागमती अबैत छथि आ रघौली पहुंचैत छथि। एतय कमलाक पुरान शाखा स' व्याघ्रमती मिल जाइछ। रघौली मे कमला स' संगमक बाद छोटकी बागमती दरभंगाक लेल प्रयाण करैत छथि। एकरा कछेड़ मे क्रमशः दुधौल, सदुल्लहापुर, वाजिदपुर, कोठिया, पिंडारूच, महम्मदपुर, माधोपट्टी, करजा पट्टी, मखनाही, बेलउना आदि गाम होइत छोटकी बागमती दरभंगा शहर पहुंच जाइत छथि। एकर दहिना कछेड़ (पश्चिमी तट) पर शुभंकरपुर आ बाम कछेड़ पर दरभंगाक गुदड़ी बाजार अछि। एतहि किलाघाट अछि। खिरोई संगम गुदरी बाजार स' व्याघ्रमती ईदगाह नामक स्थान मे नैऋत्य कोण मे प्रयाण कय एकमीघाट पहुंच जाइत छथि। एकमीघाट मे खिरोई कें आत्मसात् कय व्याघ्रमती दक्षिण दिस बहैत छथि आ हिनका दहिना कछेड़ पर रामपट्टी, थलवारा, हिछौली तथा अमाडीह गाम अछि। एहि भाग मे मुजफ्फरपुरवला बागमती, लखनदेई तथा दरभंगा वला बागमतीक संगम होइत छल जकर अवशेष बरसाती चौर एखनो अछि। मुजफ्फरपुर ओ दरभंगावाली बागमती सिरिनिया गाम लग संगम करैछ जे हायाघाटक उत्तर तथा रेल लाइन स' सटले पूब मे स्थित अछि। एहि संगमक बाद छोटकी बागमतीक नाम समाप्त भ' जाइछ।

19म शताब्दीक प्रारम्भ मे निलहा गोरा साहब सभ बाढ़ि स' अपन खेत कें बचयबाक प्रयास केने छल। अधवाराक बहुतो धार पर ओ सभ तटबंध बनौलक। 1838क बाढ़िक बाद लगभग 80 किमी लम्बा तटबंध एहि क्षेत्र मे बनायल गेल। एहि मे दरभंगा राज आ नानपुरक चौधरी सभ मदद कयने छलाह तथा तटबंधक मरम्मति बराबरि राज दरभंगा दिस स' कयल जाइत छल। 1925क बाढ़ि मे अधवारा समूहक तटबंध कतेको ठाम टूटि गेलैक। दरभंगा, मधुबनी ओ सीतामढ़ी जिला मे लगभग दू दर्जन अधवारा समूहक नदीक बाढ़ि खेतक लेल लाभकारी ओ जनजीवनक लेल विनाशकारी छल। प्रथम पंचवर्षीय योजना काल मे नदी कें नियंत्रित करबा पर चर्चा भेल। छोट-छोट योजना द्वारा तटबंध बनायल गेल, मुदा नदी समूहक प्रभावित क्षेत्र कें केन्द्रित कय कोनो समग्र योजना नहि बनल। 1989 मे बिहार सरकार लगभग 250 किमी लम्बाइक विभिन्न तटबंधबला अधवारा समूह बाढ़ि नियंत्रण योजना तीन चरण मे विभक्त कयलक। प्रथम चरण मे सर्वाधिक बाढ़िग्रस्त क्षेत्र सौलीघाट स' मब्बी तक दरभंगा-बागमतीक बामा कछेड़ पर 52 किमी लम्बा तटबंधक निर्माणक संगहि एकर दहिन कछेड़ एकमी घाट स' हिरौली तक 66 किमी दोसर तटबंधक निर्माण। दोसर चरण मे धाउस, रातो, धौंस आदि नदीक दुनू कछेड़ पर लगभग 88 किमी लम्बा तटबंध। तेसर चरण मे जमुने ओ झीम नदीक दुनू कछेड़ पर 56.5 किमी लम्बा तटबंधक निर्माण। पुरान तटबंध कें उंच करब। नदी मार्ग कें सोझ करब तथा अन्य काज सेहो शामिल कयल गेल। कुल 29 करोड़ रुपयाक लागतक आकलन कयल गेल। एहि स' एहि तीनू जिलाक लगभग 15 लाख आबादी ओ 3 लाख एकड़ भूमि कें बाढ़ि स' सुरक्षित कयल जा सकत।

1954क बाढ़िक बाद विशेषज्ञ लोकनि विचार प्रस्तुत कयलनि जे दरभंगा बागमतीक धार विस्तृत ओ गंहीर अछि जखन कि खिरोई धारा पातर। 1955 मे निर्णय भेल खिरोईक धार कें खोदि कय सोनवर्षाक नींचा 56 किमी लम्बा दुनू तटबंध बना देल जाय। लगभग 65 लाख रुपयाक अनुमानित राशि स' सोनवर्षा स' एग्रोपट्टी तक 1963-64 मे तटबंध कें पूरा कयल गेल जाहि स' 68500 एकड़ भूमि कें बाढ़ि स' सुरक्षा भेटल। बाद मे एग्रोपट्टी स' दरभंगा मे एकमीघाट तक खिरोई नदी कें गंहीर कय दुनू तटबंध कें बना कय दरभंगा बागमती मे मिला देल गेल। खिरोई तटबंधक अतिरिक्त दरभंगा बागमतीक बामा कछेड़ पर मब्बी स' सिरनिया तक लहेरियासराय ओ दरभंगाक सुरक्षाक लेल 1976 मे तटबंध बनायल गेल। एहि तटबंध कें करेहक बामा तटबंध स' जोड़ि देल गेल छैक। लेकिन ऊपर वर्णित आधवारा समूहक नदीक बाढ़ि सुरक्षा काज, जे तीन चरण मे पूरा करबाक छल, अद्यावधि नहिं कयल गेल। एहि योजनाक प्रथम चरणक शिलान्यास 18 अक्टूबर 1989 मे कयल गेल छल। काज शुरू तक नहि भेल। एखन तक खिरोई तटबंधक अतिरिक्त दरभंगा बागमतीक बामा कछेड़ पर मब्बी स' सिरनिया तक, लहेरियासराय तथा दरभंगा शहरक सुरक्षाक लेल 1976 मे तटबंध बनायल गेल छल जकरा करेहक बामा तट स' जोड़ि देल गेल। किन्तु, रून्नीसैदपुर स' हायाघाट तक दुनू तट पर करीब 79 किमी तटबंधक निर्माण अपूर्ण अछि।

14 अक्टूबर 1984 कें बिहारक तत्कालीन मुख्यमंत्री चन्द्रशेखर सिंह द्वारा बाजपट्टी प्रखंडक संडवार गामक समीप अधवारा नदी पर पुलक शिलान्यास कयल गेल। तीन वर्ष तक निर्माण काज नहि आरम्भ कयल गेल। तदुपरान्त जनसहयोग स' लकड़ीक पुल बनला। वर्ष 1997 मे भीषण बाढ़ि आयल आ पुल भासि गेल। ओकर बाद प्रखंड स्तर स' स्वीकृति देलाक बादो एखन तक ई पुल नहि बनल अछि। ■



बागमतीक प्राचीन धार – चन्ना

बागमतीक पुरान धारक उद्गम रोसड़ाक उत्तर मे स्थित एक चौर स' होइछ। एहि चौर स' पूर्व मे करेह बला बागमती बहैत छलीह जे खगड़ियाक चौथम तक जाइत छलीह। चौरक पश्चिमोत्तर भाग मे मुहान पर करेह द्वारा मांटि भरि गेला पर ई अपन दोसर मार्ग बनौलनि आ तिलकपुरक समीप कमला स' मिल गेलीह। उद्गमक समीप मे भालीपुर गाम आ पूब मे दुधपुरा अछि। दुधपुराक पूब मे बागमतीक दहिना तट पर फुलहरा गाम अछि। एतय स' ई अग्निकोण मे चलैत खास टोला ओ अउरा गामक मध्य भाग स' बहैत नकुनी गाम पहुंचैत छथि। बागमतीक बामा कछेड़ मे कुंडल गाम अछि। ओतय स' बागमती दक्षिण दिशा मे बहय लगैत छथि आ क्रमश: हसनपुर, कड़सौली, खुरूंदा तथा मलाहीपुर पहुंचैत छथि। मलाहीपुरक पश्चिम तथा बागमती नदीक दहिन मे हसनपुर रेलवे स्टेशन अछि। एतय स' परिउना, सौही, गजपति तथा विसनपुर गाम होइत मानसी-रोसड़ा रेलमार्गक पूब भाग स' समानान्तर चलैत खगड़िया जिला मे प्रवेश कय जाइत छथि। विसनपुर स' दू मील दूर विथान गाम अछि। नदीक धार बखरी थानाक हरिसिंघ गाम कें छुबैत अछि। प्राय: महाराज हरि सिंह देव एहि गाम कें बसौने छलाह। एतय स' बागमती अग्निकोण बाहिनी भ' खसरूआ, इमादपुर, चक हमीद नामक गाम मे पहुंचैत छथि। एकर बाद पूब दिशा मे मुड़ैत छथि जकर दहिना कछेड़ पर सोलउन रेलवे स्टेशन (मानसी-रोसड़ा रेलमार्ग पर) अछि। ओतय स' बागमती उत्तराभिमुख भय सिमराहा तथा भुजौना गाम पहुंचैत छथि। एतय स' पूर्वोत्तर कोण मे बहय लगैत छथि जतय बाम भाग मे पड़री गाम आ दहिन भाग मे हरपुर गाम अछि। एतय समस्तीपुर ओ खगड़ियाक सीमा रेखा बनैत अछि। अलौली पहुंचैत छथि। एकर बाद हथवां पहुंचैत छथि जतय एकटा पैघ झील अछि।

चन्ना या चंदना बेगूसरायक कबरताल झील स' निकलैत अछि जे बागमतीक प्राचीन धार अछि। ई नदी बख्तियारपुर पहुंचैत छथि जतय स' पूब दिशा मे प्रयाण करैत सकरा गामक दक्षिण बखरी थानाक सीमा मे प्रवेश करैत छथि। एतय स' हेमनपुर, बागबन, बिसौनी ओ सुगा नामक गाम कें आलिंगन करैत बढ़ैत छथि। एतय स' चक चनरपत गाम फेर खगड़िया-रोसड़ा रेल लाइन कें पार कय पूब दिशा मे तीन मील दूर बरई गाम पहुंचैत छथि जे इमली रेलवे स्टेशन स' एक मील पूर्वोत्तर कोण मे अछि। एतय नदी दू धार मे बँटि जाइछ। ई अहुन सिसवा गाम मे दोसर धार स' मिल जाइत छथि। एतहि भगवानपुर घाट ओ सुस्महा गाम अछि। ई गाम खगड़िया-बखरी मार्ग पर स्थित अछि। सुस्महाक पास चंदनाक धार झुनका सन दक्षिण दिस झुलैत छोट-छोट सरिताक स्वर्ण-अंकुशी लगैत छैक। एकर बाद अहुन सिसवा गाम अबैत अछि। तकर बाद खगड़ियाक पश्चिम रेल लाइनक सटले उरही गाम लग एकरा छोट झील बनाकय फैल जाइछ। आगू बढ़ला पर बागमतीक पुरान धार मे मिली जाइछ। एकर बाद दहवा गाम अबैत अछि जतय पहिने कमला, करेह ओ तिलयुगाक सम्मिलित धार मे मिल जाइत छल। अलौली स' बखरी तक बागमतीक यैह पुरान धार बहैत छथि। खगड़िया स' सोझे चलि कय बनगाम जायवला मार्ग तक जाइत छथि आ रसौन गाम पहुंचैत छथि। रसौन लग खगड़िया-सिमरी-बख्तियारपुर मार्ग कें पारकय उत्तर-पूब दिस मुड़ि कय दिघरी गाम अबैत छथि जे बदलाघाट रेलवे स्टेशन स' दू मील उत्तर मानसी-सहरसा रेल लाइनक सटले पूब मे अछि। दिघरी मे ई पुरना बागमती रेल लाइन कें पार कय बलकुंदा गाम अबैत अछि। बलकुंदा स' नैऋत्य कोण मे झुकि कय पुन: बदलाघाट रेलवे स्टेशनक पूब मे पहुँचि कय घघरी मे समाहित होइत छथि जतय कोसीक आधिपत्य छन्हि। ■

खिरोई

खिरोई कें संस्कृत मे क्षीरवती कहल जाइछ। जल दूध सदृश स्वच्छ तथा स्वास्थ्यप्रद। उद्गम स्थान गौतम तीर्थ कमतौल रेल स्टेशन स' 6 मील दूर नैऋत्य कोण मे जाले थाना मे अवस्थित अछि। कमतौलक पश्चिम एकटा चौर अछि, जे अधवारा समूहक नदी द्वारा बनायल जलागार छी, जतय स' खिरोई नदी प्रवाहित होइत छथि। उद्गम स्थल स' ई नदी सोझे दक्षिण चलि कय कटरा कमतौल मार्ग कें पार कय अहियारीक पश्चिम चलि कय पैरा गामक पूब तथा कुसुमपट्टीक पश्चिम दरभंगा पहुंच जाइत छथि। हिनक दक्षिणाभिमुख प्रयाणक क्रम मे बहुआरा ओ माधोपट्टी-रघौली गाम अछि। थोड़ेक दूर आगू बढ़ला पर पश्चिमी कछेड़ पर हसनचक ओ गोगठल गाम अछि। भखराक दक्षिण स' प्रवाहित होइत भवानीपुर होइत शाहपुर गाम पहुंचैत छथि। शाहपुर मे खिरोई सकरी स' पश्चिम आबयवला मार्ग कें पुल द्वारा पार करैत दरभंगा शहरक उत्तरी भाग मे बासुदेवपुर पहुंचैत छथि। एतय ई केवटी रनवे स' थोड़ेक नैऋत्य कोण मे झुकि कय दक्षिण आबय वला मार्ग ओ कमतौल स' दक्षिण आवयवला तथा दरभंगा स' उत्तर बढ़यवला मार्ग मे मिल जाइछ एवं पश्चिम दिस मुजफ्फरपुर जिलाक कटरा थाना मे प्रवेश कय लखनदेई, सिपरी, बागमती आदि नदीक धारा कें पार कय गायघट्टी होइत मुजफ्फरपुर पहुंच जाइत छथि। शाहपुर स' दक्षिण बहि कय खिरोई मनियारी गामक पश्चिम मे अबैत छथि। एतय स' किछु दूर बहला पर एकटा पैघ चौर स' अग्निकोण मे अपन धारा कें फेरैत तथा महनौली गामक पूब भाग स' बहैत एकमीघाट पहुँचि कय छोटकी बागमती स' संगम कय लैत छथि। ■

जीवछ-कमला

कमतौलक दक्षिण तथा बिस्फीक नैऋत्य कोण मे रघौलीक समीप कमलाक प्राचीन धार आ छोटकी बागमतीक संगमक दक्षिण छोटकी बागमतीक कछेड़ मे दुधैल गाम अछि। दुधैलक पूब मे स्थित चौर स' जीवछ नदीक प्रवाह दृष्टिगोचर होइछ जे बेनीपट्टी थानाक दक्षिण मे अछि। एँहि चौर स' जीवछक प्रथम दूटा धारा चलैत छैक। प्रथम दुधैल स' चलि कय बिरखौली तथा कायमचक गाम होइत दरभंगा नगरक उत्तर वासदेवपुर ओ बेला पैलेसक पूब मे पहुंचि कय दरभंगाक पूर्वोत्तर भाग स' बहैत अग्निकोण दिस बढ़ैत छथि। दोसर पूब भागवला स्रोत ओहि चौर स' सिंघिया (बेनीपट्टी)क समीप स' अग्निकोण मे प्रवेश कय जलवारा, हनुमाननगर, डोमे होइत चमर्जन ओ मेघ गामक मध्य आबि कय पूब मुड़िकय भुसकौल गाम स' डेढ़ मील पश्चिम मे उत्तर स' आबय वला दोसर स्रोत कें ग्रहण-करैछ। रैयाम ओ अंउसी वभनगामा मार्गक उत्तर स्थित रजौरा गामक समीप प्रवाहित होइत दक्षिण दिस अबैत छथि। एतय स' चलिकय भवानीपुर ओ खुटौराक पश्चिम स' चलैत दरभंगा-सकरी रेलमार्ग कें पार कय पुरा, दिवारी, घोई आदि गामक पश्चिम स' चलि कय दरभंगा-बहेड़ा मार्ग कें पार कय तीन मील दक्षिण फतेहपुर गाम स' पश्चिम मे दुधौल स' प्रवाहित होवयवला पश्चिमी स्रोत मे सम्मिलित भ' जाइछ। किन्तु आब दुधैलवला स्रोत दरभंगा नगरक पूब भाग तक मृतप्राय भ' गेल छैक। जीवछक दुनू स्रोत सम्मिलित भय अग्निकोण मे चलैत बरूआरा लग हायाघाट स' पूर्वोत्तर कोण मे गंगिया, वासुदेवपुर तथा सेमरांव जायवला मार्ग कें पार करैत अछि। आगू बढ़ला पर महापारा नामक गाम एहि नदीक वाम पार्श्व मे स्थित अछि। एहि गामक दक्षिण तथा अग्निकोण मे एकटा पैघ चौर अछि। एतय प्राचीन काल मे तारसराय स्टेशनक पास कमला नदी

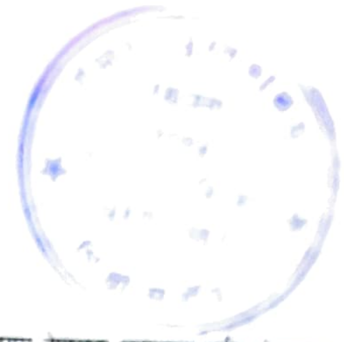
जीवछ स' संगम करैत छलीह। महापाराक बाद जीवछ बहेड़ा थानाक सकला गाम पहुंचैत छथि तथा अग्निकोण मे प्रवाहित होइत आथर, सोमारो ओ तुर्की गाम होइत नवानी गाम पहुंचि जाइत छथि जतय तारसराय स' बहि कय आवयवाली कमला धार स' मिल जाइछ।

मधुबनी जिला मे कमला नदी पंचमुखी छथि। पांच मुखक द्वारा पश्चिम मे बेनीपट्टीक नैऋत्य कोण मे स्थित कमतौल स' आरम्भ कय कें पूब मे खजौली थानाक बाबूबरही तथा दक्षिण भाग मे लहेरियासराय, बहेड़ी, सिंघिया, बिरौल ओ मधेपुर थाना तक अपन आधिपत्य बनौने छथि। एकर पहिल धारामुख बेनीपट्टी होइत कमतौलक दक्षिण आ रघौलीक समीप छोटकी बागमती स' मिल जाइछ। एहि धाराक टूटल-बिखरल धारा लहेरियासराय स्टेशनक सटले दक्षिणवला चौर स' अग्निकोण मे चलैत जोगियारा, उघरा एवं बहेड़ी होइत जीबछ स' मिलय वाली धारा छथि। दोसर मुख बेनीपट्टीवला प्राचीन प्रवाह स' मिलि कय ओ जयनगर थानाक मनमोहन एवं मढ़िया गामक समीप स' अलग भय दक्षिण चलैत मलमलक पश्चिम स' कुसमौल ओ ककरौल-कपिलेश्वर स्थान होइत दक्षिण आबि कय तारसराय स्टेशनक समीप स' बहेड़ा थाना दिस अबैत छल। तेसर मुख जयनगर स' दक्षिण चलैत सौराठ होइत मधुबनी नगरक पश्चिम मे आबि कय आ मलंगियाक पास ककरौलवला धार स' मिलि कय तारसराय अबैत छल। सौराठक उत्तर मे एहि नदी कें बलरवा नदी कहल जाइत छल। बाद मे यैह धार लक्ष्मीपुर, कलिकापुर तथा देपालपाली स' पश्चिम मुड़ि कय लक्ष्मीपुर स' सोझे दक्षिण दिस बहैत राजनगर ओ परिहारपुर होइत मधुबनीक पूब स' सकरी स्टेशन स' दक्षिण जाय लगलीह। कमलाक चारिम मुख 19म शताब्दीक अन्त मे जयनगर स' अग्निकोण मे झुकि कय मधुबनी-जयनगर रेलमार्गक पूर्वी कछेड़ स' खजौली, मिरजापुर होइत परिहारवला धार स' मिल कय रामपट्टी, नवहथ, पंडौल एवं सकरी होइत दक्षिणी भाग मे जाइत छलीह। हिनक पांचम प्रवाह मार्ग आइ स' लगभग 12 वर्ष पहिने जयनगरक पूब दिशा मे मुड़ि कय घउरे नदीक धार तथा सोनीक धार कें समेटैत बलान नदीक मार्ग पर अपन अधिकार कय झंझारपुर होइत बहय लगलीह, जे धारा मार्ग कमलाक प्रधान धारा मार्ग बनि गेल अछि। अत: कमला-बलान आब कहल जाइत छथि। हिनक पांचो प्रवाह-मार्ग बहेड़ा, बहेड़ी, बिरौल तथा सिंघिया थाना मे प्रवाहित भ' रहल अछि।

नवानी स' जीवछ पूब वाहिनी होइत छथि। कटवास गाम दहिना तट पर अछि। थोड़ेक दूर पर जा कय दू भाग मे विभक्त भ' जाइत छथि। दुनू धार समानान्तर अग्निकोण मे चलैत बामा धार सिंघिया थाना मे घुसि कय हरनगर गामक उत्तर स्थित महरी गामक समीप सकरी स' बहि कय आबयवाली कमला नदी स' मिल जाइत छथि। जीवछ दक्षिणवाहिनीक क्रम मे अकबरपुर तथा हांटी अबैत छथि। एहि गामक नैऋत्य कोण मे ई सिंघिया-बिरौल मार्ग कें पार कय सिंघिया थाना मे प्रवेश करैत छथि। एक मील

दक्षिण बहला पर बेला गाम पहुँचि पूब दिस मुड़ि जाइत छथि आ बरहमपुर गाम होइत महरीक समीप सकरीवाली कमला धार स' मिल जाइछ। जीवछक दहिना धार दक्षिण दिशा मे बहैत अग्निकोण वाहिनी होइत ब्रह्मपट्टी गाम आबि कय बहेड़ा थाना स' निकलि कय बिरौल थाना मे बहय लगैत छथि। एतय दहिन कछेड़ पर पड़री, साहो, अधार ओ सहसराम गाम अछि। सहसराम स' अग्निकोण मे चलि कय पोखराम पहुँचि हिनक धार दक्षिण दिशा मे बहैत सिंघिया थाना मे प्रवेश करैत छथि। एतय सिंघिया-बिरौल मार्ग भेटि जाइत छन्हि। एतहि कमलाक अति प्राचीन धार स' संगम कय आगू बिरौल थानाक शिवपुर ओ सिरसिया गाम मे अबैत छथि। सिरसिया स' कमला अग्निकोण मे रसूलपुर ओ मैनी गाम आबि जाइत छथि आ बिरौल थाना कें पार कय सिंघिया थानाक मोहद्दीनगर नामक गाम आबि कय बूढ़ी गंडक तथा कमलाक अग्निकोण मे आबि जाइत छथि आ एतय सिंघिया-बिरौल मार्ग कें पार कय जीवछ स' मिल जाइत छथि। ई संगम स्थल सिंघिया स' तीन मील पूर्वोत्तर कोण मे अछि। प्राचीन कमला धार कें ग्रहण कय जीवछ अग्निकोण मे चलि कय बनगढ़ता ओ हरदिया गाम होइत बहरामपुर गाम पहुंचि लगभग तीन मील दक्षिण बहि कय हथरा गामक सटले पूब मे अबैत छथि। ओतय स' दू भुजा मे विभक्त भय दहिन कुंदल गाम कें छूबैत आ सोझे दक्षिण भुजा स' परकौली तथा सखवा गामक समीप करेह कें पार करैत छथि। हथराक पूब मे तीन मील दूर कुशेश्वरस्थान प्रसिद्ध तीर्थस्थल अछि। हथरा स' जीवछ नदी अग्निकोण मे चलैत पिपराही, उदा, महिसौत ओ कौराही होइत निरपता आ सुघरैन पहुंचैत छथि। महिसौतक पास स' जीवछ दक्षिण वाहिनी भ' निखता सुघरैनक मध्य होइत पूब मुड़ि कय लगभग तीन मील बहि कय फुहिया गामक पूब मे करेह स' मिल जाइत छथि। ई संगम कमला-करेह संगम स' पश्चिम मे अढ़ाई मील पर अछि। ■

कमला



लक्ष्मीस्वरूपा कमलाक उद्गम नेपालक महाभारत पर्वत शृंखलाक सगरमाथा अंचलक उदयपुर जिलाक उत्तरी छोर मे अछि। ई उदयपुर गढ़ी स' नैऋत्य कोण मे चलि कय जनकपुर अंचलक धनुषा जिला मे अबैत छथि जतय हिनक तीन स्रोत मिलि कय दक्षिण दिशा मे बहैत अछि। पहिने पश्चिम ओ मध्यभागक स्रोतक मिलन होइछ आ 18 मील पूब धरि बहैत छथि। उदय गढ़ीक उत्तर मे संगमक बाद कमला नेपालक पहाड़ी भाग मे 15 मील बहला पर तराइक धनुषा जिला मे उतरैत छथि। तराई मे करीब 20 मील दक्षिण बहला पर सर्वप्रथम मधुबनी जिलाक जयनगरक समीप कमला अवतरित होइत छथि। कमलाक जीवन्त धार जयनगरक निकट पूब भागक रेल-मार्ग स' सटल दक्षिण चलैत जयनगरक पूब भागवला चौर स' आगू बढ़ैत अछि। एहि प्रवाह पथक कछेड़ मे ब्रह्मोत्तर, ददवार, सिलरा, सुकी, मकुआ, मनियरवा ओ खजौली गाम पड़ैत छैक। सुरोक समीप नेपाल तराइक एक अत्यन्त छोट नदी धउरे कमलाक एहि प्रवाह मे संगम करैछ। कमला नदी जयनगरक उत्तर-पूब भाग मे लगभग 15-16 मील मे एकटा झीलक निर्माण कयने छथि, जकर उत्तरी सीमा जनकपुर स' विराटनगर जायबाला मार्ग तक छैक। कमलाक धारा मार्गक दहिन-पश्चिम मे रेलवे स्टेशन ओ बाम भाग पूब मे खजौली गाम अछि। खजौली स' दक्षिण तीन मील दूर लालापुर गाम छैक जतय नदी अग्निकोण मे मुड़ि जाइछ आ फेर दक्षिण दिशा मे बहैत केवान गाम पहुंचैत छथि जे राजनगर स्टेशनक पूब मे अछि। ई नदी नवहथ गाम लग पहुँचि कय दू धारा बनबैत छलीह जाहि मे पूर्वी धार आब मृतप्राय अछि। ई धारा लोहट चीनी मिलक समीप स' भौर गाम होइत माधोपुर गाम पहुंचैत छल। माधोपुर स' प्राचीन धार दक्षिण दिशा मे मुड़ैत सरिसव पाही, उभारो ओ सुखवारे गामक पूब स' दरभंगा-झंझारपुर रेल लाइन कें पार कय

दक्षिण अबैत छल आ मिरजापुर ओ बघेला गामक मध्य स' बहैत बहेड़ाक पूर्वोत्तर भाग मे स्थित चौर मे समाप्त भ' जाइत छल।

नवहथ गाम लग कमलाक जीवन्त पश्चिमी धार सेमुआरक अग्निकोण मे पहुँचि कय सकरी-मधुबनी रेल लाइन कें पार कय सटले दक्षिण चलैत दहिमत-नरोत्तम गाम पहुँचि जाइत छथि। एहि गामक नैऋत्य कोण मे वीरसायरि गाम (वीर सागर जलाशय) अछि। दहिमत स' कमलाक धार दक्षिण दिशा मे चलि कय पंडौल स्टेशन ओ गाम होइत सकरी अबैत छथि। सकरी स' कमलाक धार रेलवे लाइन कें पार कय दक्षिण चलैत क्रमशः कन्हौली, कायस्थ कवई, राघोपुर, नेहरा, पाइक टोल, मोअज्जमपुर तथा सिरिरामपुर गाम पहुंचैत अछि। सिरिरामपुरक दक्षिण बीकूपट्टी गाम नदीक बामा तट पर आ दहिना तट पर हावीभउवार गाम छैक। बीकूपट्टीक दक्षिण नदीक वामा तट पर बैगनी, नवादा ओ मझौरा गाम बसल अछि जे बहेड़ाक सटले पूब मे अछि। मझौरा स' कमलाक धार अग्निकोण मे चलि कय पहिने श्रीपुर जगत एकर बाद श्रीपुर धोरूख होइत पूब दिस चलैत हरसिंघपुर पहुंचैत छथि। एतय स' धार दक्षिण चलैत कोर्थ, रोहार, बिशनपुर गाम पहुँचि अग्निकोण मे मुड़ि कय डुमरी होइत बिरौलक पश्चिम पहुंचैत छथि। बिरौल स' कमला दक्षिण चलैत हांटी ओ उचती होइत सिंघिया थाना मे प्रवेश कय मिस्सी ओ महरो गाम कें स्पर्श करैत छथि। एहिठाम तारसराय स' आबयवाली जीवछ स' संगम कय अग्निकोण मे बहि कय नराचमौ दर गाम होइत मोहोम खुर्द ओ बिसरिया गाम पहुंचि कय उत्तराभिमुख भय भिरूआ गाम मे पूब दिस मुड़ि कय फेर दक्षिण दिस घुमि कय सहरसा जिलाक सीमा बनवैत दक्षिण दिशा मे बहय लगैत छथि। एहि सीमा रेखा पर कमलाक दहिन भाग मे इटहर, संभौरा, सिमरटोक, महादेव मठ आदि गाम बसल छैक। महादेव मठक दक्षिण गुलमा ओ तिलकेश्वर गाम अछि। तिलकेश्वरक पूब तथा तिलकपुरक पूर्वोत्तर कोण मे कमलाक एहि धार कें करेह नामक बागमतीक शाखा स' संगम होइत अछि जे आब कोसी स' होमय लागल अछि।

1954 तक कमला नदी उपर वर्णित धारा-मार्ग स' बहैत छलीह जे धारा आब हिनक छाड़न भ' गेल छैक। आब कमला जयनगरक पूब स' अग्निकोण मे बहैत बउरे तथा पूर्वी कमला कें समेटैत खजौली थाना मे प्रवेश करैत छथि। भटचौराक दक्षिण, भकुआक पूब-दक्षिण कोण मे तथा चतरा-गोबरौराक कोण मे सोनो नदी कें लपेट लैत छथि। एकर बाद दक्षिण बढ़ि कय महेश्वरक पूब मे तथा बाबूबरहीक दक्षिण मे बलानक अस्तित्व कें समाप्त कय अपन आधिपत्य बना लैत छथि। सोनो नदी नेपालक तराइ स' चलिकय कुमार खड्ड ओ कमतौलियाक मध्य भाग स' मधुबनी जिला मे अबैत छथि। कमतौलियाक नैऋत्य कोण तथा बौराक पूर्वोत्तर कोण मे खुटौना-जयनगर मार्ग ओ खजौली-महथा मार्ग कें चौराहा बनबैत सोनी कें पार करैत अछि। एहि चौराहा घाटक बाद सोनी बौरा गामक पूब आबि ओतय स' नैऋत्य कोण मे चलि कय दक्षिण दिशा

मे प्रयाण करैत बरूवार ओ छौराह गामक पास पहुंचि कय कमला तटबंध मे समा जाइछ। भतगामाक पास कमलाक आधुनिक धार बलान नदी कें समेटैत लालमुनिया, देवरा, बेला, पिरहो बेलाही आदि गाम होइत बाबूबरही मे अबैत छथि। लदनियाक नैऋत्य कोण मे बलान प्रवेश करैत कमला नदी बलानक धारा स' मिलिकय बहय लगैत छथि। बलान लदनिया ओ लौकहा थानाक सीमा बनि कय प्रवेश करैत 17-18 मील स्वतंत्र बहि कय खजौली थाना मे कमलाक आधुनिक धार स' मिल जाइत छथि। बलान कें आत्मसात कय कें कमलाक आधुनिक धार क्रमशः भतगामा, बिथौनी, नपही, गंगाद्वार ओ ईमामपट्टी गाम पहुंचैत अछि। ईमामपट्टीक दक्षिण मे मधुबनी स' संग्राम जायवला प्राचीन मार्ग कमला कें पार करैछ। एतहि एक घाट अछि जे इतिहास प्रसिद्ध कंदर्पीघाट कहल जाइछ। कंदर्पीघाट स' कमला दक्षिण चलैत छथि जतय बनौर ओ हरना गाम छैक। हरनाक दक्षिण कमलाक पूर्वी कछेड़ मे महरैल गाम ओ पश्चिमी तट पर ओझौल एवं बेलनी मेहथ गाम अछि। एहि स' दक्षिण बढ़ि कय कमलाक धार महिनाथपुर होइत झंझारपुर पहुंचैत छैक।

कमला झंझारपुर रेलवे स्टेशनक पश्चिम मे रेल लाइन कें पार कय रतौल, मदनपुर एवं गंगापुर गाम कें स्पर्श करैत राजा खरवारक पश्चिम आबि कय दक्षिण-पूब कोण मे मुड़ि कय मधुबनी सदर अनुमंडलक सीमा बनबैत बहैत छथि। एहि क्रम मे हिनका कछेड़ मे देवन, टंघ, जदुपट्टी, पड़री, दलदलपुर, परवल, असमा तथा दोहथा नामक गाम अछि। जदुपट्टी ओ पड़रीक पूब मे धारक बाम भाग मे भीठ भगवानपुर ऐतिहासिक गाम बसल छैक। दोहथा गामक उत्तर ओ असमाक दक्षिण कमलाक दहिना कछेड़ पर रसियारी गाम छैक। दोहथाक पूब मे जतय बलान तिलयुगा नदी स' मिलैत छल ओतहि बलान कें आत्मसात् करयवाली कमलाक संगम कोसी नदी स' होइत अछि। आब एहि भाग मे एकमात्र कोसीक साम्राज्य विराजमान छन्हि।

1954 मे राज्यव्यापी बाढ़ि आयल छल। राज्य सरकार 4.73 लाख एकड़ जमीन कें बाढ़ि सुरक्षा प्रदान करबाक हेतु कमला बलान पर तटबंध बनयबाक निश्चय कयलक। 1956 मे 1,11,67,374 रुपयाक लागत स' नदी पुल तथा सिंचाइ व्यवस्थाक निर्माण काज शुरू भेल। तटबंधक काज तृतीय पंचवर्षीय योजना काल मे कयल गेल। तटबंधक निर्माण मे लगभग 76 प्रतिशत काज पंचायत द्वारा तथा बाकी 24 प्रतिशत ठेकेदार द्वारा कयल गेल। कमला बलानक मुख्य प्रवाह स्थान मधुबनी जिला अछि जतय बाढ़ि आ रौदीक कारण भयंकर तबाही होइत छैक। एहि दृष्टि स' 17 लाख रुपयाक लागत स' 60 वर्ष पूर्व निर्मित किंग्स नहर प्रणालीक जीर्णोद्धारक योजना शुरू कयल गेल छल जकरा तत्कालीन प्रधानमंत्री जवाहर लाल नेहरू उद्घाटन कयने छलाह। कतेको वर्षक प्रयासक बादो एहि योजना स' अपेक्षित सफलता नहि भेटल। तखन कमला बलानक तटबंधक उत्तरी छोर पर 48.67 लाख रुपयाक लागत स' 300

मीटर लम्बा एक बीयर बनायल गेल। बीयरक दुनू छोर पर एक-एक मुख्य नहर निकालल गेल। एहि मुख्य नहर कें किंग्स नहर स' जोड़ि देल गेल। एकर अतिरिक्त नव नहरक निर्माण तेसर पांच साला योजना काल मे कयल गेल। एहि तरहें 45 किमी लम्बा किंग्स नहर, 24.20 किमी लम्बा मुख्य नहर ओ 163 किमी लम्बा शाखा नहर प्रणाली तैयार भेल जकर कुल कमांड क्षेत्र 1.69 लाख एकड़ अछि। बीयरक लम्बाई 295.58 मीटर ओ अधिकतम प्रवाह क्षमता 1,40,000 घन सेक।

कुल सिंचित क्षेत्र :

– मुख्य पश्चिमी नहर द्वारा	– 5747 हेक्टेयर
– मुख्य पूर्वी नहर	– 8785 हेक्टेयर
– मुख्य नहरक लम्बाइ	– 24.20 किमी
– कुल फसल क्षेत्र	– 35,927 हेक्टेयर
– किंग्स नहरक लम्बाइ	– 45 किमी

कमला नहर प्रणालीक मुख्य समस्या सिल्टक जमाव अछि। अन्य समस्याक समाधान छल नेपाल मे शीसापानी मे एक बहुउद्देशीय बांध बनायब जकर कोनो गम्भीर प्रयास एखन तक नहि भेल छैक। कमला नहर प्रणाली कें पश्चिमी कोसी नहरक अंग बनयवाक प्रयास छैक। ■

बलान आ भुतही बलान

बलानक उद्गम स्थान महाभारतक पर्वतक शृंखला मे अछि। नेपालक तराई मे त्रिमुखी भ' अपन तीन प्रवाहमुख स' मधुबनी जिलाक उत्तरी-पूर्वी सीमा मे प्रवेश करैत छथि। हिनक पश्चिमी धारा मुख दलनियां स' पूब ओ लालमुनिया गाम स' पश्चिम नैऋत्य कोण गामिनी भ' बहैत छथि। बलानक ई धार सोनो नदी स' मिलिकय झंझारपुर होइत बहैत छलीह आ नीचा मे जाकय तिलयुगा स' संगम करैत छलीह। आब खजौली थानाक बाबूबरही स' दक्षिण तथा भतगामाक पूर्वोत्तर कोण मे कमला स' संगम करैत छथि। दोसर धार – मध्यभागवाली – लोकहा लग प्रवेश कय सोन पताही, अन्हराटाढ़ी, संग्राम आदि गाम होइत झंझारपुर निर्मली रेल लाइन कें पार करैत छथि। बलानक तेसर धार - पूबवाली - लौकहा स' एक मील पूब बदरझूल गामक समीप प्रवेश कय भुतही बलान नाम स' फुलपरास होइत प्रवाहित होइत छथि। बलानक धार मे अत्यधिक बालु रहैत अछि। वर्षा ऋतुक बाद नदीक पेटी मे चुरू भरि पानि तक नहि देखल जा सकैछ किन्तु बालुक अम्बार लागल रहैत अछि। फुलपरासक सड़क पर ठेहुन भरि बालु लागल रहैत छैक। 'आयल बलान त' बनल दलान, गेल बलान त' धसल दलान'। एहि क्षेत्रक एकटा लोकोक्ति अछि। प्राय: बालूक प्रवाहक कारण एहि नदीक नाम बलान पड़ल। बलानक पहिल धारक प्रवाह मार्गक विवरण कमला नदीक संग कयल गेल अछि।

बलानक दोसर मुख-मध्यभागवाली - लौकहा लग मधुबनी जिला मे दक्षिणाभिमुख भ' प्रवेश करैत छथि। अत्यधिक बलुआही भूभाग स' होइत खुटौना पहुंचि कय अग्निकोण मे मुड़िकय दुर्गापट्टी होइत बरदाहा ओ सोनापताही गाम अबैत छथि। सोनापताहीक दक्षिण दहिना तट पर फुलहरिया गाम अछि। एकरे दक्षिण पश्चिम

तट पर अन्हराटाढी-टाढी मैया नामक प्रसिद्ध भगवतीक गाम अछि। एतय स' बलानक धार दक्षिण दिस बढ़ैत डुमरा ओ जलसैन होइत लखसैन महीद्वार गाम अबैत छथि। महीद्वारक पश्चिम बलानक दहिना तट दिस ननौर गाम आ ननौरक पश्चिम भामा गाम – वाचस्पतिक पत्नीक नाम भामतीक नाम पर अछि। महीद्वार गामक दक्षिण बलान तट पर संग्राम गाम अछि। प्राय: ई गाम बंगालक शासक विजयसेनक स्थानीय मांडलिक शासक संग्राम देव गुप्तक नाम पर बसल अछि। संग्रामक बाद बलान अग्निकोण अपन धार बनबैत सदसी-रतौली ओ कीरतपुरक पूब मे चलिकय घोघड़डीहा लग निर्मली रेल लाइन कें पार कय भुतही बलानक धार कें समेटैत कोसीक पश्चिमी तटबंधक भीतर प्रवेश कय चपराम गाम पहुंचैत छथि। एतय स' बलान नदी अग्निकोण मे चलि कय तड्डीहा गाम लग पहुंचि कय पूब मे कोसीक धार स' मिल जाइत छथि।

भुतही बलान : भुतही बलानक उद्‌गम हिमालय मे अवस्थित चुरे पर्वतमाला मे लगभग 910 मीटरक ऊंचाइ पर होइछ एवं सर्वप्रथम मधुबनी जिलाक लौकहा गाम लग भारतक भूमि मे अवतरित होइत छथि। नेपाल मे लगभग 42 किमी ओ मिथिला मे 45 किमी बहला पर दरभंगा-निर्मली रेल लाइनक पुल नं. 133 स' होइत कोसी स' संगम कय लैत छथि। कुल जलग्रहण क्षेत्र लौकहा मे 466 वर्ग किमी, टेंगरार मे 515 वर्ग किमी ओ 133 नं. रेल पुलक पास 556 वर्ग किमी। भुतहीक नाम बिहुल सेहो छल। भुतही बलान बलानक पूब वाली धार थिकीह। नेपालक तराइ भाग स' लाखो टन बालू आनि कय फुलपरास थानाक उपजाउ भूमि कें पाटि दैत छथि। हिनकर प्रवाह मार्गक कोनो चिन्ह नहि देखय मे आयत। वर्षा ऋतुक बाद नदी मे जल नहि देखय मे आयत। सर्वत्र बालू स' भरल सपाट भूमि। लौकहा स' आगू बढ़ि कय बन्दरझुली ओ नारायणपुर गाम अबैत छथि। एतय स' दक्षिण अयला पर दहिना कछेड़ मे माधोपुर गाम होइत बसनिया ओ बलानपट्टी गाम होइत भजनाहा पहुंचैत छथि। एतय स' अग्निकोण होइत दक्षिण मे चलैत परसौनी-सिरिसिया आ टेंगरा गाम आबि कय महथौर पहुंच जाइत छथि। ओतय स' नरैना गाम लग अबैत छथि जे फुलपरास स' दू मील पूर्वोत्तर कोण मे बलान ओ भुतहीक संगम होइछ। भुतहीक दोसर धार लौकहीक पूब भाग मे प्रवेश कय अग्निकोण मे अभिमुख होइत दक्षिण चलैत जमसर, ढाढ़ी, लदनिया, कुसमाही, राजारामपट्टी तथा बनगामा गाम लग स' बहैत निर्मलीक उत्तर पिपराही गामक समीप कोसी तटबंधक 42म किमी पर घुसिकय तिलयुगा मे सम्मिलित होइत छथि। तिलयुगा निर्मलीक पूब कोसी धार मे मिल जाइत छथि। भूतही ओ बलान परस्पर सम्मिलित होइत मुसहरिया ओ परसा गाम होइत घोघड़डीहा रेलवे स्टेशनक पूब तथा किसनपट्टीक उत्तर निर्मली रेल लाइन कें पार कय बसबारी गाम पहुंचैत छथि। एतहि भुतही बलान अन्हराठाढ़ी बाली बलानक संग मिल जाइत छथि एवं तड्डीहाक पूब मे कोसी मे समा जाइत छथि।

भुतही बलान पर तटबंध बनयबाक प्रस्ताव सर्वप्रथम 1957 मे स्थानीय विधायक विधान

सभा मे कयलनि। सरकारक कहब छलै जे स्थानीय जनताक विरोधक कारणे बांधक काज नहि कयल गेल। 1962 मे पुन: तटबंधक लेल आवाज उठल मुदा फेर टारि देल गेल सरकार द्वारा। 1966 मे 22 अगस्त स' सितम्बर तक भयंकर बाढ़ि आयल। फुलपरासक 101टा पंचायत-धौंसही, बरही, फुलपरास, बहरमपुर, पिरोजगढ़, चिकना, घोघड़डीहा ओ अन्य स्थान भयंकर बाढ़िक चपेट मे छल। पूरा क्षेत्र सभठाम स' कटि गेल छल। ग्रामीण सभक प्रयास स' धौसही स' मुरली तक 200 मीटर लम्बा बांध बनौल गेल। एकरा सरकार मरम्मति नहि करौलक। 27टा पंचायत जलमग्न भ' गेल। 1968 मे पुन: भुतही बलान पर तटबंधक लेल विधान सभा मे मांग कयल गेल। मांग अस्वीकृत भ' गेल। 1970 मे फेर मांग भेल मुदा कोनो सुनवाहि नहि। 1971क 12 जून मे भयंकर बाढ़ि आयल। झंझारपुर-खुटौना मार्ग बाढ़ि मे डूबि गेल, रास्ता बन्द भ' गेल। जनता आ नदीक दबाव स' सरकार बाध्य भ' नदीक दहिना कछेड़ पर 33.6 किमी लम्बा लौकहाक समीप भारत-नेपाल सीमा स' लयकय गोरगामा तक बांध बनेबाक नियार कयलक। एकरा कोसीक पश्चिमी तटबंध स' जोरबाक सेहो छल। 18 मइ 1972 मे सरकार भुतही बलानक दहिन कछेड़ स' लय कें कोसीक पश्चिमी तट पर बसल गोरगामा तक 33. 6 किमी लम्बा तटबंध एहि वित्तीय वर्ष मे बनायत। काज शुरू नहि भेल। 1974-1978 क बीच भुतही बलानक पश्चिमी तटबंध लौकहा स' परसा तक 30 किमी लम्बा बनिकय तैयार भेल, जाहि मे 91.90 लाख रुपया खर्च भेल। नदीक पूर्वी तटबंधक मांग जोर पकरलक। सरकार भुतही बलानक बामा कछेड़ पर लक्ष्मीपुर स' टेंगरार तक 16 किमी तटबंध 81.82 लाख रुपयाक लागत स' 1980 तक पूरा कयलक। बहुत हो-हल्लाक बाद सरकार 17 फरवरी 1982 कें 1,87,00,000 रुपयाक लागत स' भुतही बलानक पूर्वी तटबंध टेंगरार स' आगू 21.5 किमी लम्बा तटबंध नरहिया तक बनौलक। रेलवे लाइन तक काज नहि भेल, रेल विभागक विरोधक कारण। मामला पटना उच्च न्यायालय मे पहुंचल, तटबंध बनयबाक पक्ष मे फैसला भेल। रेल विभागक स्वीकृति नहि भेटलाक कारणे परसा हॉल्ट तक तटबंध एखन तक नहि बनि सकल अछि। ■

तिलयुगा

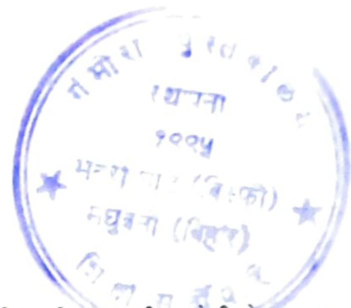
तिलयुगा या त्रियुगाक धार आब कोसीक धार भ' गेल छथि। निर्मली क दक्षिण कोसी नदी तिलयुगाक पुरना धार स' मिलिकय बहय लगैत छथि। मैथिली रामायण मे त्रियुगाक स्मरण एहि तरहें कयल गेल अछि।

कमला त्रियुगा अमृताधेमुरा बागमती कृतसार।
मध्य बहथि लक्ष्मणा प्रभृति तें मिथिला विद्यागार।।

तिलयुगा नेपालक पूर्वी तराइ मे स्थित सप्तरी जिलाक उत्तरी भाग स' चूरे पर्वतमालाक दक्षिणी ढलान स' चलैत दक्षिण दिशा मे राजविराजक पूर्वी भाग स' बहैत छथि। मधुबनी ओ सहरसा जिलाक सीमारेखा बनबैत दक्षिणवाहिनी बनिकय मिथिला मे प्रवेश करैत छथि। हिनक बामा कछेड़ पर कुनौली गाम बसल अछि जे निर्मली स' 20 मील दूर पूर्वोत्तर कोण मे अछि। नेपालक सखरा गाम कुनौली स' दू मील दूर पश्चिमोत्तर कोण मे अछि जतय छिन्नमस्ता देवीक एकटा प्रसिद्ध मन्दिर छन्हि। कुनौलीक बाद कमलपुर, डगमरा, सिकरहटा, दुधैला, दिघिया तथा बेला नामक गाम छैक। ई बेला स' नरैना तथा खुटौना पहुंचैत छथि। दुधौलाक पश्चिम तिलयुगाक पश्चिमी स्रोतक कछेड़ मे महादेवमठ नामक पौराणिक स्थल छैक जकरा असुरगढ़ कहल जाइछ। ई निर्मली स' चारि मील उत्तर मे छैक। तिलयुगा बेला गामक पश्चिम भाग स' दक्षिण मे चलिकय निर्मलीक पूब मे आबि कय कोसी मे मिल जाइत छथि।

तिलयुगाक बाढ़ि स' बचावक लेल बनैली-श्रीनगर इस्टेट द्वारा 14 मील लम्बा एकटा तटबंध तिलयुगा नदी पर बनौल गेल छल। कोसी तटबंध बनय स' पहिने ई तटबंध नष्ट भ' गेल छल। यत्र-तत्र जे बांधक चिन्ह दृष्टिगोचर होइत छल ओहो आब कोसी तटबंध बनि गेला पर लुप्त भ' गेल छैक। ■

कोसी



प्रबल प्रतापी ऋषि विश्वामित्रक बहीन कोसी नेपालक राजधानी काठमांडू नगरक पूर्वोत्तर सीमा भाग मे स्थित गोसाई थानक हिमांचल स' आरम्भ कय कें पूब मे कंचनजंघा हिम शिखर तक ओ उत्तर दिशा मे हिमालय पर्वत शृंखला कें पार कय चूरे शृंखला कें विदीर्ण कय नेपालक तराइ भाग मे चतरा नामक स्थान लग आबि कय मिथिला मे प्रवेश करैत छथि। पश्चिम स' पूब तक 175 मील लम्बा एवं दक्षिण स' उत्तर दिस 92 मील चौड़ा भूमिक जल, बालू ओ मांटि बहाकय मिथिलांचल मे आनि कय गंगाक मार्ग स' समुद्रस्थ भ' जाइत छथि। कहल जाइछ एहि अंचल मे समुद्रक गर्भ स' प्रथम-प्रथम पृथ्वीक आविर्भाव सुनकोसी, अरुण कोसी ओ तमार कोसीक त्रिवेणी संगमक पास भेल, जतय कोसी हिमालयक आंगन स' निकलैत छथि। एतय वराह भगवान द्वारा पृथ्वीक उद्धारक पौराणिक आख्यानक आधार पर कोसीक तट पर वराह मूर्तिक स्थापना कयल गेल छल आ वराह तीर्थक नाम स' विख्यात भेल छल। हिनक उद्गम नेपाल तथा तिब्वत मे अछि ओ ई मुख्य रूप स' तीन हिमपोषित धाराक संयोग स' बनल छथि जकर संगम नेपाल मे वराह क्षेत्र स' 5 किमी ऊपर त्रिवेणी मे होइत छैक। पहिल धारा सुन कोसीक ग्लेशियरक क्षेत्रफल लगभग 1900 वर्ग किमी तथा कुल जलग्रहण क्षेत्र 18,765 किमी छैक। तिब्बत मे एकर प्रवाह मार्ग 51 किमी लम्बा छैक। सुन कोसीक धारा मे सोना कण पायल जयबाक बात कहल जाइत छैक तथा जल स्वर्णिम देखय मे लगै छैक तें स्वर्ण या सुन कोसी कहल जाइछ। त्रिवेणी संगम स' पहिने एहि मे इन्द्रावती, तामा कोसी, लिक्षु कोसी तथा दूध कोसीक धार मिलैत अछि। एहि मे तामा कोसी गौरीशंकर पर्वत (ऊंचाई 7146 मी) तथा दूध कोसी भकालृ ृंखला स' बाहित (ऊंचाई 8442 मी) होइत छथि। कोसीक दोसर

धार अरुण कोसीक कुल जलग्रहण क्षेत्र 34125 वर्ग किमी अछि जाहि मे 3146 वर्ग किमी हिमखंड अछि। हिनक सहायक नदीक उद्गम सागरमाथा शिखर (एवरेस्ट) मे अछि जकर सर्वाधिक ऊंचाई 8842 मीटर छैक। तेसर धार तायर कोसीक उद्गम कंचनजंघा पर्वतमाला अछि जकर ऊंचाई 8581 मीटर छैक। जलग्रहण क्षेत्र एकर 5704 वर्ग किमी छैक जाहि मे 656 वर्ग किमी ग्लेशियर छैक। एहि तरहें त्रिवेणी मे कोसीक कुल जलग्रहण क्षेत्र 58,594 वर्ग किमी जाहि मे 5702 वर्ग किमी हिमखंड अछि। त्रिवेणी स' चतराक दूरी 10 किमी अछि।

सप्त कोसी संगमक बाद नदीक नाम महाकोसी भ' जाइछ। सब स' पश्चिम इन्द्रावती आ एकर बाद क्रमशः पूब दिस सुन कोसी, तामा कोसी, लिक्षु कोसी, दूध कोसी, अरुण कोसी तथा तोमर कोसीक धारा अछि। इन्द्रावती गोसाई कुंडक उत्तर पूब कोण मे लगभग 11-12 मील दूर मे स्थित पंचपोखरीक समीप तथा युगल पर्वतमालाक पश्चिमी भाग मे प्रवाहित होइत छथि। हिनक उद्गम स्थल आधुनिक नेपालक बागमती अंचलक पूर्वोत्तर भागक सिंधुपाल चौक ओ रसुआ जिलाक सीमा पर छैक। उद्गम स्थल स' थोड़ेक अग्निकोण मे प्रवाह कें बढ़बैत गोसाई थान पर्वतमाला एवं युगल पर्वतमालाक दर्रा स' चलि कय सिंधुपाल चौक ओ नुवाकोट जिलाक सीमा बनैत हेलम्बुक पूब भाग स' दक्षिण दिशा दिस जाइत छथि। अग्निकोण मे चलैत दोलालघाट स्थानक दक्षिण सुन कोसी स' संगम 49 मील लम्बा चललाक बाद करैत छथि। सुन कोसी तिब्बत स' निकलि कय युगल पर्वतमाला ओ रोल्वालिंग हिमालक मध्य दर्रा स' हिमालय कें पार कय नेपालक भूमि मे प्रवेश करैत छथि। तिब्बत मे 32 मील प्रवाह भूमि छन्हि। नेपालक सीमा मे ओडेरी होइत 10 मील दक्षिण चलला पर युगल पर्वतक धारा सुन कोसी स' संगम करैत छैक। एतय स' दक्षिण दिशा मे झुकि कय नैऋत्य कोण मे बहैत दोलाल घाट धरि आबि कय एकर नैऋत्य कोण मे सुन कोसी इन्द्रावती स' मिल जाइत छथि। हिनक जलक रंग स्वर्णिम अछि। तामा कोसीक उद्गम तिब्बतक फलाकला नामक दर्राक समीप अछि। हिनक तीनटा धारा गौरीशंकर शिखरक दुनू कछेड़ स' नेपालक सीमा मे आबि कय एहि शिखरक सानु प्रदेश मे संगम करैछ। एतय स' दक्षिण मे 29 मील चलि कय चूरीकोट नामक स्थान मे अयला पर अग्निकोण मे मुड़ि कय अपन प्रवाह बनवैत छथि। 11 मील आगू बढ़ि कय मेलुङ्ग पहुंचि कय उत्तर दिशा स' अबैत एक हिमनदीक जल ग्रहण कय कें नैऋत्य कोण मे दक्षिण दिशा मे बहैत 11 मील दूर चलिकय सुन कोसीक प्रवाह स' संगम करैत छथि। हिनक जल ताम्र वर्णक छन्हि। लिक्षु कोसीक उद्गम सागरमाथाक अंचलक उत्तरी भागक सोलखंबु जिलाक मध्य भागक पश्चिमी छोर पर स्थित एकटा बर्फक झील मे अछि। जन्म सागरमाथा अंचल मे ओ पूरा जीवन प्रवाह जनकपुर अंचल मे छन्हि। उद्गम स्थान स' चलिकय जनकपुर अंचलक रामेछाप जिला मे प्रवेश कय 7 मील दूर अग्निकोण मे चलिकय सुन कोसीक गर्भ मे अपना के

विसर्जित करैत छथि। हिनक प्रवाह मार्ग 34 मील छन्हि। दूध कोसीक उद्गम कुम्भकर्ण पर्वतमालाक सागरमाथाक दक्षिण सानु अंचल मे अछि। आरम्भ मे दूध कोसी तीन हिमकुंडक प्रस्रवण प्रवाह स' नदीक रूप धारण करैत छथि। दूटा कुंड सागरमाथाक पश्चिमी भाग तथा एक पूर्वी भाग मे स्थित अछि। दूध कोसी दुर्गम पहाड़ी दर्रा ओ घोर जंगल स' भयावह अधित्यका स' चलैत हजारो फीट नीचा स' मार्ग बनबैत दक्षिण दिशा मे प्रपात सदृश हरहराइत लटपटाइत अबैत अछि। हिनक संयुक्त धार 16 मील दक्षिण अयला पर अग्निकोण मे मुड़ैत सात मील चललाक बाद हंगु नामक हिम नदी दूध कोसी मे संगम करैत अछि। एहि संगम स' 9 मील दक्षिण बहला पर एकटा आओर हिम स्रोतस्विनी एहि मे संगम करैत छथि। एकर आगू 24 मील चलला पर सुन कोसी दूध कोसी कें अंकसात् कय लैत छथिन्ह। दूध कोसीक प्रवाह पथ 75 मील अछि।

अरुण कोसी हिमालयक पार तिब्बती पठारक मध्य स' निकलि पूब दिस बढ़ैत युगल पर्वत, गौरीशंकर, एवरेस्ट तथा कुम्भकर्ण पर्वत श्रेणीक कतेको हिम-नदी कें समेटैत एवरेस्ट शिखरक पूब भाग स' दक्षिण दिशा मे बाट बनबैत नेपालक सीमा मे प्रवेश करैत छथि। हिनकर मुख्य उद्गम गंडकीक एक शाखा त्रिशूलीक उद्गम-सरोवरक पूब मे स्थित एक दोसर हिम सरोबर मे अछि। ई हिमसर नेपालक गोसाई थामक उत्तर एवं हिमालयक उत्तरी पाद भाग मे अछि। हिम नदी स' पोषित अरुण कोसी नेपालक वर्तमान कोसी अंचल ओ सागरमाथा अंचलक सीमारेखा बनबैत 22 मील घोर आरण्यक क्षेत्र स' अग्निकोण मे बहैत दक्षिण दिस अबैत छथि। एहि पथ मे दूटा नदी हिनका स' संगम करैछ। अरुण कोसी नैऋत्य कोण मे बहैत दक्षिण दिशा मे बढ़ैत छथि आ सुन कोसी उल्लास स' अरुण कोसी कें अंकसात् कय लैत छथि। अरुण कोसी त्रिवेणी संगम तक 1229 वर्ग मील क्षेत्रक ग्लेशियर ओ 12877 वर्ग मील क्षेत्रक वर्षाक जल ग्रहण करैत छथि। सप्तकोसीक अन्तिम धार तोमर पल्लोकिरातक पूर्वोत्तर कोण मे स्थित कंचनजंघा पर्वत श्रेणी स' प्रवाहित होइत छथि। तोमर कोसीक सब स' लम्बा शाखाक उद्गम कंचनजंघाक उत्तरी छोर पर स्थित जनक शिखरक हिमसर मे अछि। एतहि नेपालक पूर्वोत्तर कोणक सीमाक अन्त होइछ। तोमर कंचनजंघाक पश्चिमी भाग स' आ सिम्बा नदी कंचनजंघाक पूर्वपाद स' निःसृत होइछ। अपन प्रवाह मार्ग मे कतेको हिम-नदी कें आत्मसात् करैत तोमर कोसी तेहथुम जिला मे प्रवेश कय नैऋत्य कोणक सोझ धनकुटा नामक स्थानक दक्षिण भाग स' चलि कय पश्चिम मुड़ि जाइत छथि। एहि यात्रा क्रम मे तोमर कोसी, सुन कोसी ओ अरुण कोसीक संयुक्त धारक संग त्रिवेणी संगम मे अपना कें विलीन कय लैत छथि। तोमर कोसी अपन उद्गम स्थल स' त्रिवेणी संगम तक 10 मीलक प्रवाह बनबैत छथि। हिनक ग्लेशियर क्षेत्र 256 वर्ग मील आ वर्षा जलवला क्षेत्र 20-22 वर्ग मील छन्हि। यैह अछि सप्तकोसीक प्रवाह मार्ग। सप्त कोसीक धारा सप्त लोकक प्रतीक स्वरूप सप्त स्वर्ग गंगा छथि जे वस्तुतः स्वर्ग स' उतरैत छथि तथा जिनक

विशद् ओ विस्तृत वर्णन वैह देवपुरुष कय सकैत छथि, जनिक वाणी मे साक्षात् सरस्वती, लेखनी मे गणेश एवं पैर मे नारद बसैत होइथि।
त्रिवेणी संगमक पश्चात कोसी नदी पूर्ण यौवन कें प्राप्त करैत छथि। चतरा नामक स्थान स' उत्तर 6 मील दूर कोसीक त्रिवेणी संगम अछि। महाकोसीक सम्पूर्ण ग्लेशियर क्षेत्र 2228 वर्ग मील आ वर्षाक जल क्षेत्र 23808 वर्ग मीटर। त्रिवेणी संगमक बाद कोसी चूरे पर्वत श्रेणी कें विदीर्ण करैत दक्षिण नेपालक तराइ भाग मे अबैत छथि जतय चतरा नामक स्थान अछि। त्रिवेणी संगम आ चतराक बीच महाकोसीक बामतट पर कोकामुख तथा वराह नामक अतिप्रसिद्ध तथा परम पवित्र तीर्थस्थल अछि। एकर बाद कोसी चतरा पहुंचैत छथि। कोसीक उद्गम क्षेत्र समुद्र सतह स' 18,000 फीट ऊंच जखन गंगाक उद्गम 10,300 फीट ऊंच आ सिंधुक 16,000 फीट उंचाइ अछि। वर्षा ऋतु मे हिनक प्रवाह-गति प्रति घंटा 16 मील तथा अनदिना प्रतिघंटा 3 मील अछि। हिनक भयानकता ओ उच्छृंखलता स' सभ आतंकित रहैत अछि। ई मात्र मांटि आ बालू स' भरिते टा नहि छथि, अपन तीक्ष्ण धार स' जमीनक कल्पनातीत कटाव सेहो करैत छथि। हिनक उपद्रवक क्षेत्र लगभग 140 मील धरि पसरल अछि। प्राप्त रेकर्डक अनुसार 1726 स' 1995 तक कोसी 110 किमी पश्चिम घसकि गेल छथि। मार्ग परिवर्तनक प्रक्रिया मे नेपाल मे लगभग 1280 वर्ग किमी तथा मिथिलाक पूर्णिया, सहरसा, मधेपुरा ओ कटिहार जिलाक 15360 वर्ग किमी मे बालू भरबाक कारण एवं बाढ़ि ओ कटाव स' तबाही मचा देने छथि। गामक गाम, बजार - हाट हजारो लोकक जान आ मवेशीक मृत्यु भेल। फसल सम्पत्तिक अतुलनीय क्षति। तिब्बत, नेपाल तथा मिथिलाक पूर्णिया, सुपौल, सहरसा, मधेपुरा ओ कटिहार जिलाक 725 किमी लम्बा दूरी पार कय कुरसेला (कटिहार) लग ई गंगा स' संगम करैत छथि।
कोसीक बाढ़ि कें नियंत्रित करबाक हेतु सर्वप्रथम बीर बांध तटबंध नेपालक बेल्का पहाड़ी ृंखलाक फतेहपुर स' आरम्भ कय आधुनिक पूर्वी तटबंध होइत सुपौलक पश्चिमी भाग तक बनल छल। बीस स' तीस फीट तक ऊंच आ 80-100 फीट तक चौड़ा एवं लम्बाइ 50 मील तक छल। ई कोसी धारक पश्चिमी तट मे बनल छल। पूर्वी भाग खुजले छल। एहि बांधक भग्नावशेष यत्र-तत्र एखनो देखय मे अबैत अछि। एहि बांधक निर्माण हरि सिंह देवक मंत्री वीरेश्वर बनौने छलाह, एहन अनुमान कयल जाइछ। मिथिलाक शासक द्वारा निर्मित छल। बीर बांधक संबंध मे एहि अंचल मे एकटा दंतकथा बहुत प्रसिद्ध अछि। कुमारि कोसीक रूप लावण्य, मदमस्त आ अल्हड़ छन्हि। हिनक रूपरंग ओ केश राशि देखिकय एकटा राक्षस मोहित भ' गेल आ परिणयक याचना कयलनि। कोसी शर्त रखलनि जे हिमालय स' गंगाक बीच एक राति मे यदि अहां बांध बना देब तखने हम अहांक परिणिता बनि जायब। राक्षस बात मानि लेलक आ तीव्र गति से काज प्रारम्भ कय देलक। बांधक प्रगति देखि कोसी शंकर भगवान के आवाहन कयल। भगवान शंकर

कोसी कें आश्वस्त कयलनि आ मुर्गा रुप धारण कय आधा राति मे कुकरूकू करय लगलाह। मुर्गाक आवाज सुनि राक्षस बुझलक जे भोर भ' रहल छैक आ हम अपन प्रतिज्ञा पूरा नहि कय सकब। बांधक काज अपूर्ण छोरि हिमालयक जंगल मे ओ भागि गेल। एहि दंतकथा मे किछु ऐतिहासिक तथ्य निहित अछि। जाहि तरहक बांध बनि रहल छल से एकटा राक्षसे बना सकैत छल। किन्तु, हरिसिंह मुस्लिम शासक स' हारि गेलाह एवं अपन मंत्री वीरेश्वरक संग हिमालयक जंगल मे भागि गेलाह। तें बांध अपूर्ण रहल। एहि बांधक निर्माण 12म शताब्दीक अन्त मे हिन्दू राजा लक्ष्मण द्वितीय द्वारा सम्पन्न भेल, किछु इतिहासकारक ई मत छन्हि।
बीरबांध कें छोरि कोसी कें काबू मे करबाक लेल 19म शताब्दीक अन्त तक कोनो प्रयास नहि भेल। 1889-90 मे पूर्णिया डिस्ट्रिक्ट बोर्ड द्वारा अंचराघाटक नजदीक लगभग 2.4 किमी लम्बा बांध कोसीक विस्थापनक लेल बनायल गेल। सिरसी फैक्टरी तथा गोंडवारा कम्पनी द्वारा नीलक खेतीक सुरक्षाक लेल ई बांध बनल छल। कोसी आ गंगाक संगम पर कोसीक धार कें नियंत्रित रखाबाक हेतु रेलवे सेहो बांध बनौलक। 1893 मे डब्लू.ए. इंगलिस एहि क्षेत्रक भ्रमण कय अपन सुझाव मे कहलनि जे कोसीक प्राकृतिक धारा स' छेड़छाड़ उपयुक्त नहि होयत। यथास्थिति कें स्वीकार कय लेल गेल। पुन: 24 फरवरी 1897 मे एहि संबंध मे आधिकारिक बैसक भेल एवं निर्णय भेल जे चतराक नीचा बांध बनायल जाय। 27 फरवरी 1897 मे नेपालक तत्कालीन प्रधानमंत्री महराजा सरबीर शमशेर जंग एहि प्रस्ताव कें स्वीकृति कयल। अज्ञात कारण स' काज आगू नहि बढ़ल। छोट-मोट बांध बनैत रहल-टूटैत रहल देखभालक अभाव मे। बाढ़ि सुरक्षाक लक्ष्य पूर्तिक हेतु पहिल आधिकारिक चर्चा 1928 मे उड़ीसा मे एक बाढ़ि सम्मेलन मे भेल। एहि सम्मेलन मे निर्णय लेल गेल जे यथाशीघ्र सब तटबंध कें ध्वस्त कय देल जाय तथा राजमार्ग मे अधिकाधिक पुल, कलवर्ट आदि बनायल जाय जाहि स' जल प्रवाह कें अबाधित राखल जाय। स्थानीय स्तर पर एकर विरोध भेल। नवम्बर 1937 मे पटनाक सिन्हा लाइब्रेरी मे बाढ़िक रोकथामक लेल सम्मेलन कयल गेल। कोनो सक्रिय परिणाम नहि भेल। 1941 मे क्लॉड इंगलिस, निदेशक इरिगेशन एण्ड हाइड्रोडायनमिक सेन्टर, पुना, कोसीक अध्ययन कयलनि एवं तदनुसार नदीक पश्चिमोन्मुख प्रवाह ताबत तक जारी रहत जाबत तक तिलयुगा ओ बलानक नींचाक क्षेत्र कें पाटि नहि देल जायत। सम्भवत: तमोरियाक दक्षिण जमीनक उठान हिनक पश्चिमोन्मुख प्रयाण कें रोकि देत। द्वितीय विश्वयुद्ध प्रारम्भ भ' गेल। सब यकथक परले रहल। 1945 मे विकास योजना मे दस करोड़ रुपयाक लगत स' कोसी पर नेपाल स' गंगा संगम तक दुनू कछेड़ पर लगभग दस मीलक पारस्परिक दूरी पर एक सीमान्त तटबंधक प्रस्ताव आयल। विशेषज्ञ एहि योजनाक विरोध कयलनि। 6 अप्रैल 1947 मे निर्मली मे कोसी पीड़ित एक सम्मेलन भेल जाहि मे डा. राजेन्द्र प्रसाद, सी.एच. भाभा, श्रीकृष्ण सिंह ओ अन्य महानुभाव

उपस्थित छलाह। सी.एच. भाभा, जे ओहि समय मे अन्तरिम भारत सरकार मे निर्माण, खनन ओ ऊर्जा सदस्य छलाह, कोसी योजनाक एकटा प्रारूप प्रस्तुत कयल। एहि योजना मे चतरा घाटी मे बराह क्षेत्रक पास 750 फुट ऊंच 1,10,00,000 एकड़ फुट जलसंचय क्षमतावाला कंक्रीट बांध, 1200 मेगावाटक एकटा बिजली संयत्र तथा नेपाल ओ मिथिला मे 30,00,000 एकड़ जमीन मे सिंचाइक प्रावधान, सिंचाइक लेल चतराक ठीक नीचा ओ भारत नेपाल सीमा पर एक बराजक प्रस्ताव, 100 करोड़क लागत एवं 10 वर्ष मे योजना पूरा हेबाक अवधि तय कयल गेल। 1947 स' 1951 तक मात्र एहि पर चर्चा होइत रहल। परियोजनाक लागत 100 करोड़ स' 177 करोड़ रुपया भ' गेल। एकर बाद बेलका जलाशय परियोजनाक प्रारूप आयल। ओहू पर काज नहि भेल।

गुलजारी लाल नन्दा 14 दिसम्बर 1953 मे संसद मे कोसी योजनाक प्रारूप प्रस्तुत कयलनि। एहि योजना मे निम्न कार्य निर्धारित छल :

1. नेपाल मे हनुमान नगर स' 3 मील उत्तर 3770 फीट लम्बा एकटा बराज, जकर पूर्वी छोर पर 6200 फुट लम्बा तथा पश्चिमी छोर पर 12,500 फीट लम्बा मांटिक बांध बना कय क्रमश: पूर्वी ओ पश्चिमी उभार बांध स' जोडबाक प्रस्ताव। उभार बांधक लम्बाइ 8 मील अनुमानित। योजनाक एहि अंशक लागत 13.27 करोड़ रुपया।

2. कोसी नदीक धारा कें सीमाबद्ध करबाक लेल बराजक नीचा दुनू कछेड़ पर बाढ़ि सुरक्षा तटबंधक निर्माण। पश्चिमी तटबंध पर भारदा स' भन्थी तक 75.5 मील तथा पूर्वी तट पर भीमनगर स' बनगाम तक 62 मील लम्बा तटबंध। निर्मली ओ महादेव मठ गामक सुरक्षाक लेल चारु दिस रिंग बांध। बलान ओ तिलयुगा पर सुरक्षा तटबंध। लागत 10.67 करोड़ रुपया।

3. सहरसा तथा पूर्णिया जिलाक 14 लाख एकड़ भूमि मे पूर्वी कोसी नहर प्रणाली द्वारा सिंचाइक सुविधा। लागत 13.37 करोड़ रुपया। एहि तरहें मुख्य कार्यक लागत 37.31 करोड़ रुपया प्रस्तावित भेल। नेपाल मे चतरा नहर स' 1.8 लाख एकड़ भूमिक सिंचाइ व्यवस्था नेपाल पर छोरि देल गेल। एकर अनुमानित लागत 3 करोड़ रुपया आंकल गेल। विद्युत उत्पादनक प्रावधान मूल योजना मे शामिल नहि कयल गेल। कोसी समस्याक दीर्घकालिक समाधान अनिश्चिते रहल। अभियंता लोकनिक बीच मतभेद रहल। 1953क अपूर्ण योजना पर 14 जनवरी 1955 कें बिहारक तत्कालीन मुख्यमंत्री श्रीकृष्ण सिंह भुतहा (निर्मली) गाम मे एकछिट्टा मांटि राखि क' पश्चिमी कोसी तटबंधक निर्माणक शुभारम्भ कयलनि। पूर्वी तट पर वैरिया (सुपौल) गाम मे 3 फरवरी 1955 स' काज शुरू भेल। सब स' पहिने लोहा, सीमेंट, पाथर आदि समानक ढुलाइक लेल पूर्णियाक बथनाहा स' बीरपुर ओ भीमनगर तक छोटकी रेलक 27 मील लम्बा पटरी बिछाएल गेल आ बथनाहा स' ट्रक चलय योग्य 76 मील लम्बा पक्की सड़क तैयार कयल गेल जे बलुआ, भवानीपुर, बीरपुर, भीमनगर, चतरा एवं धरान तक चलि गेलैक। नेपालक तत्कालीन

महाराज महेन्द्र 30 अप्रैल 1959 कें बराजक नींव देलनि जाहि मे भारतक तत्कालीन प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू उपस्थित छलाह। बराजक काज 1963 मे पूरा भ' गेल। बराज स' कोसीक धार कें बहएवाक विधिवत् उद्घाटन 24 अप्रैल 1965 मे नेपालक महाराज महेन्द्रक हाथे सम्पन्न भेल तथा भारतक तत्कालीन प्रधानमंत्री लालबहादुर शास्त्री एहि आयोजन मे उपस्थित छलाह। कोसी बराजक लागत व्यय 23.62 करोड़ रुपया, जलागार 23858 स्क्वायर मील भूमिक जल समेटैत छैक, एकर विस्तार 16 वर्ग मील मे छैक, 9,50,000 घनफुट जल-निस्सरणक योग्य बराज मे 56 जलद्वार बनायल गेल छैक जाहि मे 46टा विवर द्वार 60 × 21 फीट आ 10टा विवर द्वार 60 × 26 फीट व्यासक छैक। बराजक सेतु 3770 फीट लम्बा तथा पश्चिम मे जे मांटिक बांध अछि ओकर लम्बाइ 12,200 फीट अछि। पश्चिमबला मांटिक बांध पर पक्की सड़क बनल अछि जे भारदा कें तटबंध स' जोड़ैत अछि तथा पश्चिम स' पूब दिस बराजक उपर स' भीमनगर तथा बीरपुर जाइत छैक। दुनू दिस मांटिक बांध स' बराजक लम्बाइ 4 मील तथा नदीक धरातल स' बराजक उपर पक्की सड़कक ऊंचाइ छैक 225 फीट। बराजक सड़क 22.6 फुट चौड़ा एवं एक दिस पैदल चलबाक हेतु 4.9 फीट पक्का मार्ग छैक। बांधक शीर्षतल 260 फीट ऊंच ओ सेतु मार्गक उपर लोहाक बीमक ऊंचाइ 294 फीट छैक। बराजक पूर्वी छोर पर नियंत्रण-गृह अछि जे बराज ओ नहरक जल कें नियंत्रित करैछ। बराजक निर्माण मे 1.51 लाख टन कोयला 3,61,000 टन सीमेंट एवं 32,000 टन लोहा लागल छैक।

कोसीक पूर्वी नहर सातटा जल-विवर द्वार बहाएल गेल अछि आ प्रत्येक विवर द्वार 40 फीट चौड़ा छैक। ई नहर अपन उद्गम स्थान पर 360 फीट चौड़ा अछि। पूर्वी मुख्य नहरक लम्बाइ 27 मील छैक आ पांचटा पैघ शाखा नहर निकालत गेल अछि। सब नहरक कुल लम्बाइ 1888 मील लम्बा होयत। मुख्य नहरक सातो जल-द्वारक क्षमता प्रतिक्षण 17,250 घनफीट जल निकालबाक छैक तथा 18.35 लाख एकड़ भूमिक सिंचाइक सामर्थ्य छैक। नहर पर कुल लागत 21.07 करोड़ रुपया भेल छलैक। हनुमान नगर बराजक बामा छोर स' लगभग 16 किमी दक्षिण पूब दिशा मे चललाक बाद ई नहर पूर्णिया-जोगबनी रेल लाइन कें पार कय परमाने नदी मे मिलिकय समाप्त भ' जाइत अछि। पांचटा शाखा नहर – मुरलीगंज, जानकी नगर, पूर्णिया, अररिया तथा राजापुर - निकालल गेल छैक। राजापुर नहर मूल नहर परियोजना मे नहि छल जकर समायोजन तृतीय पंचवर्षीय योजना मे कयल गेल। राजापुर नहर स' चारिटा उपशाखा नहर – मधेपुरा (80.25 किमी लम्बा), गम्हरिया (77.36 किमी लम्बा), सहरसा (89.78 किमी लम्बा) ओ सुपौल (79.40 किमी) निकालल गेल।

चतरा नहर

कोसीक चतरा नहर नेपाल मे मोरंग ओ सप्तरी जिलाक भूमिक सिंचाइक लेल भारत

द्वारा बनाकय नेपाल कें समर्पित कयल गेल अछि। कुल समादेश क्षेत्र 2,70,248 एकड़ तथा कृषिगत क्षेत्र 1,84,163 एकड़ क्षेत्र मे अछि। एहि नहरक लागत 3 करोड़ रुपया आंकल गेल छल जे 7 सितम्बर 1970 कें पूरा भेल आ लागत बढ़ि कय 15 करोड़ रुपया भ' गेल। द्विपक्षीय करारक अनुसार चतरा नहर प्रणाली नेपालक कें सौंपि देल गेल। मुख्य नहर स' 14टा वितरणी जकर कुल लम्बाइ 277 किमी तथा छोट-पैघ 540 संरचना अछि। 35टा छोट वितरणी सेहो निकालल गेल छैक जकर लम्बाइ 145 किमी आ 287टा संरचना बनल छैक। चतरा नहरक आधुनिकीकरण चीनी विशेषज्ञ द्वारा करायल गेल छैक।

पश्चिमी तटबंध

कोसीक उच्छृंखलता कें नियंत्रित करबाक हेतु 1955 मे पश्चिमी ओ पूर्वी तटबंधक निर्माण काज शुरू कयल गेल तथा 1959 तक दुनू दिस 75-75 मील लम्बा मांटिक तटबंध बनिकय तैयार भ' गेल। तटबंधक निर्माण मे भारत सेवक समाज तथा ग्राम पंचायत श्रमदानक सहयोग कयने अछि। दक्षिणी छोर पर पश्चिमी तटबंध कें 2.5 मील आ पूर्वी तटबंध कें 16 मील बढ़ायल गेल। दुनू तटबंधक दूरी 3 मील स' 10 मील तक अछि। पश्चिमी तटबंध बराजक पश्चिमी कछेड़ पर स्थित भारदा स' आरम्भ होइछ। एतय स' पश्चिमी तटबंध दक्षिण दिशा मे कुशहा ओ डलवा होइत कुनौली अबैत अछि। कुनौलीक दक्षिण कमलपुर तथा हरपुर गाम अबैत अछि आ नैऋत्य कोण मे झुकि कय डगमारा होइत नरेन्द्रपुर गाम पहुंचैत छैक। एतय स' धरहरा अबैत छैक जतय पोहरा तटबंध बनायल गेल छैक जे महादेव मठ रिंग बांध नाम स' प्रसिद्ध अछि। तटबंध 32.6 किमीक दूरी पर पांचो नदी तटबंधक भीतर प्रवेश कय तिलयुगा स' संगम करैत अछि। संगमक बामा मे माहुर आ दहिना मे लोकही अछि। पुन: तटबंध 42म किमी पर भुतहाक पास भुतही नदीक पूर्वी धार मे प्रवेश कय जाइछ आ निर्मलीक उत्तर पिपराहीक पास तिलयुगा स' संगम करैत छथि। निर्मलीक नैऋत्य कोण मे घोघड़डीहा रेलवे स्टेशन अछि। निर्मली स' घोघड़डीहा स्टेशन तक (किशनपट्टी गाम तक) तटबंध नहि अछि। रेलवे लाइन तटबंधक काज कय रहल छैक। तटबंध किशनपट्टी स' 10 किमी चलि कय तड्डीहा पहुंचैत अछि जतय भुतही बलान आ बलानक सम्मिलित धारा कोसी स' संगम करैत छथि। तड्डीहा स' तटबंध भलुआही ओ कुसमौल गामक पूब स' भरौनाक पश्चिम स' मधेपुर थाना आबि जाइछ। एहि स' पहिने भीठ भगवानपुर ओ भेजा गाम छैक। 54.3 किमी पर तटबंधक पास कमला-बलान कोसी स' संगम करैत छथि। तटबंध भारदा स' घोघेपुर तक आ नीचा मे निर्मली स' घोघड़डीहा तक रेलवे लाइन कें सम्मिलित कयला पर 77.5 किमी लम्बा छैक। बराज स' आरम्भ कय कें पश्चिमी तटबंध कें कमला-जीवछ संगम तक तथा पूर्वी तटबंध मे धेमुरा नदीक संगम तक कोसीक धारा मे सर्वत्र पैघ-पैघ द्वीप तथा बालुक ढेर एवं लगभग 300 गाम बसल छैक जे भयानक

बाढ़ि आ कतेको यातना सहि रहल छैक। किन्तु, जमीन-जायदाद ओ जन्म स्थानक मोह तथा प्रेमक कारण नदीक गर्भ स' बाहर जयबाक हेतु प्रस्तुत नहि छथि।

कोसीक पूर्वी तटबंध

पूर्वी तटबंध भीमनगर स' 91 मील लम्बा कोसीक धेमुरा संगम तक अछि। भपटियाही तटबंधक 32म किमी पर अछि। एतय स' तटबंध सुपौलक पश्चिम मे पहुंचैत छैक जे बराज स' 61 किमी दक्षिण स्थित अछि। 74म किमी पर विजयपुर आ बारा गाम एवं 81म किमी पर तटबंधक भीतर कोसीक परासवना नामक एक प्रसिद्ध भूमिखंड छैक। तटबंधक 83म किमी पर पशतवार ओ नागर गाम अछि। नागरक पश्चिम होइत तटबंध प्रसिद्ध महिषी गामक पश्चिम मे आबि ओतय स' नहरवा होइत मैनगाम एवं कोपरिया लग समाप्त भ' जाइछ। एतहि धेमुरा ओ कोसीक संगम होइत छन्हि। तटबंध मे लगभग 88 पोस्तानुमा ठोकर बांध बनायल गेल छैक जे तटबंधक सुरक्षा मे सहायक छैक। तटबंध कोपरियाक पास मानसी-सहरसा रेल लाइन स' जोड़ि देल गेल छैक एवं एकर विस्तार घोंघेपुर तक सीमित कय देल गेल छैक।

पश्चिमी कोसी नहर

पश्चिमी कोसी नहर स' मुख्यत: मधुबनी ओ दरभंगा जिलाक 5780 वर्ग किमी क्षेत्रफल मे सिंचाइक योजना छैक। समस्तीपुर ओ सहरसा जिलाक किछु भाग सेहो सिंचित होयत। ई नहर कोसीक दहिना तट पर भारदा स' निकलैछ। पहिल 35 किमी नेपाल मे चललाक बाद मधुबनी जिलाक नारी नाम लग भारतीय भूमि मे प्रवेश कय लौकही, पिपराही होइत ई नहर एकमा लग भुतही बलान कें पार कय भकुआ गामक पास कमला कें पार करैत सकरी-जयनगर लाइन कें पार कय कलुआही गाम मे दरभंगा-जयनगर मार्ग कें पार करैत अन्तत: साहरपुर शाखा नहरक रूप मे धौस नदी मे जा कय समाप्त भ' जायत। एहि नहर स' सिंचित क्षेत्र पूब मे कोसी पर बनल पश्चिमी तटबंध, पश्चिम मे धौस तथा दरभंगा बागमती, दक्षिण मे करेह ओ उत्तर मे स्वयं एहि नहर स' सीमाबद्ध अछि। भारत मे लम्बाइ 56.90 किमी आ नेपाल मे 35.13 किमी होयत। एहि योजनाक प्राक्कलित खर्च 1962 मे 13.49 करोड़ रुपया छल जे 1984 मे 373.03 करोड़ रुपया भ' गेल। योजना पूरा भेला पर मधुबनी मे 4,98,020 एकड़, दरभंगा मे 4,00,000 एकड़, समस्तीपुर मे 29,500 एकड़ तथा सहरसा मे 500 एकड़ जमीनक सम्पूर्ण समादेश क्षेत्र तक जल पहुंचायल जा सकत। तीन बेर प्रथम 1957 मे जगजीवन राम, 1962 मे विनोदानन्द झा आ तत्पश्चात् लालबहादुर शास्त्री एहि नहर योजनाक उद्घाटन कयलनि। बिहार सरकार पांचम, छठम आ बाद मे सातम पंचवर्षीय योजना काल मे एहि योजना कें पूरा करबाक आश्वासन देलक। 1982-83, 83-84 आ 84-85 मे क्रमश: 13.99 करोड़, 11.61 करोड़ आ 18 करोड़ रुपया खर्च कयल गेल। एहि योजना कें पूरा करबाक लक्ष्य 1995 निर्धारित कयल गेल। नवम् पंचवर्षीय योजना काल (1997-2002)

मे पूराक करबाक लक्ष्य तय भेल। दशम योजना काल 2007 मे समाप्त होयत मुदा पश्चिमी कोसी नहर योजना एखन तक लसकले अछि।

राज्यक वर्त्तमान राजग सरकार सम्पूर्ण कोसी नहर प्रणालीक पुनर्स्थापना 100 करोड़ रुपयाक लागत स' करबाक योजना बनौलक अछि। परियोजना पूरा तैयार भेला पर नवम्बर मास स' काज प्रारम्भ होयत। 35 वर्ष पुरान कोसी नहर मे सिल्ट जमा होयबाक कारण सिंचाइ कम होइछ। नहरक रूपांकित क्षमता 15000 क्यूसेक स' घटि कय 6500 क्यूसेक भ' गेल छैक। जल विद्युत गृहक उत्पादन क्षमता 19.1 मेगावाट स' घटि कय एक मेगावाट भ' गेल छैक। उम्मीद कयल जा रहल अछि जे समय पर पुनर्स्थापन काज पूरा होयत तथा सिंचाइ ओ जल विद्युतक उत्पादन क्षमता परियोजनाक अनुसार पूरा होयत। 12 अरब स' अधिक रुपया वित्तीय वर्ष 2002-03 ओ 2003-04 मे सिंचाइ योजनाक लेल आवंटित छल। मुदा विभागीय उदासीनताक कारणें निकासी नहि भेल। ओ रुपया बैंक मे पड़ल रहि गेल। विभाग एकर कारण तकनीकी अभियंताक कमी कहलक।

बिजली उत्पादन

कोसी पूर्वी मुख्य नहर मे 13 फीटक प्रपात बनल छैक जकर उपयोग विद्युत उत्पादनक लेल कयल जा रहल अछि। 5000 किलोवाट उत्पादन क्षमताक चारि जेनरेटर लगायल गेल छैक। 20 मेगावाट क्षमताक विद्युत गृह मुख्य नहर मे बनायल गेल छैक। प्रत्येक जेनरेटर 3750 घनसेक प्रवाह क्षमता स' चलैत छैक। एहि विद्युत गृहक निर्माण 1964 मे शुरू कयल गेल आ 1965 मे पूरा कय लेल गेल। 1965 मे पाकिस्तान स' युद्धक कारणें जापन स' आयातित यंत्र मे बाधा उत्पन्न भ' गेल। 1971-72 मे विद्युत उत्पादन शुरू कयल गेल किन्तु लक्ष्य धरि जल विद्युत क्षमता कहियो उत्पादित नहि कयल गेल छैक।

सप्तकोसी परियोजना

त्रिवेणी संगमक पश्चात् कोसी नदी पूर्ण यौवना बनि जाइछ आ अपन नाम महाकोसकी कें सार्थक करैत छथि। चतरा नामक स्थल स' उत्तर 6 मील दूर कोसीक त्रिवेणी संगम अछि। एहि महाकोसीक सम्पूर्ण ग्लेशियर क्षेत्र 2228 वर्ग मील आ वर्षा जल क्षेत्र 23,808 वर्ग मीटर अछि। त्रिवेणी संगम आ चतराक बीच महाकोसीक वाम तट पर कोकामुख आ बराह क्षेत्र अछि। 6 अप्रैल 1947 मे निर्मली मे कोसी पीड़ितक एक सभा मे तत्कालीन योजना मंत्री सी.एच. भाभा बराह क्षेत्र बांधक निर्माणक सार्वजनिक घोषणा कयलनि। 750 फीट ऊंच बांध स' नेपाल आ मिथिलाक 30 लाख एकड़ जमीन कें सिंचित करब एवं 1200 मेगावाट विद्युत उत्पादनक आश्वासन देलनि। एहि योजनाक लागत 100 करोड़ रुपया अनुमानित छल। 1951 मे बराह क्षेत्र बांधक अनुमानित लागत 100 करोड़ स' बढ़ि कय 177 करोड़ रुपया भ' गेल। दिग्गज अभियंता द्वारा रुपांकित बराह क्षेत्र बांध पर कियो आंगुर नहि उठा सकैत छलाह। 5 जून 1951क एस.सी.

मजूमदार, परामर्शी अभियंताक मत सरकार मंगलक। कारण, सरकार एकटा सस्त योजना चाहि रहल छल। भाभाक योजना पोख्ता छल। कोनो विरोध नहि कयल जा सकैत छल। मात्र विद्युत उत्पादनक लक्ष्य 1200 स' 1800 मेगावाट कयल गेल छल। बिजलीक उपयोगिताक प्रश्न उठौलनि। कारण एतेक बिजली आपूर्तिक कोनो आवश्यकता ओहि समय मे नहि छल। तहिया स' एखन तक एहि योजना कें विवादास्पद बना देल गेल छैक। एहि क्षेत्र मे बाढ़ि, सिंचाइ आ बिजली आपूर्तिक लेल बाध्य भ' कय बराह क्षेत्र मे सप्तकोसी योजनाक स्वीकृति सरकार कें करय परलैक। 22 अगस्त 2003 मे केन्द्रीय जल संसाधन मंत्री भारतीय संसद मे घोषणा कयलनि जे उत्तर बिहारक बाढ़िक स्थायी समाधानक हेतु कोसी नदी पर एकटा ऊंच बांध निर्माणक लेल नेपाल सरकारक संग एक बहुउद्देशीय परियोजना – सप्त कोसी डैम परियोजना शुरू कयल गेल अछि। एहि हेतु संयुक्त परियोजना कार्यालय विराटनगर आ काठमांडू मे रहत। कुल 142 अधिकारी कार्य करताह, जाहि मे 100 बिहार स' 42 अधिकारी नेपाल स'। एहि प्रस्तावित परियोजना मे 24600 करोड़ रुपया लागतक अनुमान छैक। 1947 मे एहि परियोजनाक लेल मात्र 100 करोड़ रुपया खर्चक अनुमान छल। 25 करोड़ रुपयाक लागत स' बराहक्षेत्र बहुउद्देशीय परियोजनाक प्रारूप तैयार कयल जा रहल अछि।

कोसीक छाड़नि धार

कोसी नदी अपन हजार वर्षक जीवनकाल मे पश्चिम मे तिलयुगा नदी स' आरम्भ कय पूब मे पूर्णियाक सउरा धार तक तथा गंगाक दिस अपन नीचा भाग मे, पश्चिम मे गोगरी, महेशखूंट स' आरम्भ कय कें पूब मे मालदह तथा पद्मा नदी तक अनेक बेर हिललि-डोललि अछि। हिनक छाड़नि धार मे बैती, धेमुरा, तिलाबे, चिलौनी, सुरसर, हइया, लच्छा आदि नदी प्रसिद्ध अछि। बहुत पहिले कोसी जखन भीमनगर अबैत छलीह बैती आ धेमुराक धारा स' मिलि कय दक्षिण दिस बहैत छलीह। बाद मे कोसी पूब दिशा मे हटि गेलीह तखन बैती आ धेमुराक धारा अवशेषक रूप मे रहि गेल। कोसीक मुख्य धारा कटि गेलीह। हिनक नाम बैती आ धेमुरा भ' गेलनि। पश्चिम धारा बैती ओ पूब दिस वाली धारा धेमुरा। धेमुरा भपटियाही होइत सुपौल कें दूटा धारा स' घेरैत छथि। सुपौल नगरक दक्षिण कर्णपुर गामक पास पुरइन धार अलग होइछ। अपन उद्गम स्थान स' पुरइन धार दक्षिण चलि कय सुखपुर, कासिमपुर तथा पंडुहा गाम अबैत छथि। एतय स' नौहट्टा पहुंचैत छथि। नौहट्टा मानसी-सुपौल रेलपथ पर पचगछिया स्टेशन स' सात मील पश्चिम अछि ओ पुरइनक पूर्वी तट पर स्थित अछि। नौहट्टा स' चलि कय महिषी पहुंचैत छथि। एतय स' नहरथा गाम आबि कय पुरइन धेमुरा मे मिल जाइछ। झिटकी आ बनगाम एतहि अछि। तिलाववह ओ परवाने नामक नदीक उद्गम स्थान एकहि अछि। कोसी भीमनगर स' दक्षिण चलि कय शिवनगर आबि दू धारा मे बहय लगैत छथि। पूर्वी धार स' वैवाह (धसान) ओ चिलौनी नदी बनैत छैक तथा पश्चिमी धार स' चारि

सरिता परवाने, तिलावह, बरहरी ओ सोनेह बनैत अछि। पश्चिमी प्रवाह शिवनगर स' दक्षिण चलि कय रतनपुर बैसी गाम आबि कय नैऋत्य कोण मे झुकि कय दू धारा -पश्चिम धार तिलावह ओ पूब धार परवाने बनि जाइत छैक। तिलावह सुपौल स' सिंहेश्वर स्थान मार्ग स' बहैत सोनबरसा कचहरी रेलवे स्टेशन होइत रामपुर गाम मे अबैत छथि, जे सिमरी-बख्तियारपुर स' पांच मील उत्तर मे अछि। एतहि एकटा छोट नदी सोनेह हिनका मे प्रवेश करैत अछि तथा लगमापट्टी गाम आबि कय अपन भगिनि नदी परवाने स' संगम कय चौथम थाना मे पहुंचि कय कोसी स' संगम करैत छथि। एतय पहिने घघरी नदी संगम करैत छलीह।

सोनेह एकटा छोट नदी परवाने नदीक टूटल धार छथि। सिंहेश्वर स्थानक नैऋत्य कोण मे स्थित दलदली चौर स' प्रवाहित होइत छथि। ई नदी अपन प्रवाह मे सहरसा-पूर्णिया रेल लाइनक नीचा तथा सहरसा-मधेपुरा सड़क हिनका ऊपर स' पार करैत छन्हि आ आगू बढ़ि कय सौरबाजार आबि जाइत छथि। एतय स' सोनेह दक्षिण बढ़ैत छथि आ हिनक बाम तट पर कचरदाऊं तथा दहिन तट पर भवानीपुर गाम अबैत अछि। भवानीपुर स' सोनेह दक्षिण दिशा मे चलि कय नैऋत्य मे मुड़िकय तिलावह नदी मे प्रवेश कय जाइत छथि। परवाने या पंहुआ या पितवाहा भीमनगर स' दक्षिण शिवनगर गाम मे कोसी कें दू भाग मे बांटैत छलीह। एहि मे पश्चिमी धार रतनपुर बैसी लग पुनः दू भाग मे विभक्त होइत छैक जाहि मे पूर्वी धारक नाम परवाने छैक। परवाने सहरसा जिलाक प्रसिद्ध नदी एवं 1922 तक परवाने ओ तिलावह कोसीक प्रवाह स' मिलि कय बहैत छलीह। परवाने बिशनपुर-दौलतपुर होइत राघोपुर पहुंचि कय धरहरा गाम स' पूब चलैत छथि। एतय एकटा पैघ किलाक भग्नावशेष अछि जे कर्णक किला स' विख्यात अछि। एतय स' पिपराही, औराही, रुपौली गाम होइत रामपट्टी गाम पहुंचैत छथि जतय बरहरी ओ वैवाह नामक धारा मिल जाइछ। पिपरा गाम लग दलदली चौर स' बरहरीक एकटा धारा प्रवाहित होइछ जे परवानेक उपधारा कहल जाइछ। परवाने बरहरी ओ वैवाहक जल भंडार ग्रहण कय सिंहेश्वर स्थान पहुंचैत छथि। किंवदंती अछि जे पांचो पाण्डव अपन तीर्थयात्रा मे एतय आयल छलाह। कारण एतयक शिवलिंग स्वयं विष्णु द्वारा स्थापित कयल गेल छल। सिंहेश्वर स' परवाने दक्षिण दिस चलि कय अपन पूब भाग मे बहैत चिलौनी नदीक पास स' मधेपुरा नगरक पश्चिम-उत्तर कोण मे बहैत चिलौनीक धार स' मिल जाइत छथि। चिलौनी नदीक उद्‌गम वैह अछि जतय स' परवाने ओ तिलावह निकलैत छथि। कोसी शिवनगर मे आबि कय दू भाग मे बंटि जाइत छथि। पूर्वी धार शिवनगर स' चलि कय बैसी गाम स' बलुआ होइत त्रिवेणीगंज पहुंचैत छथि। एतय स' चिलौनी कुसहाक दक्षिण एकटा चौर मे अबैत छथि ओतय स' सिंहेश्वर स्थान होइत मधेपुरा नगरक पूर्वी भाग स' दक्षिण मे अबैत छथि। जतय परवाने स' मिलि कय एकटा पैघ टापू बनबैत छथि। एतय स' लगमापट्टी तथा भटौनीक पास तिलावह, सोनहे ओ परवानेक संयुक्त धार स' चिलौनी संगम करैत छथि। एकटा धार सिमरी बख्तियारपुर थाना मे घुमि चौथम थानाक मिलनमवां गाम तथा तिलावह ओ चौरधमारा धार स' मिल दु मील अग्निकोण मे चलि कय पहिने घघरी स' मिलैत छलीह जे आब कोसीक महाधार मे मिल जाइत छथि।

सुरसर-धार, कोसीक छाड़नि धार नेपालक दक्षिणी तराइ भाग स' बहैत सिरिपुर तथा निर्मली गाम अबैत छथि। निर्मली स' साढ़े तीन मील बलुआ पर लखनिया गाम अबैत छथि। ओतय स' भवानीपुर होइत लालगंज तकर बाद लखवा मैदान मे चलि कय छातापुरक पश्चिम भाग स' दक्षिण दिस दौड़ैत लक्ष्मीपुर तथा खूंटी गाम आबि जाइत छथि। एतय स' सुरसर धार नैऋत्य कोण मे चलि कय गौरिया एवं पिपराही कें मिलौने लछमनिया (पोसर गाम) पहुंचैत छथि। एतय स' बढ़ला पर दुटा भाग मे बँटि कय एकटा द्वीप बनबैत सिरिपुर गाम अबैत छथि। एतय एकटा पैघ जलाशय अछि जे पोखरतीर पोखरि नाम स' सेहो जानल जाइछ। सुरसर धार आगू बढ़ैत मुरलीगंजक पश्चिम मे स्थित रामपुर मे लोरम धार कें विलग कय कें सुरसरधार लोरमक समानान्तर थोड़ेक नैऋत्य कोण मे झुकैत दक्षिण चलिकय बसबारी गाम पहुंचैत छथि जे बीहपुर स' मधेपुरा जयबाक मार्ग पर अवस्थित अछि। एतय एहि धारक नाम धरही कहल जाइछ। किसनगंज थानाक अकरवा गामक निकट स' निकलि कय आलमनगर थाना आबि किछु दूर आगू बढ़ला पर सहरसा जिलाक दक्षिण सीमा पर कोसीक धारा मे समा जाइत छथि जतय पहिने घघरो नदी मिलैत छलीह। हइया या हहाधार जखन वीरपुर लग कोसी चलिकय पूर्णिया मे प्रवेश करैत छलीह, जकर अवशेष यत्र-तत्र देखल जा सकैछ। ऐह स्रोत एकर धाड़नि नाम स' जानल जाइछ। एकरा दाउस नदी सेहो कहल जाइत छल। ई दाउस धार अचरा ओ हनुमाननगरक दक्षिण स' चलिकय नरपतगंज अबैत छल तथा नाथपुर गामक पश्चिम होइत बरहराक पश्चिम पहुंचैत छल। आगू बढ़ैत एकटा नदीक रूप लय कय महाधार रायपुर गाम आबि जाइत छलीह। रायपुर स' दक्षिण एकटा छोट द्वीप बनबैत छलीह। हहाक दहिन तटक नाम बलुआ धार छल। एहि धारक क्षेत्र पूर्णियाक दक्षिण-पश्चिम कोण मे छैक जकर दक्षिण आइ महाकोसीक धार बहि रहल अछि। कोदई नदी जानकी नगरक उत्तर स्थित दलदली चौर स' निकलैत छलीह जे पहिने कोसीक महाधारक झील छल। कोदईक दुटा धारा बनमनखी-बिहारीगंज रेल लाइन कें भटोहर रेलवे स्टेशन तथा बरहरी गामक पश्चिम स' बहैत रेल लाइन कें पार कय हनुमाननगर - चकिया गाम मे अबैत छलीह। एतय स' चारि मील दक्षिण चलिकय कोदइ हहाधार मे मिल जाइत छलीह। गुलेला या नागर धार नवाबगंजक उत्तरी भाग मे स्थित एक दलदली चौर स' निकलि कय धमदाहाक दक्षिण हिरन नामक नदी स' मिलैत छलीह। किन्तु कोसीक प्रमुख प्रवाह जखन पश्चिम दिस खिसकि गेलन्हि तकर बाद स' हिरन, नागर कें धो-पोछिकय कोदई, हहा, गुलेला धाराक रूप मे नव निर्माण भेल।

सबहक नाम मिट गेल, गुलेला धाराक नाम स' ख्यात प्राप्त कयल। किछु दूर चलला पर धमदाहाक अग्निकोण मे लच्छाधार वाली कोसी स' मिल गेलीह। कोसी प्रवाहक लच्छाधार आब पूर्णिया जिलाक लेल उपजाऊ बनि गेल छैक। मुदा अवशिष्ट यत्र-तत्र देखल जा सकैछ। लच्छाधार फतेहपुर स' अग्निकोण मे चलि कय सात मील पर सिमरबनी गाम अबैत छलीह। हिनका एतय बूढ़ी कोसी कहल जाइत छल। सिमरबनी मे लच्छाधार नरपतगंज थानाक सीमा स' निकलि कय रानीगंज थाना मे प्रवेश करैत छलीह। आगू चलि कय लच्छाधार अररियाक सीमा पर अयला पर दूटा टूटल-फुटल-इरनधार ओ अइनिया धार-उपशाखा स' संगम करैत छैक। ई दुनू धार रानीगंज स' दस मील दूर नैऋत्य कोण मे खजुरी गामक उत्तर भाग मे स्थित एक दलदली चौर स' निकलैत छलीह। इरनधार सकेला एवं परसाहाट स' होइत लच्छाधार स' संगम करैत छलीह। अइनिया खजुरी, बिसरियापट्टी, लक्ष्मीपुर ओ बरयोत्तरा होइत रसाढ़ आबि कय पूर्वाभिमुखी भ' लच्छाधार स' मिल जाइत छल। फैरनी कजला, कमताहा नाम स' सेहो ई जानल जाइत छलीह। फैरनी फारबिसगंज स' चलिकय रानीगंज पहुंच जाइत छथि। काला बलुआ स' डेढ़ मील पश्चिम स' बहैत फैरनी धार अररिया आबि कय धरहरा थाना मे आबि कय दक्षिण दिस चलिकय लच्छाधारक संगम पर पहुंचैत छथि। ओतय स' धमदाहा थाना अबैत छथि। लबरी धार सरसी स्टेशनक पश्चिम स्थित चौर स' प्रवाहित होइत धमदाहा थानाक सीमा मे प्रवेश करैत आगू बढ़ि जाइत छथि। एतय स' लबरी धार निसुंदराक दक्षिण तथा फल्का बाजार स' अग्निकोण मे अपन धारा बहबैत मोहम्मदनगर गाम ओ भोनजान गाम पहुंचि जाइत छथि। एतय स' बरारी अबैत छथि जतय काढ़ागोला रेलवे स्टेशन अछि। बरारीक पश्चिम जखन नैऋत्य कोण मे मुड़ि जाइत छथि। एतय लबरी नाम छोरि कय बरहण्डी भ' जाइत छथि। संतोखपुरक सटले पश्चिम कटिहार रेल लाइन कें पार कय काढ़ागोला घाट आबि कय कोसी गंगा संगम मे समाहित भ' जाइत छथि। काली कोसीक उद्गम स्थान सैफगंजक दक्षिण स्थित लक्ष्मीपुर गामक चौर मे अछि। ई स्थान फारबिसगंज स' 11 मील दक्षिण, अररिया स' 15 मील पश्चिमोत्तर कोण मे, रानीगंज स' 7 मील उत्तर मे ओ गंजबाग स' दू मील पूब मे स्थित छैक। काली कोसी बूढ़ी कोसीक धारक संग मिलि कय बधुआ देवीगंज होइत सिमरबनीक पश्चिम पहुंचैत छथि। ओतय स' जगता गामक उत्तर फैरनी धार स' मिलैत छथि। रानीगंजक पश्चिम फैरनी धार बहैत छथि। चम्पानगर स' काली कोसी दक्षिण दिस निकलि कय मोगलाहा होइत रामपुर गामक पूब मे पहुंचैत छथि। सउरा धारक जे शाखा चम्पानगरक खत्ता (गंहीर झील) मे खसैत छल कालक्रम मे दक्षिण मुड़िकय रामपुरक पूब काली कोसी मिलैत छल। आब लुप्त भ' चुकल अछि। मात्र धारक चेन्ह देखय मे आयत। रामपुर स' अग्निकोण मे चलि कय काली कोसी क्रित्यानन्द रेल स्टेशनक पास आबिकय हिनक दोसर धारा रउतारा रेलवे स्टेशनक पास

सउरा धार स' संयुक्त भ' जाइत छलीह। ई स्टेशन कटिहार ओ पूर्णियाक बीच मे अछि। आब एहि धाराक चिन्ह मेटा गेल छैक। काली कोसीक एक खंडहर पूर्णिया नगरक उत्तर मे देखय मे अबैत अछि।

सउरा धार एखनो देखय मे अबैत अछि। कोसीक ई धार पूर्णिया जिलाक पश्चिमोत्तर कोण मे स्थित देबीगंजक पश्चिम चलि कय फरहीक दक्षिण आबि कय तामगंज लग स' अग्निकोण मे कजरा धार कें समेटिकय गंजबागक उत्तर मे अबैत छलीह। जिरवा गामक दक्षिण मे कोसीक एहि सउरा धार स' कालान्तर मे दुलारदेई नदीक उद्गम भेल छल। ई सउरा धार जिरवा स' पूब बढ़ि कय शंकरपुर तथा हिंगना गामक पास अग्निकोण मे मुड़ैत छलीह जतय एकर उद्गम चिन्ह देखय मे अबैत छैक। ई अररिया स' 9 मील पश्चिम छैक। आगू बढ़ि कय ई नदी गढ़बनैली होइत कसबा पहुंचैत छलीह। हिनका बूढ़ी कोसी सेहो कहल जाइत छल। बूढ़ी कोसीक पूर्वी धार जकरा कमलेश्वरी कहल जाइत छल पूर्णियाक पूब मे स्थित विश्वासपुर स' सोझे दक्षिण चलिकय एकटा सोता एहि मे आबि कय मिल जाइत छल जे पनार नदीक विछिन्न स्रोत प्रतीत होइत छल। कटिहार कमलेश्वरी धारक दहिन ओ खैरा गामक बाम मे अछि। कमलेश्वरी कटिहार बारसोई रेलवे लाइनक नीचा स' बहैत छलीह। कोसीक पूब भागक अन्तिम धारा बूढ़ी कोसी छथि जाहि स' लबरी, काली कोसी, दुलारदेई, सउरा आदि धारा बनैत छल। दुलारदेई परित्यक्ता नदी छथि जे जिरवाक पास स' दलदली स' निकलैत छलीह। पूर्णियाक प्रसिद्ध गुलाबबाग मेला एहि सउरा धारक बाम मे लगैत अछि। जे गंगा-आसाम राष्ट्रीय राजपथ पर स्थित अछि। सउरा आगू बढ़िकय रानीपतरा स' आगा बढ़ि कय कुम्हरा गामक पास काली कोसी स' संगम करैत छथि। काली कोसी अग्निकोण दिस उन्मुख भय बरौनी-कटिहार लाइन कें लांघि कय ओकर दक्षिण मे तिनपनिया नदी कें आत्मसात कय लैत छथि। तिनपनिया काली कोसीक उपशाखा छलीह। एकर बाद कानी कोसी साहेबगंजक पश्चिम स' दक्षिण चलि कय भरगंगाक धारा मे मिल जाइछ जे काढ़ागेलाक उत्तर पूब भाग मे अछि। कोसी अपन धार कें परिवर्तन करैत रहलीह एवं हुनक कतेको मृतप्राय धाराक उल्लेख स' प्रमाणित होइछ जे पूब मे मालदह तथा पद्मानदी तक जाइत-अबैत रहलीह। विश्वक सर्वोच्च हिम-पर्वतक चारूकातक जल कें समेटबाक सौभाग्य कोसीक अतिरिक्त कोनो नदी कें नहि छन्हि। हिमालयक आंगन स' जतेक अधिक मात्रा मे बालू ओ माटि कें बहाकय मिथिलाक भूमि कें भरैत छथि विश्वक कोनो नदी एतेक बालू-माटि के आनि कय पृथ्वीक निर्माण मे सहायक नहि भेल छथि। पश्चिम मे तिलयुगा नदीक क्षेत्र स' आरम्भ कय बूढ़ी कोसी ओ सउरा धार तक 75 मील धरि हिनक साम्राज्य छन्हि। ■

पनार

पनारक उद्‌गम स्थान वराह क्षेत्रक पूब नेपालक सुनसरी जिला मे अछि। एतय स' दक्षिण चलिकय पूर्णिया जिलाक जोगबनीक पश्चिम मे प्रवेश कय ई अग्निकोण मे चलैत सोनपुराक उत्तर मे पूब दिस मुड़ि जाइत छथि। पनार अलग-अलग क्षेत्र मे विभिन्न नाम स' जानल जाइत छथि। परमान, परमौ, कदवा, रीगा, कंकर, फुलहर ओ गंगाजुरी। जोगबनी स्टेशन लग महेश्वरी स्रोत कें ग्रहण कय डुमरिया ओ पिपरा गाम अबैत छथि। पिपरा मे दूटा धारा भ' जाइत छन्हि। आठ मील अग्निकोण मे चलला पर अमराहा गाम स' पूब मिल जाइत छथि। नदीक दहिना भुजा पिपरा स' अढ़ाई मील बढ़ला पर सोंता नदी एहि मे खसैत छथि। जे जोगबनी रेलवे स्टेशनक पूब भाग मे पूर्णिया मे प्रवेश कय अग्निकोण मे बढ़ैत छथि। एतय परमान नाम स' जानल जाइत छथि। अमराहा गाम स' पनार अग्निकोण मे बढ़ि कय बलुआ गाम अबैत छथि जतय रेजई तथा बहेलिया नामक दूटा छोट नदी पनार मे खसैत अछि जे नेपालक तराइ स' अबैत अछि। रेजई आगू बढ़ि कय फारबिसगंज थाना मे घुसि कय परासी गाम होइत पकरी अबैत अछि जतय बहेलिया स' संगम होइत अछि। बहेलिया मधुबनी गाम (पूर्णिया) लग दू धारा मे बटि कय पूर्णिया जिला मे प्रवेश कय वीरवन गामक पूब मिलि कय रेजई ओ बहेलियाक धार अढ़ाई मील चलि कय पनार मे प्रवेश कय जाइत छथि। पनार नदी सोत्ता, रेजई ओ बहेलियाक जलग्रहण कय महिसकोल गाम, अररिया स' 5 मील उत्तर अबैत अछि। एहिठाम बकरा नदीक पुरान धार पनार स' संगम करैत अछि। संगमक ऊपरी भाग मे पनार, परमान आ बकराक संगमक बाद कदवा नाम स' जानल जाइत छथि।

महिसकोलक बाद पनार नदी सोझे दक्षिण मे चलैत बंसवारी गाम पहुंचैत छथि जतय फारबिसगंज स' अग्निकोण मे चलि कय ओररिया गाम (अररिया स' तीन मील दूर) पहुंचय वला मार्ग कें पार कय अररिया स्थित जेल तथा अस्पतालक पूब स' सूरजपुर गाम पहुंचैत छथि। एतय स' पनार दहिन झुकि कय अग्निकोण मे बहैत बेलवा आबि मल्हरिया ओ चैनपुर पहुंचैत छथि। एतहि पूर्णिया स' कसबा जायवला सड़क पनार कें पार करैत अछि। पनार आगू बढ़ि कय अररिया अनुमंडल कें पार कय पूर्णिया सदर अनुमंडल मे प्रवेश करैत छथि। एतय दूटा धार मे बटैत छथि। पूर्वी धार बकरा स' मिल कय कतुवा धारक नाम स' जानल जाइत अछि। एकर बाद फियाला नाम होइत छन्हि। थोड़ेक दूर आगू बढ़ला पर दूटा धार बनैत छैक जाहि मे पूर्वी धार अमौरक पास कंकई स' मिलि कय महानन्दा मे जाकय खसैत अछि। पश्चिमी धार देवनी कहल जाइछ। पनारक पश्चिमी ओ मुख्य धार कसबा थाना मे प्रथम दू मील बहि कय अग्निकोण मे मुड़ि कय बरसौली गाम पहुंचि कय बेलगाछी अबैत छथि जतय पनार पूर्णिया स' आसाम जायबला राष्ट्रीय उच्चपथ कें पार करैत छथि। पनार आगू बढ़ैत छथि। कसबा स' पूर्णिया जायवला सड़क चांदपुरहाट होइत जाइत छैक जे पनारक दहिना कछेड़ स' होइत पश्चिमोत्तर कोण मे चलैत छथि जतय ई रोगा नाम स' जानल जाइत छथि। एतय स' रोगा नदी कदवा अबैत छथि। एतय स' आगू बढ़ि कय पनार नदी पूर्णिया बारसोई रेल लाइन कें झउवा स्टेशनक पास पार कय कें सोनपुर ओ पंचगाछी पहुंचैत छथि। एहि स' पहिने देवनीधार नामक अपन शाखा कें आत्मसात् कय लैत छथि। सोनपुर ओ पंचगाछीक मध्य स' बहैत पनार अपन एक छाड़नि धार कें ग्रहण कय कन्हरिया गामक पश्चिम स' दक्षिण बहैत आलमपुर ओ आजमनगर पहुंचैत छथि। आजमनगर कटिहार अनुमंडलक एकटा थाना अछि। एतय स' अग्निकोण मे बहैत तथा पांच मील पूर्णिया जिला मे बहि कय मालदहक तुलसीहाट थाना मे प्रवेश करैत छथि। पनार नदीक मुख्यधारा अपन उपशाखा नदीक उद्‌गम स' पलसा पहुंचैत छथि। एतय स' बतासीमल गाम पहुंचि अपन एक छाड़नि धार कें अपन दक्षिण पार्श्व मे धारण करैत छथि जे छाड़नि धार कदवा स' दू मील दूर पर स्थित कुम्हरी स' चलैत अछि। यैह धार दक्षिण चलैत सोनाली स्टेशनक (कटिहार-बारसोई लाइन) नैऋत्य कोण मे रेल लाइन कें पार कय सोनाली-परानपुर मार्गक काते-काते दक्षिण मे चलैत अग्निकोण मे पनार स' मिल जाइछ। परानपुरक पास पनार नदी अपन दक्षिण पार्श्व मे छाड़निधार कें ग्रहण कय पूब दिस मुड़ैत दू मील चलि कय दक्षिणाभिमुख बनि जाइछ जतय इमामनगर गाम अछि। एतय स' पनार कटिहार मालदह रेल लाइन कें गौरीपुरक सटले पश्चिम तथा लेवा नामक स्टेशन डेढ़ मील पूब मे पार करैत छथि। एतय स' लखनपुर अयला पर पनार कमलेश्वरी नदी कें समेट कय फुलहर नदीक नाम स' मालदह जिलाक तुलसीहट्टा थाना मे प्रवेश करैत छथि। यैह फुलहर आगू गंगाजली नाम धारण कय कालिन्दी स' मिलि कय महानन्दा मे खसैत छथि। ■

बकरा

बकरा नदी नेपालक तराइ क्षेत्रक कुआरी गामक पूब भाग स' तथा गंगा नदीक पश्चिम भाग स' निसृत होइत छथि। ई दक्षिण दिस चलैत विराटनगरक पूब भाग स' भारतीय सीमा मे पाया संख्या 51 ओ 52क पास दू धारा मे प्रवेश करैत छथि। पूर्णिया जिलाक सिकटी एवं फारबिसगंज थानाक सीमा संधि पर असुरकलां खोला गामक पास मिथिला मे प्रवेश करैत छथि। असुरकलां खोला जोगबनी स' 12 मील पूब मे अछि। एहि गामक दुनू दिस पश्चिम ओ पूब स' बकरा नदी दू भुजा मे पूर्णिया जिला मे प्रवेश कय दू मील दक्षिण आबि कय परस्पर मिल जाइत छथि। ओतय स' टेराखुर्द गाम आबि कय बकराक धार कें नरपतगंज स' पूब बहादुरगंज मार्ग पार करैत छैक। एतय स' बकरा सोझे दक्षिण चलि कय पूब मे मुड़ि कय पनार स' मिल जाइत छथि। कौआकोह स' बकरा दक्षिण चलि कय बकराक प्रधान धार बेरी नाम स' प्रख्यात भ' जाइत छथि। ई बेलहरी पहुंचैत छथि। बेलहरीक दक्षिण तक ई सिकटी तथा फारबिसगंजक सीमा रेखा बनबैत अररिया थाना मे प्रवेश कय जाइत छथि। ओतय स' 15 मील चलि कय बनघोरा ओ भोखा गाम (पलासी थाना) अबैत छथि जतय रतुआ नदीक उपशाखा कें ग्रहण कय पुनः दक्षिण दिस स' अररिया थाना मे प्रवेश कय पोखरिया तथा बगही गाम होइत तरन पहुंचैत छथि जतय दू भुजा बनैत छन्हि। दहिन भुजा कामत गाम होइत अग्निकोण मे 6 मील चलैत अछि आ बाम झुला बघदहराक दक्षिण आबि कय सम्मिलित भ' जाइत अछि। एतय स' आगू बढ़ला पर हिनक नाम कतुआ भ' जाइत छन्हि। एतय स' 6 मील अग्निकोण मे चलला पर कतुआ पूब दिशा मे मुड़ि कय अररिया अनुमंडल ओ पूर्णिया सदर अनुमंडलक सीमा संधि पर आबि जाइत छथि। ओतय स' कड़िया ओ पचैली अबैत छथि जतय रतुआ नदी स' संगम होइत छन्हि। पचैली लग अररिया अनुमंडल स' निकलि कय अमौर थाना (पूर्णिया) मे प्रवेश करैत छथि। ओतय स' पोठिया गाम दिस बढ़ैत छथि जतय स' डेढ़ मील दक्षिण

मे बकरा पनार स' मिलैत छथि। एतय स' अग्निकोण मे मुड़ि जाइत छथि आ एक मील चलला पर दूभाग मे विभक्त भ' जाइत छथि। बाम धार फियाला नाम स' आ दहिन धार देवकी नाम स' अग्निकोण मे बहय लगैत छथि। फियाला अमौर पहुंचि कय अग्निकोणमुखी होइत बेलगाछीक पूब कंकई धार मे मिल जाइत छथि। एकर बाद तीन मील बहला पर कंकई महानन्दा मे समा जाइत छथि। दहिन धार अमौर स' बैसी थाना मे घुसि जाइत छथि जतय भझुवा गाम मे पुनः दूटा धार भ' जाइत छन्हि। दहिन झुकि कय दक्षिण दिस चलय बला धार दहिन धार स' किछु दूर चलला पर कंकई एकटा उप शाखा मे मिल जाइत अछि। बकराक बाम धार बैसी थाना मे घुसि कय तत्क्षण दू भाग मे बहि कय एकटा पांच मीलक पैघ टापू बनबैत छथि। एहि द्वीपक मध्य स' राष्ट्रीय उच्च पथ पूर्णिया स' किशनगंज जाइत अछि। आगू बढ़ला पर देवनी नदी (बकरा) ग्रहण करैत छथि। देवनी धारक उद्‌गम पनारक उपशाखा ओ बकराक मिलन स' रमानी गामक पास बनयवाली फियालाक दहिन धार स' होइछ। अमौर थाना मे हिनक नाम परमान अछि। बैसी थाना मे जखन अपन छाड़नि तथा कंकई समूहक उप शाखाक जल लैत छथि, देवनी नाम स' जानल जाइत छथि। देवनीक अपन अलग स' कोनो अस्तित्व नहि। परिवर्तित बकरा नदीक ई नाम छैक। बकरा अग्निकोण मे चलि कय फुलवांसा गाम पहुंचि जतय एकटा चौरक स्रोत आबि कय मिल जाइत छन्हि जे बैसीक दक्षिण स' उद्‌गमित होइत दक्षिण दिस चलैत राष्ट्रीय उच्च पथ कें पार कय रुपौली गाम होइत फुलबांसा अबैत अछि। एतय स' कटिहार अनुमंडलक कदवा थाना मे प्रवेश करैत छथि। एतहि देवनी (बकरा) ओ महानन्दाक उपशाखा मिलि कय एकटा पैघ टापू बनबैत छथि। एतय स' देवनी दक्षिण चलैत सतमीठाक अग्निकोण मे झौवा रेलवे स्टेशन (कटिहार-बारसोई लाइन) स' एक मील पूब तथा रेलवे लाइनक सटले देवनी (बकरा) पनार मे मिल जाइत छथि। ई मिलन स्थल कदवा स' चारि मील दूर अग्निकोण मे अछि।

बकरा रतुआ नदीक धार कें आत्मसात् कय अररिया ओ सदर अनुमंडलक सीमा संधि मे आबि कय कतुआ नाम स' जानल जाइत छथि। रतुआ स' योगजन ओ घंघी नदी संगम करैत छथि ओ गंगी नाम स' जानल जाइछ। रतुआ अग्निकोण मे चलैत सुख सैनाक दक्षिण पलासी थाना स' निकलि कय जोकीहाट पहुंचैत छथि। जतय अररिया-बहादुरगंज मार्ग रतुआ कें पार करैत छैक। आगू बढ़ला पर पुनः पूर्णिया स' जलालगढ़ होइत बहादुरगंज जायबला मार्ग रतुआ कें पार करैत अछि। एकर बाद रामगंज पहुंचैत छथि। एकर बाद नैऋत्य कोण मे तीन मील बहिकय कड़िया गामक पास पश्चिम मे अररिया सदर ओ पूर्णिया सदर अनुमंडलक सीमा पर बकरा (कतुआ धार) स' रतुआ मिल जाइत अछि। बकराक धार पहिने छोट छल, मात्र 16-17 मील जे रतुआक धारा पकड़ि कय आब 40 मील लम्बा पूर्णिया ओ अररिया जिला मे बहि रहल छथि। ■

कवल

कवलक उद्गम नेपालक तराइ भागक चूरे पर्वत स' होइत छन्हि। नेपालक झापा जिला स' प्रवाहित होइत किशनगंज जिलाक दिघलबैंक थाना मे लोहरगढ़ स' अढ़ाई मील उत्तर मे प्रवेश करैत छथि। ई दिघलबैंक स' पांच मील दूर पश्चिमोत्तर कोण मे अछि। आगू बढ़ैत कंचनवारी गामक उत्तर तथा लोहरगढ़क नैऋत्य कोण मे पाया संख्या 27 लग एहि क्षेत्र मे प्रवेश कय दक्षिण दिशा मे प्रयाण करैत छथि। लोहरगढ़ स' तीन मील दक्षिण दिस बहला पर बीवीगंज गाम अबैत अछि जतय उत्तर स' दक्षिण दिस आबयवाली एक निर्झरणी हिनका मे संगम करैत छथि। किछु दूर चलला पर एकटा स्रोत कें अपन दहिन भाग मे ग्रहण करैत छथि। दू स' तीन मील बहला पर बहादुरगंज स' उत्तर-पश्चिम कोण मे टेढ़ागाछ जायवला मार्ग कें कवल भोअन मे पार करैत छथि। एतय स' अग्निकोण मे बहैत दक्षिण दिस चलि कय टेढ़ागाछ थाना मे घुसि कय सिरनिया गामक अग्निकोण एवं बलुआ डांगीक नैऋत्य कोण मे कंकईक उपशाखा धार कें ग्रहण करैत छथि। एहि संगमक बाद कवल टेढ़ागाछ ओ बहादुरगंज थानाक सीमा रेखा बनैत महेशवथना गाम पहुंचैत छथि। एतय स' वढ़ि कय बहादुरगंज थाना मे प्रवेश कय मुसलडंगा होइत गोसाईपुर गाम अबैत छथि जे पलाशी थानाक पूब दक्षिण कोण मे अन्तिम गाम अछि। आगू बढ़ला पर अररिया आ किशनगंज अनुमंडलक सीमा पर पहुंचि कय कृष्णई ओ नोनसारी नदी कवल स' संगम करैत छथि। कवल नदी नोनसारी के आत्मसात् कय दक्षिण दिस बढ़ैत जोकीहाट स' पूर्वोत्तर कोण मे चलयबला तथा बहादुरगंज जायबला मार्ग कें मझकुरी गामक पास पार करैत छथि। 6 मील चलला पर आसियान गाम अबैत छथि जे तीनटा अनुमंडलक सीमा संधि अछि। सिसवा गाम पहुंचि दू धार भ' जाइत छन्हि आ आगू चलि

कय पूर्णिया सदर ओ अररिया अनुमंडलक सीमा बनैत छथि। पूर्णिया सदर अनमुंडल मे प्रवेश कय तीन मीलक एकटा टापू रामपुर गामक पास बनबैत नदीक दुनू भुजा रउताक दक्षिण मे मिल जाइत छन्हि। एतय स' पठान टोली गाम पहुंचैत छथि जे अमौर स' डेढ़ मील उत्तर मे अछि जतय कंकई धार स' मिल जाइत छथि। कवल नदी पूर्णिया जिलाक एकटा स्वतंत्र नदीक रूप मे बहैत छथि आ अपन मुहाना लग पहुँचि कय कंकई मे खसैत छथि एवं महानन्दा स' मिल जाइत छथि। ■

कंकई

नेपालक पूर्वी भाग मे स्थित मेची अंचलक इलाम जिलाक पूर्वोत्तर कोणक ऊंच पहाड़ी भूमि स' कंकई प्रवाहित होइत छथि। चूरे पहाड़क घाटी स' पश्चिम दिस बहैत अग्निकोण मे चलैत छथि। तराइ भागक झापा जिला मे आबि कय दक्षिणवाहिनी भ' जाइत छथि। एकर बाद किशनगंज जिला मे दू भाग मे विभक्त भ' प्रवेश करैत छथि। पूर्वी बाम शाखा जिया पोखरि गामक उत्तर तथा भारत नेपालक सीमा पाया संख्या 14म लग प्रवेश करैत छथि। दिघल बैंक ओ ठाकुरगंजक सीमा कें निर्धारित करैत बहैत छथि। पश्चिमी शाखा दिघलबैंक उत्तर पाया नं. 18 ओ 19क मध्य भाग मे पचगछी गाम लग प्रवेश करैत अछि। हिनका पश्चिमी कंकई कहल जाइछ। हिनक दहिन कछेड़ मे मालटोली ओ बाम मे पचगछी गाम अछि। एतय स' दिघलबैंक आबि कय मालटोली होइत पश्चिम मुड़ि कय नैऋत्य कोण मे बहैत लक्ष्मीपुरक पूब मे पहुंचैत छथि। एतय स' दक्षिण दिस भेला पर सिंघीमारी गाम लग खर्रा नामक निर्झरिणी हिनका स' संगम करैत अछि। हिनका ई अपन कोखि स' निकालि दैत छथि जे बलुआ डांगीक पास कवल नदी मे खसैत छथि। खर्रा धार कें निकालि कय अग्निकोण मे झुकैत मुस्तफागंज होइत फुलवारी घाट आबि जाइत छथि जे बहादुरगंज स' तीन मील पर अछि। एतय स' नैऋत्य कोण मे वीरपुर गाम आबि जोकीहाट स' पूर्वोत्तर कोण मे चलि कय, जतय बहादुरगंज आबय वला सड़क पुल बनल अछि, नीचा स' कंकई दक्षिण दिशा मे बहैत छथि। वीरपुर स' दक्षिण बहि कय नैऋत्य कोण एवं पश्चिम दिशा मे मुड़िकय भोसान गाम आबि जाइत छथि। एहि गामक दक्षिण मे बहादुरगंज थाना ओ किशनगंज अनुमंडलक सीमा कें लांघि कय पूर्णिया सदर अनुमंडलक अमौर थाना मे प्रवेश करैत छथि। किछु दूरक बाद दोमोहानी गामक पास

पूर्वी कंकईक एक उपधारा स' मिल जाइत छथि। बैसा पहुंचला पर कवल नदीक एक उपधारा कें आत्मसात् करैत छथि। एतय स' दक्षिण प्रयाण करैत छथि। सिसलिया गामक सामने अग्निकोण मे मुड़िकय भझोक होइत नरहाकोल आबि जाइत छथि। ओतय स' बढ़ला पर सूरजपुर गाम मे कवल कें ग्रहण करैत दक्षिण दिस मुड़िकय पूर्वी कंकईक धारा मे समा जाइत छथि।

कंकईक पूर्वी प्रवाह अपन उद्‌गम स' भारतक भूमि किशनगंज जिला मे गरमाडेंगा गामक पूब मे बहैत दिघलबैंक ओ ठाकुरगंज थानाक सीमा रेखा बनैत जिया पोखरि गाम स' डेढ़ मील उत्तर आ दिघलबैंक स' पांच मील दूर प्रवेश करैत छथि। एतय स' पश्चिमोत्तर कोण मे मुड़िकय दिघलबैंक थाना मे घुसि जाइत छथि। दक्षिण दिशा मे चलि कय अग्निकोण वाहिनी बनि बन्दर झूला पहुंचि पावारवाली अबैत छथि। नैऋत्य कोण मे बहैत कठलबारी पहुंचैत छथि जतय पश्चिमी कंकईक पुरान धार ओ सैरीक धार कें ग्रहण करैत छथि। सैरी कोनो भिन्न नदी नहि। ई संगम पावारवाली स' पांच मील दूर नैऋत्य कोण मे तथा बहादुरगंज स' चारि मील पूर्वोत्तर कोण मे अछि।

सैरी धार कें आत्मसात कयलाक बाद पूर्वी कंकई अग्निकोण मे झुकि कय दक्षिण दिशा मे चलैत महेरगंजक पश्चिम मे अबैत छथि। एतय अपना कें दू धारा मे बांटि आठ मीलक यात्रा कय अनारकलीक पास मिल जाइत छथि। आगू अयला पर अपने छाड़नि धार लोनसवरी कें ग्रहण करैत छथि जे टेवटाड-बिरनिया गामक चौर स' निकलि कय दक्षिण दिशा मे बहैत बहादुरगंजक सटले पूब भाग मे अबैत छथि। छाड़नि धार लोनसबरीक लम्बाइ 16 मील अछि तथा एकटा बरसाती नदी अछि। कंकईक पश्चिम धार चूनामारी मे लोनसबरी कें समेटैत पूर्वी कंकई स' संगम करैत लगभग दू मील दक्षिण बहि कय किशनगंज सदर अनुमंडलक दक्षिणी सीमा कें छूबैत एक मील नैऋत्य कोण मे चलिकय किशनगंज-पूर्णिया सदर अनुमंडलक सीमा रेखा बनबैत छथि। एतय स' अमौर थाना मे घुसिकय महरौल गाम अबैत छथि। हिनक धार पूर्णिया सदर अनुमंडल मे घुसिकय कोहिया गाम अबैत अछि। जतय दूटा धार बनि जाइछ। पूबक धार छोट छन्हि जे अग्निकोण मे झुकिकय बहैत महानन्दा मे विलीन भ' जाइत छथि। ई संगम बैसी स' दू मील पूर्वोत्तर कोण मे अछि। ■

महानन्दा

पौराणिक अपरनन्दा महानन्दा नाम स' जानल जाइत छथि। महानन्दाक संबंध मे कहल जाइछ जे ई आर्यक प्रभावक अन्तिम छोर थिक। संगहि गंगा प्रणालीक पूब मे अंतिम महत्वपूर्ण नदी जे कोसी ओ तीस्ता नदीक बीच प्रवाहित होइत छथि। ई मिथिलाक एकटा प्रमुख नदी छथि। हिनक उद्गम पश्चिम बंगालक दार्जिलिंग जिला मे कार्सियांगक 6 किमी उत्तर हिमालय पर्वतमाला मे चिमले लग अछि, जे सिक्किम राज्यक दक्षिणी भाग थिकैक। एतय स' महानन्दा 2062 मीटरक ऊंचाई स' गंगा तक अपन 376 किमी लम्बा यात्रा करैत छथि। हिनक जलग्रहण क्षेत्र 24.753 वर्ग किमी छन्हि, जाहि मे 5293 वर्ग किमी नेपाल मे, 6677 वर्ग किमी पश्चिम बंगाल मे, 7957 वर्ग किमी मिथिला मे तथा बाकी 4826 वर्ग किमी बांग्लादेश मे अछि। अपरनन्दाक नाम महानन्दा आ यैह नन्दा बलासन कहल जाइत छथि। बलासन नदी अपरनन्दा स' बुधरू गाम लग संगम करैत छथि जे पहिने पूर्णिया जिलाक ठाकुरगंज थाना स' 9 मील दूर पूर्वोत्तर कोण मे छलैक जे आब पश्चिम बंगाल मे चलि गेल अछि। बलासन कें बुधरू गाम लग आत्मसात् कय कें अपरनन्दा महानन्दा बनि जाइत छथि। एहि संगम स' तीन मील नैऋत्य कोण मे बहि कय ठाकुरगंज थानाक दुबानोची गामक उत्तर मे प्रवेश करैत छथि। ओतय स' नैऋत्य कोण वाहिनी होइत सखुआबलीक दहिना चेंगा नदी हिनका मे संगम करैत अछि। चेंगा नदी दार्जिलिंग जिलाक नक्सलवाड़ी क्षेत्र स' बहि कय पूर्णिया जिला मे घुसि कय थोड़ेक दक्षिण बढ़ि कय बूढ़ीगंगाक एक शाखा कें अपन दहिन भाग मे ग्रहण कय एक मील आगू बहला पर एकटा छोट सरिता कें मिला लैत छथि। ई मिलन स्थल ठाकुरगंज स' दू मील पूर्वोत्तर कोण मे अछि। चेंगा ठीक दू मील आओर दक्षिण चलि कय महानन्दा मे समा जाइत छथि। चेंगाक धार पूर्णिया जिलाक ठाकुरगंज थाना मे मात्र 9 मील

बहैत अछि। एतय स' एक मील नैऋत्य कोण मे बूढ़ीगंगा छथि, जनिका तट पर ठाकुरगंज बसल अछि।

ठाकुरगंज स' दू मील दक्षिण बूढ़ीगंगा कें आत्मसात कय महानन्दा दक्षिणाभिमुख होइत कलियागंज पहुंचैत छथि। कालियागंज मे रेल लाइन पार करबाक हेतु महानन्दा पर पुल बनल अछि। एतय हिनक दहिन कछेड़ मे खरना गाम अछि। ओतय स' नैऋत्य कोण मे बहैत महानन्दा खरूआमा गाम अबैत छथि। एक मील दक्षिण अयला पर पश्चिम दिशा मे मुड़ि कय मेची स' संगम करैत छथि। मेची नेपालक पूर्वी सीमाक अन्तिम नदी थिक, जे नेपाल एवं पश्चिम बंगालक दार्जिलिंग जिलाक सीमा रेखा अछि। मेचीक उद्गम सिक्किम, नेपाल ओ दार्जिलिंगक सीमा पर स्थित चूरे पहाड़ मे अछि। अपन उद्गम स्थान स' दक्षिण मे चलि कय झापा जिलाक पूर्वी भाग स' बहैत आसाम जायवला रेल लाइनक गलगलिया स्टेशनक सटले पश्चिम अबैत अछि। एतय स' दक्षिण दिशा मे बहैत तथा पूर्णिया ओ नेपालक सीमा रेखा बनबैत ठाकुरगंज रेलवे स्टेशनक सामने आबि कय नैऋत्य कोण दिस बहैत छथि। पथमारी गाम लग मेची पूर्णिया जिला मे घुसि कय 15 मील बहिकय महानन्दा स' संगम करैत छथि। मेची कें आत्मसात कयलाक बाद तीन मील दक्षिण अयला पर दाउक नदीक एकटा धारा महानन्दाक वाम पार्श्व मे प्रवेश करेत छन्हि। दाउकक एहि धाराक संगमक संग महानन्दा नैऋत्य कोण मे झुकिकय बहैत छथि। भुजबाड़ी गाम अबैत छथि। एतहि किशनगंज स' बहादुरगंज जायबला मार्ग महानन्दा कें पार करैत अछि। आगू आबिकय एकटा छोट द्वीप बनैत अछि कुट्टी गामक पास। एतय किशनगंज तथा सदर अनुमंडलक सीमा मिलैत अछि। कुट्टीक सामने महानन्दाक तट स' चारि मील पूब मे किशनगंज नगर अछि जे दाउक नदीक तट पर अछि।

कुट्टीक अग्निकोण मे महानन्दाक बाम तट पर मक्खीमारा ओ दक्षिण तट पर फलवारी गाम अछि। फलवारीक दक्षिण-उत्तर स' दक्षिण दिस महानन्दाक पूर्वी तट पर बसन्तपुर, कटहलिया ओ बलिया गाम बसल अछि। कटहलिया ओ बलिआक सामने पश्चिम मे महानन्दाक दहिना कछेड़ मे कंकईक एकटा शाखा जैरामपुर लग अपन जल खसबैत छथि जे औलाई गामक समीप पूर्वी कंकई स' निकलैत छथि। एहि संगमकक पश्चात महानन्दा दक्षिण बढ़ैत छथि। मटियारी गाम स' आबि कय चारि मील दक्षिण बहला पर हिनक बामा कछेड़ पर प्रसिद्ध ऐतिहासिक गाम असुरगढ़ अछि। ई राष्ट्रीय राजपथ पर अछि जे पूर्णिया स' दार्जिलिंग जाइत अछि। असुरगढ़ स' दू मील उत्तर बभनटोली गाम लग महानन्दा अपन बाम भाग मे पातर धारा निकालि अढ़ाई मीलक एकटा टापू बनबैत अछि। बाम धार सैयदपुर स' एक मील दूर नैऋत्य कोण मे पुनः महानन्दा मे मिल जाइत अछि। एतय स' नैऋत्य कोण मे बहैत ई बैसी थाना मे प्रवेश करैत छथि। आगू बढ़ला पर महानन्दाक दहिन भाग मे कतेको नदीक जल लय कें कंकई मे प्रवेश करैत छथि। कंकई संगमक बाद महानन्दा दक्षिण दिस बहैत बैसी थाना कें अपना पश्चिम मे छोड़ैत

पूब दिशा मे मुड़ि जाइत छथि। एतहि राष्ट्रीय राजपथ पर डेंगराघाट अछि जतय महानन्दा पर विशाल कंक्रीटक पुल बनल अछि। एहि तरहें महानन्दा पूर्णिया ओ किशनगंज जिला मे 55 मील तक प्रवाह यात्रा पूरा करैत छथि।

डेंगराघाट पुल स' दक्षिण चलैत महानन्दाक पूर्वी कछेड़ स' एक मील दूर बारसोई स' कर्सियांग जायवला रेलवेक डलकोढ़ा स्टेशन छैक। एतय स' नैऋत्य कोण मे झुकिकय बहैत अग्निकोण वाहिनी भ' पूर्णिया सदर अनुमंडल कें पार कय कटिहारक माधोपुर गाम अबैत छथि। एतय स' सहनपुर गाम आबि कय अपन एकटा धारा कें निकालि कय देवनी ओ पनार नदीक रोगा धार कें ग्रहण कय आजमनगर क्षेत्र मे बहैत गंगा मे मिल जाइत छथि। किन्तु, महानन्दाक मुख्य धार सहनपुरक पूब स' अग्निकोण मे बहैत कलिया गाम स' दक्षिण दिस बारसोई स' किशनगंज जायवला रेल लाइनक पश्चिमी भाग स' समानान्तर चलिकय सुधानी रेलवे स्टेशनक पश्चिम मे अपन वाम पार्श्व मे आत्मसात करैत छथि। एहि संगमक बाद महानन्दा वक्रगति स' 10 मील चलिकय बारसोई अबैत छथि। बारसोई एहि नदीक बाम भाग मे रेल-पुलक पूब मे अछि। बारसोई घाटक दक्षिण·हिनक बाम कछेड़ पर खिदिरपुर गाम अछि, जतय महानन्दा अपन वाम पार्श्व स' एकटा पातर धारा पूर्वोत्तर कोण मे निकालैत छथि जे दू भाग मे बटिकय अग्निकोण मे चलैत अछि। उत्तर दिस जायवाली धारा बारसोईक पूब भाग मे स्थित करीमगंज गाम पहुंचि कय ओकर पूब भाग मे दक्षिण दिशा मे बहैत अछि। अग्निकोण मे चलयवाली धारा बांसकोट गाम स' डेढ़ मील दूर अग्निकोण मे पहुंचैत अछि। एतहि दक्षिण दिस जायवाली धारा एहि मे मिल जाइत अछि। दुनूक एकीभूत धारा किछु दूर आगू बढ़ला पर सतुवान गामक समीप पुन: दू धारा मे बंटि जाइछ एवं दुनू धारा पूर्णियाक दक्षिण-पूर्वी कोणक सीमा पर नागर नदी मे समा जाइत अछि। बारसोई स' एक मील दक्षिण खिदिरपुरक पास महानन्दा नागर· धार कें अग्रसर कय कें नैऋत्य कोण मे मुड़िकय आजमनगर तथा बारसोई थानाक सीमा बनबैत अग्निकोण मे बढ़ैत छथि। आजमनगरक गायघट्टा लग पहुँचि कय मालदह जिला (पश्चिम बंगाल) क तुलसीहट्टा पहुंचि जाइत छथि। एतय स' पूब दिशा मे बहैत पूर्णियाक बारसोई ओ पश्चिम बंगालक तुलसीहट्टाक सीमा रेखा बनबैत बहैत छथि। महानन्दा पश्चिम बंगालक मालदह जिला मे बहिकय अपन एक प्रवाह कें गंगा मे विलीन करैत छथि एवं दोसर प्रवाह के पद्मा मे खसबैत छथि।

महानन्दा नदीक बाढ़ि स' बचावक लेल बिहार सरकार सुतल छल। 1963 मे बिहार विधान सभा मे एहि क्षेत्रक विधायक ध्यानाकर्षण प्रस्ताव रखलक जे पश्चिम बंगाल सरकार अपना क्षेत्रक महानन्दा पर तटबंध बना रहल अछि। संगहि तटबंध बनाएला स' कटिहार जिलाक कतेको प्रखंड जलमग्न भ' जायत। बिहार सरकार स्वीकार कयलक जे पश्चिम बंगाल सरकार बाढ़िक रोकथामक हेतु बांध 57.60 किमी लम्बा, 3.66 मीटर ऊंच ओ 9.76 मीटर चौड़ा बना रहल अछि। एहि स' अहमदाबाद प्रखंड तथा अन्य स्थान

भयानक बाढ़िक चपेट मे आबि जायत। 1964 मे विधायक पुन: आवाज उठायल। सरकार कहलक जे पश्चिम बंगाल सरकार द्वारा झालदह जिला मे महानन्दाक पूर्वी कछेड़ पर मलियार बांध परियोजनाक फलस्वरूप गत दू वर्ष स' एहि क्षेत्र मे बाढ़िक विभीषिका बिकराल भ' गेल छैक। सरकार 317 वर्ग किमी क्षेत्रक सुरक्षाक लेल 1.5 करोड़क लागत स' परियोजना तैयार कय रहल अछि तथा केन्द्रीय जल एवं ऊर्जा आयोगक स्वीकृति भेटला पर काज शुरू कयल जायत। 1965 मे बिहार, पश्चिम बंगालक मुख्य अभियंता तथा केन्द्रीय जल ओ ऊर्जा आयोगक एकटा बैसार मे दुनू राज्य अपन-अपन क्षेत्र मे निर्माण काज तथा आवश्यकताक पूर्ति करय से निर्णय भेल। बिहार राज्य अपन परियोजनाक स्वरूप एहि तरहें तैयार कयलक।

1. कटिहारक रेलवे बांध स' शुरू कय मनिहारीक परित्यक्त रेलवे बांध तक कारी कोसी नदीक पूर्वी कछेड़ पर तटबंधक निर्माण तथा तटबंध पर 2 मीटरक फ्री बोर्ड राखल जाय।
2. कारी कोसीक पश्चिमी कछेड़ पर तटबंध बनायल जाय एवं एकरा गंगा नदी पर बनल काढ़ागोला तटबंध स' जोड़ि देल जाय।
3. महानन्दाक पश्चिमी छोर पर खाजा हाट स' लय कें चौकिया पहाड़पुर तक, जतय ई नदी गंगा स' संगम करैत छथि, तटबंध बनायल जाय।
4. महानन्दाक पूर्वी कछेड़ पर बागडोब स' दिल्ली दिवानगंज (पश्चिम बंगालक सीमा) तक तटबंध बनायल जाय एवं 1.50 मीटरक फ्री बोर्ड राखल जाय।
5. महानन्दाक बारसोई शाखा पर बागडोव स' लयकय कुशीदह (पश्चिम बंगालक सीमा) तक तटबंध बनायल जाय।
6. गंगा नदीक उत्तरी तट पर चौकिया पहाड़पुर स' टोपरा तक तटबंध बनायल जाय जाहि मे 1.2 मीटरक फ्री बोर्ड राखल जाय।
7. महानन्दाक दुनू तटबंधक बीच 1830 मीटर दूरी राखल जाय।

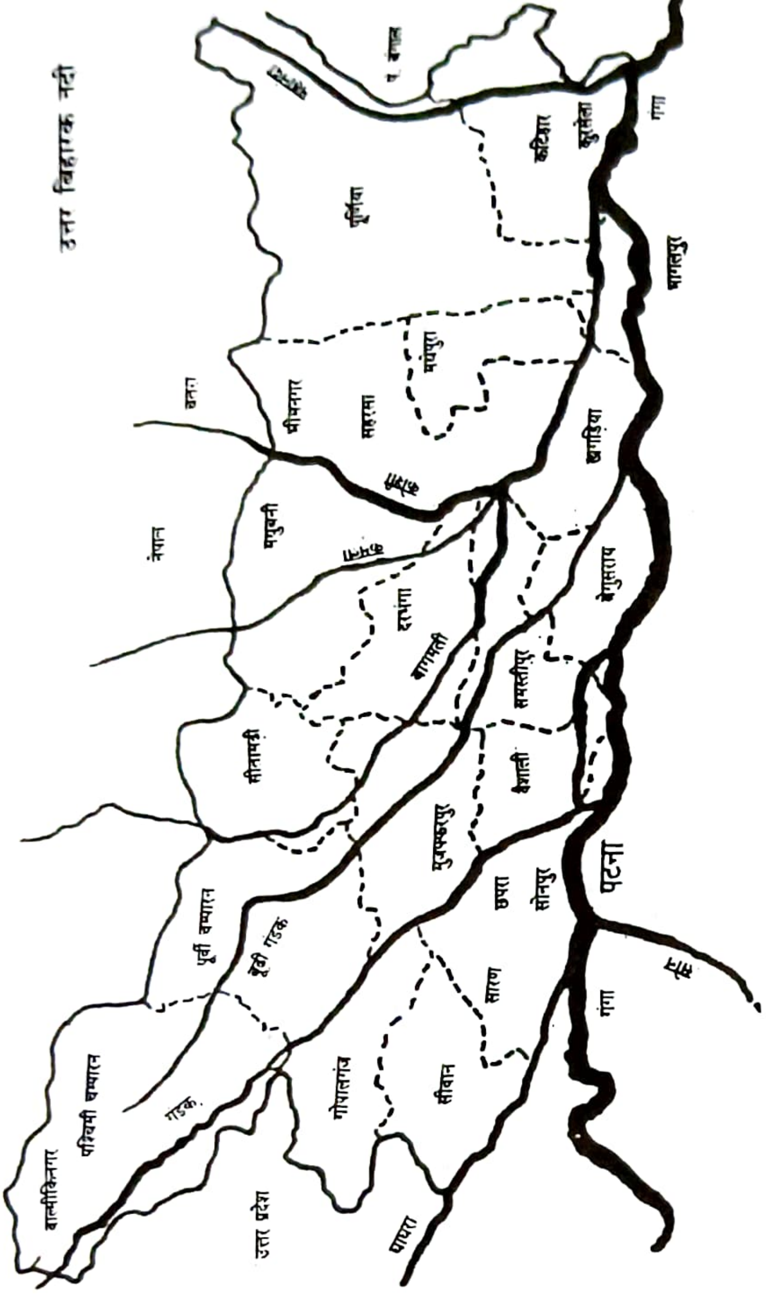
उपरोक्त परियोजनाक मंजूरी 1970 मे भेटल जखन एकर लागत 530.13 लाख रुपया आंकल गेल। लागतक आकलन बढ़ैत गेल। 1979 मे परियोजनाक प्राक्कलन 1970 लाख रुपया भ' गेल जे 1980 मे बढ़ि कय 2062.91 लाख रुपया भ' गेल। महानन्दा बाढ़ि नियंत्रण परियोजना - महानन्दाक दुनू तटबंधक बामा ओ दहिना पर वर्ष 1992-93 तक 5247.94 लाख रुपया खर्च भ' गेल। एहि मे कारो कोसी, बरण्डी तथा गंगा पर बनायल तटबंधक लागत अनुपलब्धताक कारण नहि अछि। गंगा पर बनल काढ़ागोला तटबंध तथा कुरसेला-जौनिया-बरण्डी तटबंध ओ बरण्डी नदीक दुनू कछेड़ पर बनल तटबंध कें आब महानन्दा परियोजना मे सम्मिलित कय लेल गेल छैक। एहि स' महानन्दा प्रणाली मे तटबंधक लम्बाइ आब 336 किमी भ' गेल छैक। परियोजनाक कार्यान्वयन स' पहिने बाढ़ि प्रभावित क्षेत्र 1009 लाख हेक्टेयर छल जे काज पूरा भेला पर 0.81 लाख हेक्टेयर रहि गेल। तहिना बाढ़ि प्रभावित क्षेत्रक जनसंख्या 8.40 लाख छल जे योजनाक कार्यान्वयनक बाद 40 हजार रहि गेल अछि। ■

दाउक

दाउक मिथिलाक पूर्वी सीमाक अन्तिम नदी अछि। हिनक उद्गम स्थान ठाकुरगंज स' पूब 18 मील दूर पूर्वोत्तर कोण मे स्थित जीमाकाटा गामक समीप मे अछि जे पश्चिम बंगालक सीमा मे अछि। एतय स' चलिकय नैऋत्य कोण मे 10 मील दूर चोपराक उत्तर मे अबैत छथि जतय उत्तर स' दक्षिण बहिकय आबयवाली बेंरग नदी स' संगम करैत छथि। एहि संगम स' आधा मील दूर अयला पर आसाम जायवला राष्ट्रीय उच्च पथ दाउकक धारा कें पार करैत अछि। नैऋत्य कोण मे बहैत ई नदी पूर्णिया तथा बंगालक सीमा बनि जाइत छथि। एतय जागीरगच्छ गाम अछि। एतय स' डेढ़ मील उत्तर गेला पर एकटा छोट नदी कें आत्मसात कय मांगुरजन गाम होइत पूर्णियाक भूमि मे प्रवेश करैत छथि, जे ठाकुरगंज स' 8 मील दूर अग्निकोण मे तथा कलियागंज स' सोझे चारि मील पूब दिशा मे अछि। एतय स' चारि मील नैऋत्य कोण मे बहला पर कुरियारी गाम अबैत छथि जतय एकटा छोट नदी कें संग ल' कय किशनगंज स' आसाम जायवाली रेल लाइन कें कलियागंज स' दू मील दक्षिण पार करैत छथि। ओतय स' महानन्दाक बामा भाग स' समानान्तर नैऋत्व कोण मे बहैत बुघरा गाम लग अबैत छथि जतय बूढ़ी चंगलोई नदी अपन जल दाउक मे मिलाबैत छथि। एतय स' आसाम जायवाली रेलवे लाइन कें पोठिया स्टेशनक दक्षिण चिल्हामारीक नैऋत्य कोण मे पार करैत छथि। आगू बहैत सीताझारी गाम अबैत छथि। एकर बाद फराबारी पहुंचैत छथि जतय दूटा धारा मे बेंटि जाइत छथि। पूर्वी धार रमजान नदी बनि जाइत छन्हि तथा किछु दूर बहला पर सुधानो कहल जाइत छथि। दहिन धारा पश्चिम दिस बहि कय महानन्दा स' आधा मील दूर पूब मे पहुंचैत छथि जे किशनगंज स' महानन्दाक पूर्वी कछेड़ स' कलियागंज जाइत अछि। ओतय स'

धोबिनिया गामक अग्निकोण मे आबि कय किशनगंज मे प्रवेश करैत छथि। एतय स' कुटिल चालि मे 6 मील चलि कय छोटकी सलकी गामक दक्षिण आबि पश्चिमाभिमुख भय कें महानन्दा मे प्रविष्ट भ' जाइत छथि।

दाउकक रमजान धार पूर्वोक्त फराबारी गाम लग अग्निकोण मे दाउक अपन बाम तथा पूर्वी धार कें दक्षिण मे चलला पर उगलबारीक उत्तर मे आबि कय डेढ़ मील बहला पर किशनगंज थाना मे प्रवेश करैत छथि। आगू घोड़ामारा स' अग्निकोण मे बहला पर किशनगंज नगर मे आबि जाइत छथि। किशनगंजक मुख्य बाजार कुतुबगंज मे अछि, जे रमजान नदीक कछेड़ मे बसल अछि। दक्षिणाभिमुखी रमजान नदी बंगालक सीमा मे बहय लगैत छथि। एतय सुधानो नाम स' जानल जाइत छथि। एतय स' सुधानो 6 मील बहला पर बिअहकुंअरी नदी स' संगम करैत छथि। ई स्थान किशनगंजक बसंतपुर गामक समीप अछि। एहि संगमक बाद सुधानो पश्चिम बंगालक भूमि मे सात मील बहला पर रानीगंज लग आबि जाइत छथि। एतय स' बंगाल-बिहारक सीमा बनैत पंडौल स्थान लग पुन: पूर्णिया मे घुसि जाइत छथि। ओतय स' बहैत मोरलबाधा गाम अबैत छथि जे सुधानो रेलवे स्टेशन स' दू मील उत्तर मे अछि। मोरलबाधा गाम स' सुधानो नैऋत्य कोण मे चलि कय बारसोई-किशनगंज रेल लाइन कें पारकय पश्चिम मे मुड़िकय महानन्दा नदी मे प्रवेश कय जाइत छथि। ई संगम सुधानो रेलवे स्टेशनक पश्चिम मे अछि। यैह अछि मिथिलाक पूर्वी सीमा पर बहयवाली त्रिधाराक-दाउक, रमजान ओ सुधानोक उद्गम स' महानन्दा संगम तकक वृतान्त। ■



पोखरि ओ चौर

मिथिला सनातन धर्मक कर्मकाण्ड लेल प्रसिद्ध अछि। 12-13म शताब्दी मे पोखरि यज्ञक लेल पद्धतिक निर्माण भेल। कर्णाट वंशीय राज-काल मे तड़ागामृतलता ओ जलाशयादिनाम्नु पद्धति नामक दूटा महत्वपूर्ण पुस्तक वर्धमान उपाध्याय लिखलन्हि। 15म शताब्दीक प्रारम्भ मे जलाशयोत्सर्ग पद्धति लिखल गेल जाहि पर बुधकर अपन टीका लिखल। प्रायः पुण्यक लोभक कारणें, सिंचाइ एवं अन्य आवश्यकता तथा कीर्तिक आकांक्षाक कारण पोखरि खुनेबाक परम्परा प्रचलित भ' गेल। पोखरिक मान्यता तखने होइत छल जखन पोखरिक यज्ञ भ' जाइत छल। पोखरि यज्ञ मे लोककल्याण आ पशु-पक्षी कल्याण हेतु पोखरि उत्सर्ग कएल जाइत छल। यज्ञक पश्चात् समस्त समाज कें ओहि पोखरिक जल, माछ, मखान आदि वस्तुक स्वच्छन्द उपयोगक अधिकार होइत छल। कौटिल्यक अनुसार जल संचयन ओ सिंचाइ प्रणाली एवं ओहि भूमि पर राज्यक स्वामित्व होइत छल तथा ओकर संचालन समुदायक जिम्मा छल। कृषक कें पोखरि, नहर आ रहट स' सिंचाइक बदला जल स्रोतक आधार पर निश्चित उपजाक एक निर्धारित भाग करक रूप मे अलग स' देबय पड़ैत छलैक। प्राकृतिक स्रोत स' सिंचाइ हेतु जल प्रबंध करब राजाक एकटा प्रधान कर्त्तव्य कौटिल्य कहने छथि। मनुस्मृति मे जन साधारणक लेल जलक उपलब्धता राजाक दायित्व मानल गेल। याज्ञवल्क्य स्मृति (8म शताब्दी) मे जलक प्रबंधन ओ वितरण संबंधित नियमक वर्णन छैक। आदिकाल स' पोखरि खुनेबाक ओ रखरखाव तथा ओकर सुरक्षाक व्यवस्था राजकोष स' होइत रहल अछि। 12म शताब्दी मे गांगदेव द्वारा अनेक पोखरि खुनबाएल गेल जाहि मे अन्हराठाढ़ी, भौर, मढिआही ओ अस्सी गाम मे एखनो ओ पोखरि अछि। हाबीडीह, दरभंगा शहर, बीरसाइर, वासुदेवपुर,

सिमराओंन ओ नेहरा गामक पोखरि 14म शताब्दीक पूर्व खुनबाएल गेल छल। 19म शताब्दीक उत्तरार्द्ध मे लिखल गेल आईन-ए-तिरहुत मे मिथिलाक निम्नांकित पोखरिक विवरण छैक।

दरभंगा शहर-8टा पैघ पोखरि, बिरौल, बर (पिंडारुच), सागरपुर, रैयाम, कमतौल, रांटी, संग्राम, जरहटिया, लहरा (परिहारपुर-राघोपुर), केओटी, नेहरा, भरवारा, बेला (आलापुर), हरिपुर, नेहरा (नील कारखानाक समीप), भिट्ठा (परिहारपुर-राघो), लबानगान, अतिहर, ब्रह्मपुर, बासोपट्टी, रहिका, कछुआ, शंकरपुर कंसी, सिमरी, बनौली, तारालाही, दिकहार (नारे दिगर), वैदेहीपुर, सिमराम, शिवसिंहपुर, चनौर, दामोदरपुर, बिनौल, कठरा, बीरसाइर ओ अकौर। एहि मे अधिकांश पोखरिक क्षेत्रफल 50-60 बीघा अछि, जाहि मे नेहरा, भरवारा, बेला (आलापुर)क क्षेत्रफल दू मील लम्बा छैक। एकर अतिरिक्त 19म शताब्दीक उत्तरार्द्ध मे दरभंगा जिला (दरभंगा, मधुबनी ओ समस्तीपुर) मे हजारक संख्या मे पोखरि छल। राजा ओ जमींदार द्वारा पोखरि खुनबाएल जाइत छल। स्मारकक रुप मे समाज मे एकर पैघ महत्व छल। एकटा जनश्रुति अछि जे म.म. शंकर मिश्रक जन्मक समय जे चमाइन अपन सेवा देने छलीह हुनका म.म. अयाची मिश्र अपन प्रतिज्ञाक अनुसार शंकर मिश्रक पहिल कमाइ देने छलथिन्ह। चमाइन अपन कीर्तिक लेल अपन गाम सरिसव पाही मे एक पोखरि खुनबाएलक जे एखनो चमनिया पोखरिक नाम स' जानल जाइछ। पोखरिक सबस' महत्वपूर्ण उपयोग अपन दैनिक काजक लेल जलक अलावा खेतक सिंचाइ छल। ग्रिअर्सन अपन विलेज नोट्स मे उल्लेख कयने छथि जे दरभंगा जिला (पुरनका) मे 70 प्रतिशत पोखरिक उपयोग अंशतः सिंचाइक लेल कयल जाइछ। जे.एच. केरक अनुसार आधुनिक मधुबनी जिला मे 20,000 पोखरि अछि। बहेड़ा थाना मे पोखरि सिंचाइक मुख्य स्रोत रहल अछि। जमींदारी प्रथाक उन्मूलनक बाद बिहार सरकार द्वारा भूमि-सर्वेक्षण करायल गेल। एहि सर्वेक्षण मे पूर्वक गैरमजरूआ आम पोखरि बिहार सरकारक पोखरि मे दर्ज कयल गेल। सरकार द्वारा सरकारी पोखरिक माछ ओ मखान खास अवधिक लेल लीज पर देल जाय लागल। सरकार कें एहि स' आय होबय लागल। सिंचाइक लेल पानि पर रोक-थाम होबय लागल। आमलोक लेल परम्परागत पोखरिक उपयोगक अधिकार समाप्त भ' गेल। पोखरि जे समाजक सामूहिक सम्पत्ति, सामूहिक उपभोग, सामूहिक जीवनक एक सशक्त स्रोत छल समाप्त भ' गेल। समाजक ई सम्पदा समाज कें पुनः उपलब्ध भ' जयबाक चाही तथा ई सम्पदा स्थायी रूप स' समाज द्वारा संरक्षित तथा समाजक लेल उपयोगी होयबाक चाही।

मिथिलांचल मे सरकारी पोखरि 12520 तथा निजी पोखरिक कुल संख्या 12486 अछि। जिलावार विवरण एहि तरहें अछि :

जिला	सरकारी पोखरि	निजी पोखरि
मुजफ्फरपुर	744	184
सीतामढ़ी	1354	1582
शिवहर	232	105
वैशाली	667	438
पूर्वी चम्पारण	519	341
पश्चिमी चम्पारण	1813	1100
दरभंगा	1623	2301
मधुबनी	3430	1753
समस्तीपुर	607	157
सहरसा	81	860
सुपौल	147	447
पूर्णिया	1091	1773
कटिहार	212	1445
अररिया	अनुपलब्ध	अनुपलब्ध
मधेपुरा	अनुपलब्ध	अनुपलबध
किशनगंज	अनुपलब्ध	अनुपलब्ध

मिथिला मे पोखरि स' अतिप्राचीन काल स' सिंचाइ व्यवस्था चलैत आबि रहल अछि। पोखरि मे वर्षाक जल एकत्र कयल जाइत छल। करीन लगा कय खेत मे पानि पटायल जाइत छल। एखनो ई व्यवस्था अछि, मुदा अधिकांश पोखरि पुरान भ' गेल अछि। फलस्वरूप अनुपयोगी भ' गेल अछि। साफ-सफाई ओ उराहल नहि जयबाक कारण जलक भंडारण कम भ' गेल छैक।

मिथिला मे चौर 36,478 हेक्टेयर क्षेत्रफल मे अछि। चौर एखन तक अविकसित अवस्था मे अछि। एकर कोनो सुधि नहि लेल गेल छैक। चौरक विकास स' आर्थिक विकास संभव छैक। चौरक चारूकात पम्पक माध्यम स' सिंचाइक सुविधा कम प्रयास मे संभव। चौरक भीड़ पर मवेशी पालन, मुर्गी पालन ओ सब्जी उत्पादन सुगमता स' संभव छैक। मत्स्य पालनक प्रचुर संभावना। माछ मे प्रजनन शक्ति बेसी होइत छैक। एक किलोग्रामक एक गोट माछ प्रायः एक लाख अंडा दैत अछि। एहन उत्पादकता कोनो आन फसिल मे नहि। एहि अंचलक विभिन्न जिला मे चौर एहि तरहे अछि :

जिला	क्षेत्रफल (हेक्टेयर)
दरभंगा	12141
वैशाली	13500
बेगूसराय	7,000
सहरसा	1,425
पूर्वी चम्पारण	850
पश्चिमी चम्पारण	882
मुजफ्फरपुर	680

मिथिलाक विभिन्न जिला मे मोइन एहि तरहें अछि :

पूर्वी चम्पारण	2076
पश्चिमी चम्पारण	1651
मुजफ्फरपुर	788
समस्तीपुर	60
बेगूसराय	180

मोइन 4755 हेक्टेयर क्षेत्रफल मे एहि अंचल मे अछि। चौर सदृश एकरो विकसित कयल जा सकैत छैक। ■



जल विद्युत

मिथिला मे जल विद्युतक विशाल संभावना ओ साधन अछि। नदी मातृक क्षेत्र होयबाक कारण नदीक जलग्रहण क्षेत्र बड्ड पैघ अछि। जे जल विद्युतक लेल पैघ साधन अछि। एहि प्रकृति प्रदत्त साधनक उपयोग नहि भ' रहल अछि। जल विद्युतक उत्पादन मे व्यय अत्यल्प होइछ। अनुमानत: एहि ऊर्जा कें उत्पन्न करबाक खर्चा कोयला स' एक चौथाई भाग होइत छैक। संगहि सुगमतापूर्वक ओ कम खर्च मे दूर-दूर तक लेल जा सकैछ। एहि स' विकेन्द्रित आर्थिक व्यवस्थाक निर्माण मे अत्यधिक साहाय्य भेटैछ। एहि मे ऊर्जा उत्पादक वस्तुक नाश नहि, मात्र एहि मे निहित शक्तिक प्रयोग होइत अछि। एहि अंचल मे बिजलीक उत्पादन मे अप्रत्याशित रूप स' कमी भेल छैक जकर फलस्वरूप बिजली संकटक स्थिति उत्पन्न अछि। एहि संकटक कारण कृषि, उद्योग, यातायात ओ अन्य पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ल छैक। एहि सब क्षेत्र मे उत्पादन मे अप्रत्याशित कमी भेल छैक। एहि अंचलक आर्थिक विकास मे ऊर्जाक अभाव बड्ड पैघ बाधा उपस्थित कयने अछि।

कोसीक बाराह परियोजना 1946 स' 1951 धरि संचिका मे टलैत रहल। 5 जून 1951 मे एस.सी. मजूमदार, परामर्शी अभियंता बंगाल सरकारक अध्यक्षता मे गठित लब्धप्रतिष्ठित अभियंताक समिति एहि परियोजना कें नकारि देलक। कारण, बाराह क्षेत्र मे 60 करोड़ रुपयाक लागत स' बनयबला जल विद्युत गृह 18 लाख किलोवाट बिजली उत्पादन करितय। एहि क्षेत्र स' उत्पन्न होबयवाला बिजली एकटा लम्बा समय तक अनुपयुक्त परल रहैत। तें हेतु पैघ लागत पूंजी अनुत्पादक ढ़ंग स' दीर्घकालक हेतु फंसल रहैत। एहि दोष कें देखि कय समिति दोसर योजनाक सिफारिश कयलक, जे एहि क्षेत्रक विकास मे पैघ बाधक भेल।

तृतीय पंचवर्षीय योजनाकाल मे सर्वप्रथम मिथिलांचल मे जल

विद्युतक लेल 2.20 करोड़ टाकाक लागत स' कोसी जल विद्युत धारक स्वीकृति भेटल। एहि परियोजनाक अन्तर्गत मुख्य पूर्वी कोसी नहरक कटैया स्थान मे पांच-पांच मेगावाटक चारिटा टरबाइन निर्माणक काज चालू भेल। कोसी पूर्वी नहर मे तलक ढालक आवश्यकता पूरा करबाक हेतु 13 फुटक प्रपात मुख्य नहर मे निर्माण करब आवश्यक भ' गेल। एहि प्रपात कें विद्युत उत्पादनक लेल कयल गेल। 4टा टरबाइनक उत्पादन क्षमता (4×5000 मेगावाट) 20 मेगावाट छल अर्थात् 20,000 कि.वाट। एहि विद्युत गृहक निर्माण 1964 मे शुरू भेल एवं 1971-72 मे पूरा भेल। विलम्बक कारण भेल जे 1965 मे पाकिस्तान युद्धक समय जापान स' आयातित यंत्र पाकिस्तान द्वारा जब्त कय लेल गेल। नेशनल प्रोजेक्ट्स कारपोरेशन पूर्वी नहरक बीच एहि पनबिजली घरक निर्माण कयलक। चालू भेला पर देखल गेल जे प्रत्येक टरबाइनक उत्पादन क्षमता 14500 किलोवाट निकलल अर्थात् 18000 किलोवाट उत्पादन स्थिर भेल। पूर्वी कोसी नहर मे सिल्ट इजेक्टरक निर्माण नहि कयल गेल। फलस्वरूप पनबिजली घर मे बालु सहित जलक प्रवेश स' टइबाइनक आसपास बालुक भराव होइछ। एहि स' टरबाइनक संचालन बाधित होइछ। प्रत्येक टरबाइन कें विद्युत उत्पादनक लेल 3750 घनसेक जलप्रवाह आवश्यक अछि। अक्टूबर स' मार्च तक कोसी नदीक औसत जलप्रवाह 9,000-10,000 घनसेक रहैत छैक। जाहि स' एहि 6 मास मे जलसंकटक कारण विद्युत उत्पादनक संभावना कम भ' जाइत छैक। एतेक कम भ' जाइत छैक जे बीरपुर कें पूरा बिजली नहि भेंटैत छैक। कोसी परियोजना पर नेपाल स' समझौता मे करार भेल छल जे उत्पादित बिजलीक आधा नेपाल कें देल जायत। ई संभव नहि होइत छैक। संगहि इहो निर्णय छल जे मिथिलाक बिजलीक आवश्यकता कें ई पूरा करत। 1990 मे राज्य सरकार कोसी पनबिजली घरक सीमा कें स्पष्ट करैत स्वीकार कयलक जे डिजाइनक गड़बड़ीक कारण 6 मेगावाट बिजलीक उत्पादन संभव। एक मेगावाट उत्पादन भ' गेल छल। सम्प्रति प्रयासक फलस्वरूप 3 मेगावाट बिजलीक उत्पादन संभव भेल अछि।

पांच मेगावाटक तीनटा जल विद्युत इकाइक प्रावधान गंडक नदी परियोजना मे कयल गेल छल। 1983 मे परियोजनाक लागत 1740 लाख रुपया छल जे 1996 मे 6600 लाख रुपया भ' गेल। एहि योजनाक कार्यान्वयन बिहार राज्य जल विद्युत निगम कयलक एवं पूर्वी गंडक, बाल्मीकिनगर, पश्चिम चम्पारण नाम स' जानल जाइछ। विद्युत उत्पादन भ' रहल छैक। दिसम्बर 2001 मे 30 लाख यूनिट जल विद्युत उत्पादन भेल छल। ट्रांसमिशन ओ डिस्ट्रीब्यूसन बिहार राज्य विद्युत बोर्डक अधीन छैक। अनेक समस्या एहि विद्युत गृह स' ऊर्जा उत्पादन मे भ' रहल छैक। यथा –

1. तिरहुत नहर बन्द भेला पर पावर हाउस स' विद्युत उत्पादन ठप।
2. तिरहुत नहरक शून्य आर.डी. स' 6.70 आर.डी. तक सिल्ट भरब, जलश्राव बाधित एवं शक्ति गृह कें पर्याप्त मात्रा मे जलक अभाव।
3. पूर्वी गंडक नहर पावर चैनेलक 1260 मीटर लम्बाइक मे सिल्ट भराव तथा शक्ति गृह कें जलक अभाव।
4. तीन यूनिटक हेतु 10,500 क्यूसेक जलक आवश्यकता मुदा जल संसाधन विभाग बिहार मात्र 7000 क्यूसेक जल दैछ जाहि स' विद्युत उत्पादन मे कमी।
5. ई यूनिट सूरजपुरा नेपाल स' सिक्रोनाईज्ड अछि, अतः कखनो पर काल नेपालक मांग बिजली नहि रहला पर शक्ति गृह कें बन्द करय पड़ैत छैक।
6. जापानी टकनीक स' बनल छैक तें स्पेयर्सक अभाव मे बन्दी।
7. यूनिट के ट्रीप कयला स' चैनल मे जलक वृद्धि ओ नहरक ऊपरी भाग कें टूटबाक खतरा।
8. ट्रेस रैक मे जंगल झाड़ी फसि गेला स' उत्पादन पर प्रतिकूल प्रभाव। राज्य सरकार द्वारा संचालित एहि योजना कें सब समय मदद लागल रहैत छैक। सुचारु रूपेण संचालन संकट मे।

पश्चिमी चम्पारण मे 'त्रिवेणी' नाम स' प्रख्यात 1.5 मेगावाटक दूटा यूनिट बिहार राज्य जल विद्युत निगम निर्माणक निश्चय 1992 मे कयलक। एहि परियोजना मे 915 लाख रुपयाक लागत व्यय होयत। 21 सितम्बर 2002 कें प्रारम्भिक सर्वे, नहरक जलक सर्वेक्षण, जियोलोजिकल सर्वेक्षण, पावर हाउस एवं स्वीच बोर्ड क्षेत्रक रेसिस्टीविटी टेस्ट आदि कयल गेल छैक। ई निर्माणाधीन अछि।

मिथिलांचल सुपौल जिला मे एकटा जल विद्युत परियोजना स्वीकृत अछि। सुपौलक राजापुर मे 700 कि. वाट क्षमतावाला 347 लाख रुपयाक लागत स' ई विद्युत केन्द्र बनत। काज शुरू नहि भेल अछि।

यूक्रेनक वीक स्ट्रीम ग्रुप ऑफ कम्पनीक प्रतिनिधिमंडल 10 मार्च 2006 मे पश्चिमी चम्पारणक बाल्मीकिनगर मे पनबिजली इकाइक संचालनक पूर्ण संभावना स' उत्साहित भेल अछि। 100 किलोवाट स' 2000 किलोवाट तक छोट-छोट यूनिक लगा कय प्रचुर मात्रा मे विद्युत उत्पादन कयल जा सकैछ। वर्तमान प्रतिष्ठानक उत्पादन क्षमता बढ़ायल जा सकैत छैक। राज्य सरकार सहयोगक आश्वासन देने अछि। ■

नदी कें जोड़ब

प्रकृति नदीक रूप मे जीव कें अमूल्य निधि प्रदान कयने अछि। मानव सभ जीव मे श्रेष्ठ तें ओकर परम कर्तव्य जे एहि जल निधिक ओ ओकर उत्तम प्रबंध तथा उपयोग करय। कहल जाइछ जे भागीरथक तपस्या एवं प्रयास स' एहि धरा पर जीवक प्यास मिटयबाक हेतु गंगा अवतरित भेलीह। इतिहास साक्षी अछि जे संस्कृति आ सभ्यताक विकास नदीक तटवर्ती क्षेत्र मे भेल। एखन एक क्षेत्र मे बाढ़िक तांडव ओ दोसर दिस जलसंकटक कारण उत्पन्न सुखार देशक समक्ष पैघ समस्या अछि। एहि समस्याक स्थायी निवारण हेतु देशक 37टा नदी कें जोड़बाक हेतु एकटा टास्क फोर्स भारत सरकार गठन कयलक जे कार्यरत अछि। सर्वोच्च न्यायालय केन्द्र सरकार कें 2016 तक देशक प्रमुख नदी कें जोड़बाक स्थिति-पत्र देबाक आदेश देने अछि। राष्ट्रपति ए.पी. जे. अब्दुल कलाम 2020 तक विकसित भारतक स्वरूप मे एकरा सम्मिलित कयलनि। स्वर्णिम चतुर्भुज ओ पूब-पश्चिम तथा उत्तर-दक्षिणक विश्व स्तरीय राजमार्गक भव्य गलियाराक उत्तम प्रगतिक बाद केन्द्र सरकार एहि दिशा मे प्रयास शुरू कय देने अछि। कार्यदल मे जल संसाधनक विशेषज्ञ, अभियंता ओ एहि तकनीकक दिग्गज कार्यरत छथि। अग्रिम पांच वर्ष मे चारिटा नहरक निर्माण काज कें पूरा करबाक संकल्प छैक जे एहि विशाल योजनाक प्रथम चरण छैक।

सर्वप्रथम महाकवि सुब्रमण्यम भारती गंगा-कावेरी कें जोड़बाक स्वप्न देखने छलाह। 1839 मे दक्षिण भारत मे सर आर्थर कॉटन देश मे जल परिवहनक विकासक लेल भारतीय नदी कें जोड़बाक योजना बनौने छलाह। 1972 मे डा. के.एल. राव विभिन्न नदी घाटीक बीच जल उपलब्धताक समाधान ओ नौ-परिवहनक

सुविधाक उद्देश्य स' एकटा राष्ट्रीय जल ग्रिडक प्रस्ताव देने छलाह। हुनक एहि योजना मे पटनाक निकट गंगा नदी स' एक लिंक नहरि निकालि कय क्रमश: सोन, नर्मदा, ताप्ती, गोदावरी, कृष्णा ओ पेन्नार होइत अन्तत: कावेरी नदी मे ग्रैन्ड एनीकट स' मिलयबाक परिकल्पना कयल गेल छल। ई गंगा-कावेरी योजनाक नाम स' जानल जाइछ। 1974 मे कैप्टन दस्तूर द्वारा परिकल्पित गारलैंड नहरक प्रथम भाग 4200 किमी लम्बा ओ 300 मीटर चौड़ा हिमालय नहर, जकरा हिमालयक दक्षिणी ढालक किनार मे रावी स' ब्रह्मपुत्र नदी आओर आगू तक निर्माण तथा दोसर भाग मे 9300 किमी लम्बा 300 मीटर चौड़ा केन्द्रीय तथा दक्षिणी माला नहरक निर्माण प्रस्तावित छल। दुनू भाग कें पटना तथा दिल्ली मे 3.7 मीटर व्यास बला 5टा पाइपक माध्यम स' जोड़ब प्रस्तावित छल। विशेषज्ञ एहि योजना पर असहमति देखौलनि।

केन्द्रीय जल संसाधन मंत्रालय वर्ष 1997 मे डा. एस. आर. हाशिमक अध्यक्षता मे एकीकृत जल संसाधन विकास हेतु राष्ट्रीय आयोग गठित कयलक जे वर्ष 2000 मे अपन प्रतिवेदन समर्पित कयलक। एकर विचारणीय विन्दु मे नदी सभ कें जोड़ि क' जलक कमीवला नदी घाटी मे अतिरिक्त जलक अन्तरणक उद्देश्यक पूर्ति हेतु आवश्यक रीतिक सुझाव सेहो छल। जुलाइ 1982 मे भारत सरकार जल संसाधन मंत्रालयक अन्तर्गत 'राष्ट्रीय जल विकास अभिकरण', एकटा स्वायत्तशासी संस्था देश मे नदी सभ कें जोड़बाक कार्य हेतु प्रारम्भिक अध्ययनक लेल बनायल गेल जे कार्यरत अछि। प्रत्येक वर्ष गर्मी शुरू भेला पर देशक अनेक राज्य मे जलसंकट भ' जाइछ। देश मे 144 करोड़ एकड़ फीट पानि उपलब्ध अछि जाहि मे 14 करोड़ एकड़ फीट जलक हेतु बांध ओ जलाशय छैक। अर्थात् 10 प्रतिशत जलक उपयोग होइछ आ बाद बाकी व्यर्थ समुद्र मे बहि जाइछ। दोसर दिस जलक अभाव मे अन्य राज्य मे अकालक स्थिति अछि। वर्ष 1982 स' जलबहुल आ जलाभाव बला क्षेत्रक विस्तृत सर्वेक्षण अध्ययन आदि कयल गेल। सरकार एहि निष्कर्ष पर आयल अछि जे येन केन प्रकारेण नदी-जोड़बाक परियोजना कें राष्ट्रीय एजेण्डा पर अंकित कयल देल जाय। वर्ष 2002 मे स्वतंत्रता दिवस पर राष्ट्रपति अपन अभिभाषण मे एहि आशय पर जोर देलनि। उच्चतम न्यायालय कम स' कम समय मे एहि परियोजना कें पूरा कराबक आदेश देलक तथा स्पष्ट कहलक जे परियोजना पूरा करबाक हेतु धन तथा यदि राज्य सरकार परियोजनाक मंजूरी नहि दैत अछि तखन केन्द्र सरकार कानून बना कय ओकर सहमतिक अनिवार्यता कें समाप्त कय दिय। संगहि ई परियोजना 10 वर्ष मे पूरा कय देल जाय। केन्द्र सरकारक अनुसार परियोजनाक लागत 5,60,000 करोड़ रुपया तथा एहि मे 43 वर्ष समय लागत। वर्ष 2003 मे सरकार टास्क फोर्स बनायलक जाहि मे सिविल इंजीनियर्स तथा जल संसाधन

मंत्रालयक अधिकारी शामिल छथि। टास्क फोर्स द्रुत गति स' काज कय रहल अछि तथा उच्चतम न्यायालय कें अपन प्रतिवेदन मे स्पष्ट कयलक अछि जे एहि वर्ष मे कम स' कम एक या दूटा नदी कें जोड़बाक काज शुरू भ' जायत। एहि परियोजना कें देशक जीवन रेखा कहल गेल छैक।

नदी इंजीनियरिंगक विराट ओ चमत्कारिक परिवर्तनक पूर्व पीठिका मे यदि पैघ-पैघ आशंका ठाढ़ कयल जाय त' ई कोनो अस्वाभाविक बात नहि। जखन भाखड़ा नांगल बनि रहल छल त' जबरदस्त आशंका उठायल गेल छल। आइ वैह भाखड़ा नांगल पंजाब ओ हरियाणा मे रेकर्ड अन्न उत्पादनक तथा संपन्नताक मुख्य साधन अछि। सरदार सरोवर योजनाक घोर विरोध नर्मदा बचाओ आन्दोलन द्वारा कयल गेल। किन्तु आइ नर्मदा पर बनल सरदार सरोवर खेत ओ आबादीक प्यास बुझा रहल अछि। थॉम्स एडीशनक बिजली स' प्रकाशक घोर विरोध नामी प्रोफेसर जॉन हेनरी पेपट कयने छलाह। रेलवेक आविष्कार संभावना पर विशेषज्ञ हर्बर्ट मेलबिले विरोध कयने छलाह। मार्च 1825 मे एकटा त्रैमासिकी घोड़ागाड़ी स' दुगुना तेज दौड़यवाला रेल इंजनक कल्पना कें वाहियात कहने छलाह। 1894 मे अमेरिकाक खगोलविद हवाई जहाजक उड़ान कें एक असंभव कल्पना कहने छलाह। मिथिला अपन जलग्रहण क्षमताक बले भारतक आधा आबादी कें अन्न स' भरण-पोषण ओ सस्त ऊर्जा शक्ति स' अपन ओ पड़ोसी राज्य कें इजोत दय सकैत अछि। मुदा सरकारक गलत नीतिक कारण सबटा उनटे भ' गेल। डैम नहि बनायल गेल, बांध बना देल गेल। बांधक निर्माण पोख्ता नहि कयल गेल। सामयिक मरम्मति ओ पर्यावरण व्यवस्था नहि भेल। विस्थापितक समुचित आवासक व्यवस्था सरकारक संचिकाक शोभा बढ़वैत रहल। राजनेताक परिवारक सब ठेकेदार भ' गेल। नदीक पेट मे बालु आ काशक सफाई नहि भेल। राजनेता ओ अफसर लूटि खायल। तखन हक्कन कनबे करब। नदी पर बांधक घोर विरोध अपना अंचल मे छैक। बाढ़िक रोकथाम, पटौनीक समुचित व्यवस्था, सस्त ऊर्जा, मत्स्यपालन, नाव-परिवहन सभटा हाई डैम, बांध, नदी कें जोड़ला स' संभव अछि। कुतर्क पर ध्यान देला स' मात्र अनिष्ट होयत। तीस साल पूर्व नदी इंजीनियरिंगक विशेष ओ तत्कालीन केन्द्रीय मंत्री डा. के.एल. राव कें गंगा ओ कावेरी कें जोड़बाक प्रस्ताव असंभव नहि लगलन्हि। एखनो नहि छैक।

नदी सब कें जोड़बाक कार्यक आधार अत्यन्त वृहत होयत। राष्ट्रीय जल विकास अभिकरण द्वारा प्रायद्वीपीय अवयव तथा हिमालयीय अवयवक लेल निम्नांकित लिंक सब हक प्रस्ताव प्रस्तुत कयल गेल छैक। हिमालय घटक मे 14 नहरमालिकाक निर्माण होयत तथा ओहि स' हमरा लोकनिक समस्याक निदान अवश्य होयत। पैघ जलग्रिड जे

ब्रह्मपुत्र-गंगा कें जोरि कय सुवर्ण रेखा तथा महानदी कें जोरत ओहि स' असम, पश्चिम बंगाल, बिहार, झारखंड एवं उड़ीसा लाभान्वित होयत। बिहार सर्वाधिक लाभान्वित होयत कारण एकरा दूटा ग्रिड स' जल भेटत।

लिंक सभक नाम

प्रायद्वीपीय अवयव	हिमालयीय अवयव
1. महानदी (मनिभद्रा) गोदावरी (डोलेस्वरम)	कोसी-मेची
2. गोदावरी इन्याम्पली-कृष्णा (नागार्जुन सागर)	कोसी-घाघरा
3. गोदावरी (इन्याम्पली)-लोडैम-कृष्णा (नागार्जुन सागर टेली पौंड)	गंडक-गंगा
4. गोदावरी (पोलावरम-कृष्णा) (विजयवाड़ा)	घाघरा-यमुना
5. कृष्णा (अलमटी पेन्नार)	शारदा-यमुना
6. कृष्णा (श्रीसैलम पेन्नार)	यमुना-राजस्थान
7. कृष्णा (नागार्जुन सागर) पेन्नार (सोमसिला)	राजस्थान-साबरमती
8. पेन्नार (सोमसिला) कावेरी (ग्रैंड एनीकट)	चुनार-सोनबराज
9. कावेरी (कटालय) वैगे-गुण्डर	सोनडैम-गंगाक दक्षिणी सहायक नदी सभ
10. केन-बेतवा	ब्रह्मपुत्र-गंगा (मानस-संकोस-तिस्ता-गंगा)
11. पार्वती-कालीसिंघ-चम्बल	ब्रह्मपुत्र-गंगा (जोगीघोपा-तिस्ता-फरक्का)
12. दमनगंगा-पिंजल	गंगा-दामोदर-स्वर्णरेखा
13. पर-ताप्ती-नर्मदा	फरक्का-सुन्दरवन
14. बेदती-वारदा	स्वर्णरेखा-महानदी
15. नेभावती-हेमावती	
16. पम्बा-अचनको बिल-वैप्पा	

वर्त्तमान मे मात्र संभाव्यता अध्ययन कयल गेल छैक। योजनाक तकनीकी संभाव्यता आ आर्थिक व्यवहार्यता स्थापित करबा मे एखन बहुत किछु करब अपेक्षित। परियोजनाक कार्यान्वयन लेल वर्ष 2016 धरिक समय निर्धारित कयल गेल छैक। वर्ष 2003 मे भारत सरकार कार्यदलक संचालन हेतु 400 करोड़ रुपयाक प्रावधान कय देलक।

भारत मे अनुभव – जल संसाधनक एकीकृत विकास हेतु राष्ट्रीय आयोगक अन्तरबेसिन जलक अन्तरण संबंधी वर्किंग ग्रुपक प्रतिवेदन मे अपना देश मे एहि प्रकारक तीन महत्वपूर्ण योजनाक उल्लेख अछि, जाहि मे जलक अन्तरबेसिन अन्तरण होइछ–(1) केरल मे अवस्थित मूला परियर बांध स' परियार नदी (मात्र केरल राज्य मे बहयवाली नदी) क जल तमिलनाडु मे सिंचाइ हेतु अन्तरण। बाद मे एहि पर एकटा जल विद्युत योजनाक निर्माण भेल छैक, (2) कृष्णा नदीक तीनू सह-घाटी राज्य द्वारा अपन-अपन हिस्सा स' चेन्नई शहरक जलक आवश्यकताक पूर्ति हेतु 5-5 टी.एम.सी. जल उपलब्ध करयाबक सहमति, (3) नर्मदा सह-घाटी राज्य द्वारा एकरारनामाक अन्तर्गत राजस्थान राज्य जे नर्मदा घाटीक एकटा गैर-बेसिन राज्य अछि जकरा नर्मदा-नदीक जल मे 5 लाख एकड़ फीट जलक उपयोगक अधिकार देल गेल छैक।

अन्तर्राष्ट्रीय अनुभव – उत्तरी कैलिफोर्निया मे सैकामेन्टी नदीक मौसमी जल प्रवाह कें कैलिफोर्निया राज्य जल परियोजना द्वारा एक संचयन जलाशय स' दक्षिणी भागक नागरिक ओ औद्योगिक जलापूर्तिक आवश्यकता हेतु जलक अन्तरण संयुक्त राज्य अमेरिका मे एहि प्रकारक सर्वाधिक उल्लेखनीय उदाहरण अछि। एहि योजना मे कुल 1000 मीटर लिफ्ट वला 715 किमी लम्बा कैलिफोर्निया एक्वाडक्ट छैक। कनाडा मे अन्तरघाटीय अन्तरणक एक दर्जन स' अधिक उदाहरण अछि जाहि मे मुख्यतया जल विद्युत उत्पादित होइछ। तत्कालीन सोवियत संघ मे वृहत नहर प्रणाली द्वारा साइबेरियाक नदीक जलक अन्तरण कय एकरा कजाकिस्तानक जलक कमी वाला नदी स' जोड़बाक योजना छल। बर्फ पिघलला स' विराट जल राशिवाली साइबेरियाक नदी कें मध्य एशियाक अभू-दरिया आर सिर-दरिया नदी जोड़बाक हेतु 2200 किमी लम्बा नहरक निर्माण एहि परियोजनाक मुख्य अंग छल।

देश मे वर्षाक दिन मे अपर्याप्त जल प्राप्त होइछ। एहि जल कें बांध ओ जलाशय बनाकय एकत्र कयल जा सकैछ। बाद मे एहि एकत्रित जल स' सिंचाइ ओ बिजली उत्पादन कयल जा सकैछ। एहि हेतु सर्वप्रथम ओहि क्षेत्रक सूची तैयार करय परत जतय गर्मी शुरू भेला पर पोखरि ओ कूप सूखा जाइछ तथा भूगर्भ जलक स्तर कम भ' जाइछ। एहन क्षेत्र मे जलाशय बनाकय भूगर्भ जलक स्तर कें घटबा स' रोकल जा सकैछ तथा सिंचाइक हेतु जल उपलब्ध करायल जा सकैछ। देशक जनसंख्या जाहि गति स' बढ़ि रहल अछि ओकरा ध्यान मे राखि ई अत्यावश्यक। 2015 तक देशक जनसंख्या बढ़ि कय 115 करोड़ भ' जयबाक अनुमान अछि। तखन एतेक पैघ जनसंख्याक हेतु 32 करोड़ टन खाद्यान्नक जरूरत होयत जे वर्त्तमान उत्पादनक लगभग डेढ़ गुणा होयत। तें हेतु सिंचाइ सुविधाक विस्तारक संगहि जलक आवश्यकता मे वृद्धि होयत। देश मे सुनियोजित विकास पूर्व सिंचित क्षेत्रक क्षेत्रफल 2.26 करोड़ हेक्टेयर छल। सम्प्रति हम सभ 6.8 करोड़ हेक्टेयर भूमि मे सिंचाइ कय रहल छी। जलक खपत बढ़त तें भूगर्भ जलक स्तर घटत। नव जलाशयक निर्माण, पुरान पोखरि कें गंहीर करब, नव नलकूप बोरिंगक गहराई पर वैज्ञानिक ढंग स' तालमेल परमावश्यक।

दक्षिण भारत मे कुल जलक आवश्यकताक मात्र 25 प्रतिशत जल उपलब्ध छैक। उत्तर मे इलाहाबादक पश्चिम आवश्यकता स' कम जल उपलब्ध छैक। ब्रह्मपुत्र मे 80 किमी संकीर्ण घाटी स' गुजरबाक कारण जलक उपयोग नहि भ' रहल अछि। सिन्धु नदीक जल भारत दिस नहि बढ़ैत अछि कारण पाकिस्तान स' जल सन्धि भेल छैक। तें हेतु राष्ट्रीय जल योजना तथा नदी जोड़बाक योजना कें प्राथमिकता देबाक छैक। भारत मे जल संसाधन मुख्यत: दक्षिण-पश्चिम मानसून स' होइत अछि। उत्तर-पूर्वी मानसून स' सेहो जल प्राप्त होइछ। वर्षा स' प्रतिवर्ष 30 अरब एकड़ फीट पानी भेटैछ। एकर अधिकांश भाग जल वाष्प बनिकय उड़ि जाइछ तथा व्यर्थ बहि कय समुद्र मे चलि जाइछ। कुल जल 190 खरब क्यूबिक मीटर उपलब्ध छैक देश मे। एहि मे नेपाल,

बांग्लादेश तथा समझौताक अन्तर्गत जे जल पाकिस्तान मे जाइत अछि, शामिल नहि। गंगा ओ ब्रह्मपुत्रक जल व्यर्थ मे बहि कय अत्यधिक जल समुद्र मे समाहित भ' जाइछ। मात्र 15 प्रतिशत जल स' सिंचाइ होइछ। भारतक कृषि क्षेत्र अमेरिका स' दुगुना अछि। मुदा उत्पादन अमेरिकाक आधा। राष्ट्रीय स्तर पर जलक असमानता ओ समस्याक समाधानक कोनो प्रयास नहि भेल छैक।

राष्ट्रीय नदी जोड़बाक परियोजना स' अनेक लाभ होयत। 35 मिलियन हेक्टेयर मे सिंचाइ व्यवस्था सुदृढ़ होयत। 34,000 मेगावाट अतिरिक्त जल विद्युत उत्पादन होयत। जलक आवश्यकताक वृद्धि नागरिक ओ औद्योगिक दुनू क्षेत्र मे 300-400 प्रतिशत होयत। खाद्यान्नक उत्पादन दुगुना भ' जायत। जल यातायात मे सुविधा होयत जाहि स' यातायात व्यय बहुत कम भ' जायत। जल विद्युत पर्याप्त उपलब्ध होयत। जे सबस' सस्ता ऊर्जा साधन। एकर निर्माण मे करोड़ों कें रोजगारक अवसर भेटत। कुशल तथा अकुशल ग्रामीण कें पर्याप्त रोजगार भेटत। निर्माण, यातायात, कृषि, मत्स्यपालन तथा पर्यटन क्षेत्र मे रोजगारक सृजन होयत। ग्रामीण क्षेत्र मे खेती एवं कृषि आधारित उद्योग मे रोजगार बढ़त। गामक लेल उपयुक्त विकास होयत। बिहार, झारखंड, उड़ीसा तथा पश्चिम बंगाल आदि क्षेत्र मे बेरोजगारी स' बढ़ल उग्रवादी आन्दोलन बढ़बाक कारणक निवारण होयत। सरदार सरोवर बांध स' लाखो लोकक जीवन बदलि गेल छैक। भाखड़ा-नांगल स' करोड़ों लोकक जीवन खुशहाल भेल छैक। चीन, अमेरिका एवं यूरोप एहि तरहक अनेक विराट परियोजना पूरा कयने अछि। कार्यान्वयन मे विराट बाधा होयत। कावेरी नदीक जलक संबंध मे तमिलनाडु आर कर्नाटक मे विकट समस्या होइछ। हरियाणा, पंजाब ओ राजस्थानक बीच जल विवाद अछि। एहि विराट योजनाक हेतु नेपाल, भूटान, बांग्लादेश स' सद्भावना बढ़ाबय परत। पर्यावरण कें चुनौती भेटत। रास्ताक पर्वतीय बाधाक विकट तकनीकी चुनौती सामने आयत। विस्थापनक समस्या होयत। जमीन अधिग्रहणक जरूरत परत। मुदा राष्ट्रीय स्तर पर जलक असमानता आ समस्या दूर करबाक हेतु सभक समाधान करय परत। बाढ़ि एवं सुखाड़ स' मुक्ति भेटत। पर्याप्त जल विद्युत उपलब्ध होयत। एहि हेतु 5,60,000 करोड़ रुपया तथा पड़ोसी राज्य स' सहयोगक व्यवस्था करय परत।

बाढ़ि आ सुखार स' बिहार मरि रहल अछि। जखन मिथिला मे 76 प्रतिशत खेती योग्य जमीन बाढ़ि स' प्रभावित छैक। शेष बिहार मे 68 प्रतिशत जमीन बाढ़ि स' आक्रान्त रहैत अछि। बिहारक परिपेक्ष्य मे सब स' महत्वक बात ई जे एहि विशालकाय योजना मे एहन संशोधन हो जाहि स' बाढ़ि आ सुखार स' यथासाध्य मुक्ति भेटय। हिमालयीय नदी सब कें जोड़बाक 10 लिंक योजना एहि परियोजना मे अछि जाहि मे पांचटा मिथिला स' संबंधित छैक। पहिल कोसी-मेची लिंक नहर जे नेपालक चतरा बराज स' शुरू होयत आ महानन्दाक सहायक नदी मेची मे मिल जायत। एहि स' नेपालक मोरंग,

विराटनगर सप्तरी आदि जिला आ मिथिलाक पूर्णिया तथा सहरसा जिला मे सिंचाइ होयत। एहि स' एहि क्षेत्र मे 2.99 लाख हेक्टेयर भूमि कें जल उपलब्ध होयत। कोसी-घाघरा लिंक नहर जे नेपालक चतरा बराज स' निकलत आर उत्तर प्रदेशक गौर नदी मे खसत। भारत-नेपाल स' ई नहर जायत जे 429 किमी लम्बा होयत। चुनार-सोन बराज। एहि मे गंगा स' सोन नदी मे इन्द्रपुरीक नदीक जल जायत। एहि स' उत्तर प्रदेशक मिर्जापुर, वाराणसी, गाजीपुर तथा बलिया एवं बिहारक रोहतास, भोजपुर, बक्सरक 0.30 लाख हेक्टेयर जमीन कें जल भेटत। सोन डैम गंगा दक्षिणी सहायक नदी सभक लिंक नहर 339 किमी लम्बा होयत आ सोन बराजक कदमा (पलामू) डैम स' निकलि कय नॉर्थ कोयल, पुनपुन, किउल, हरोहर, चन्दन नदी कें पार करैत बदुआ तक जायत। मानस-संकोस-तिस्ता लिंक नहर भूटानक भान-संकोरा नदी मे डैम बनाकय ब्रह्मपुत्रक एहि सहायक नदी सबहक जल मानस – संकोस, संकोस स' तिस्ता, तिस्ता स' महानन्दा स' गंगा मे खसायल जायत। 2.64 लाख हेक्टेयर जमीन बिहार मे तथा शेष जल आसाम ओ बंगाल कें भेटत। बिहार सरकारक अनुसार ई राज्य सरकारक सम्पदा कें लूटवाक योजना थिक। जल स' सिंचाइ होयत। एहि क्षेत्रक जमीन लाभान्वित होयत। बाढ़ि रोकवाक समाधान कोना होयत। बाढ़ि क्षेत्रक सबस' पैघ नहर कोसी-घाघरा जे बागमती, मनुसमारा-अधवारा ग्रुप, कमला आदि के क्रॉस करत। एहि स' नेपाल मे त्रियुगा, खांडो, लालवकेया नदी सवहक उपर स' सम्पर्क नहर पार करत। एहि स' बाढ़ि नहि रुकत। बागमती आ गंगा मे ई नहर लेबल क्रॉसिंग स' जायत जतय रेगुलेटर स' जल नियंत्रित कयल जायत। एहि स' बाढ़ि मे अवश्य कमी होयत तथा दरभंगा ओ अन्य भाग कें लाभ भेटत। एहि परियोजनाक कार्यान्वयन समयकाल मे बिहारक अभियंता ओ राज्य सरकार कें अपना हित मे काज सम्पदानक हेतु सचेष्ट रहय परत। राष्ट्रीय स्तर पर जलक असमानता, संकट, समस्याक समाधानक एकमात्र दीर्घकालीन ई परियोजना। गंगा-कावेरी लिंक नहरक निर्माण स' बिहार के आओर दूटा फायदा निश्चित। प्रथम एहि नहरक हेडवर्क बिहार मे होयत जाहि स' बिहार राष्ट्रीय सन्दर्भ मे अपन बात आसानी स' मनवा लेत। दोसर, केन्द्र सरकारक खर्च पर दक्षिण बिहार मे जमीनक पटौनीक लेल 10,000 क्यूसेक क्षमताक एकटा नहर मुफ्त मे भेट जातय। पटना स' पूब बराज निर्माणक स्थिति मे सैद्धांतिक रुप स' बाढ़िक स्थिति मे सुधार होयत कारण गंगा स' 60,000 क्यूसेक जल गंगा-कावेरी लिंक नहर मे ठेलल जायत। रोजगारक साधन मे वृद्धि होयत। वर्ष 2050 मे घोर जल संकटक आशंका छैक। विश्व मे 21म सदी नदीक होयत एवं जल प्रबंधन होयत मुख्य मुद्दा। बिहारक वर्तमान राजग सरकार सब नदी कें जोड़ि कय बाढ़िक समस्या स' स्थायी बचावक हेतु प्रयत्नशील अछि। एहि स' सिंचाइ सुविधा मे वृद्धि होयत। ■

सफेद पाथरक खनन

गंडकी-नारायणी-शालग्रामी नेपालक सीमा स' हाजीपुर मे गंगाक संगम तक 277 किमी बहैत छथि। शालग्रामी कें भगवान विष्णु वचन देने छलाह जे भक्त पर कृपा करबाक निमित अहांक गर्भ मे शालग्राम शिलाक रूप मे हम वास करब आ पुत्रत्वक लाभ देब। ओहि दिन स' गंडकीक धारा मे उद्गम स्थान स' आरम्भ कय त्रिवेणी घाट तक सर्वत्र विष्णु स्वरूप शालग्राम पाथर भेटैत अछि। एहि क्षेत्र मे एकरा सफेद सोना कहल जाइछ। पश्चिम चम्पारण जिलाक उत्तर क्षेत्र मे लम्बा वन पर्वत श्रृंखला अछि। एहि स' निकलयवाली पहाड़ी नदी अत्यधिक मात्रा मे सफेद गोल पाथर बहाकय लबैत अछि। वर्षाकाल मे नदीक तेज धारा मे बहि कय आबयवला पाथर कें लोक सफेद सोना कहैत अछि। एहि जिलाक पूब-उत्तर मे भिखना ढोरी स' लयकय पश्चिम-उत्तर मे वाल्मीकिनगर तक लगभग 60 किमी लम्बा एवं 3-4 किमी चौड़ा क्षेत्र मे सफेद गोल पाथरक पैघ भंडार छैक जकरा वर्षों तक निकालल जा सकैछ। एक वर्ष मे जतेक पाथर निकालल जायत ओहि स' बेसी वर्षाकाल मे पहाड़ी नदी पुनः आनि कय भरि दैत अछि।

पूर्व मे एहि क्षेत्रक प्रभावशाली लोक पाथरक खनन काज करैत छलाह। रेलवे वैगन ओ ट्रक द्वारा पाथर देशक दूरस्थ भाग मे पठायल जाइत छल। एहि तरहें लोक नहि चाहैत अछि जे एहि खनन उद्योगक सरकारीकरण भ' जाय। राज्य सरकार पाथर खनन कें अपना हाथ मे लय कें एहि कारोबारक विकास करय। सम्प्रति वन एवं पर्यावरण विभाग पाथर खनन पर प्रतिबंध लगा देने अछि। फलस्वरूप नदीक गर्भ मे पाथर भरि जयबाक कारण नदी उथर भ' गेल छथि। वनक कटाव कय रहल छथि। बिहार सरकार कें खनन उद्योग पर सक्रिय रूप मे काज करबाक योजना बनयबाक चाहि यैक। ■

निर्मली सरायगढ़ रेल ओवरब्रिज

(कोसी रेल महासेतु परियोजना)

1934क भूकम्पक बाद कोसीक भयंकर बाढ़िक कारणें निर्मली स' बलुआ होइत खनवा घाट, भपटियाही स' सुपौल तथा फारबिसगंज स' अचराघाट रेल लाइन नष्ट भ' गेल। 70 वर्ष पूर्व बाढ़िक विभीषिका स' ध्वस्त भेल निर्मली-सरायगढ़ रेलवे लाइनक सर्वेक्षण पूरा भ' गेल छैक। ई घोषणा भारत सरकारक तत्कालीन रेल मंत्री कयलनि 21.06.02 कें निर्मली स्टेशन पर। राष्ट्रीय राजमार्ग कोसी नदी पर महासेतु बना रहल अछि। अनुमंडल मुख्यालय निर्मली ओ प्रखंड मुख्यालय भपटियाहीक बीच रेल सह सड़क पुलक निर्माण काज शुरू भ' गेल छैक भारत रेल विकास योजनाक अन्तर्गत। एहि स' दरभंगा ओ सहरसा एवं दरभंगा ओ पूर्णियाक बीच दूरी बहुत कम भ' जायत। कोसी रेल महासेतु परियोजनाक अन्तर्गत तिलयुगा नदी पर पुलक निर्माण 12.01.2004 कें शुभारम्भ कय देल गेल। एहि उद्घाटनक बाद काज शुरू नहि भेल। 10 मई 2005 मे रेलवे बोर्ड एहि पुलक सब स्ट्रक्चरक निर्माण लेल 92 करोड़ रुपया स्वीकृत कयलक। एहि पुल निर्माण पर कुल लागत 325 करोड़ रुपया आंकल गेल अछि। पुलक निर्माणक लेल मॉडल स्टडीक काज पुणेक सेण्ट्रल वाटर पावर रिसर्च सेन्टर कें देल गेल छैक। दुनू दिस इम्बैंकमेंटक निर्माण लेल अर्थ वर्क शुरू भ' चुकल अछि। एहि रेल पुलक डिजाइन सी.डब्लू.पी. आर.सी. द्वारा कयल जा रहल छैक। मुख्य पुलक लम्बाई 18.76 किमी होयत। गाइड बांध कें खूब मजबूत बनायल जा रहल छैक कारण कोसी अपन धार बदलैत रहैत छथि। सात-सात किमी गाइड बांध बनेबाक योजना छैक। ■

नून नदी परियोजना

नून नदी पूर्वी चम्पारण जिलाक वृन्दावन चौर स' निकलैत छथि। हिनक विस्तार मुजफ्फरपुर, वैशाली तथा समस्तीपुर जिला मे 190 किमी अछि। सरायरंजन प्रखंडक मुसापुर गामक निकट बलान तथा जमुआरी नदी मे संगम कय बेगूसराय जिलाक अन्तर्गत नवलागढ़क समीप बूढ़ी गंडक मे विलीन भ' जाइत छथि। नून नदी परियोजनाक प्रारम्भ मुख्य रूप स' जल निकासीक लेल कयल गेल छल। नदीक 777 वर्गमील क्षेत्र जलमग्न रहैत अछि। परिणामस्वरूप ई क्षेत्र बाढ़ि प्रभावित रहैछ। जाहि स' कृषक मजदूरक आर्थिक स्थिति दयनीय रहैत छैक। 23 जनवरी 1979 मे तत्कालीन मुख्यमंत्री कर्पूरी ठाकुर एहि नदी परियोजनाक शिलान्यास कयने छलाह। वरुणा पुलक समीप समारोह भेल छल। एहि परियोजनाक लागत तखन मात्र पांच करोड़ रुपया छल। समस्तीपुर जिलाक दलसिंगसराय, पटोरी तथा समस्तीपुर अनुमंडलक अनेक पंचायतक बाढ़िक विभीषिका स' मुक्ति ओ सिंचाइक उद्देश्य लेल एहि परियोजनाक रूपरेखा तैयार कयल गेल छल, किन्तु 1,75,659 एकड़ कृषि भूमि मे सिंचाइ व्यवस्था एखन तक नहि भेल छैक। परियोजना पूरा भेला पर 15,30,50,000 स' अधिक मूल्यक उपजा लेल जा सकैत छल। सरकार वर्ष 2004 मे योजना पूरा करबाक आश्वासन देने छल। समस्तीपुर-पटना मुख्य पथ कें कोढ़िया गाम स्थित नून नदी पर बनल सड़क पुल स' लय कय भुरहा बांध तक 30 किमी क्षेत्र मे नदीक दुनू कछेड़ मे तटबंधक निर्माण कय जगह-जगह पर स्लूईस लगाकय प्रतिवर्ष बाढ़ि एवं कृषियोग्य भूमि कें बचाएल जा सकैत अछि। एखन तक एहि परियोजना पर 25 करोड़ रुपया खर्च भ' गेल अछि। 27 वर्ष स' अधिक भ' गेल मुदा परियोजना लसकले अछि। ■

गंगाक कटाव

उत्तरवाहिनी गंगा मिथिलाक सब नदीक जल संग्रह कय सागर द्वीपक पास समुद्र मे समा जाइत छथि। बिहार राज्यक चौसा (बक्सर) मे अबैत छथि। गंडकी स' संगम करैत गजक उद्धार करैत सिमरिया होइत कुरसेलाक पास बाम तट पर कोसी स' संगम करैत छथि। मिथिलाक गंडकी, वाया, बूढ़ी गंडक, बागमती, कमला, जीवछ, बलान, तिलयुगा, घेमुरा, कोसी, पनार, कंकई आदि नदी एहि क्षेत्रक ईंच-ईंच भूमिक अपरिमित जल राशि समेटकय गंगाक गर्भ कें भरैत छथि। गंगाक कटाव स' गत पांच वर्ष मे समस्तीपुर जिलाक पटोरी एवं मोहनपुर प्रखंडक 2085 घर कटि गेल छैक। 10425 लोक अपन माल-जालक संग राताराती सड़क पर आबि गेल। धरणीपट्टी, बरूआ, हरपुर, सैदाबाद, बहलोलपुर आदि गाम प्रखंडक नक्शा स' गायब भ' गेल छैक। राज्य प्रशासन साढ़े दस हजार बेघर भेल लोकक पुनर्वासक कोनो व्यवस्था नहि कय सकल अछि। एहि दुनू प्रखंडक कटाव पीड़ितक समक्ष भोजन, वस्त्र ओ आवासक मात्र समस्या नहि, चिकित्सा, शिक्षा, पशुक लेल चारा, पेयजलक समस्या मुंह बौयने ढाढ़ रहैत अछि। कटाव रोकबाक लेल कटावरोधी काज प्रत्येक वर्ष 'ऑपरेशन फ्लड फाइटिंग' चलायल जाइछ। एखन तक एहि मद मे 26 करोड़ रुपया खर्च भ' गेल छैक, मुदा परिणाम शून्य। सरकारी आंकड़ाक अनुसार 1999 मे 378, 2000 मे 172, 2001 मे 1007, 2002 मे 88, 2003 मे 110 तथा 2004 मे 220 घर घटिकय गंगा मे विलीन भ' गेल। 2005 मे कोनो क्षति नहि भेल। पुनर्वासक कोनो व्यवस्था राज्य सरकार एखन तक नहि कयने अछि। विस्थापित कें दू धूर जमीनक कोन कथा दू मीटर प्लासटिक तक नहि देल गेल। ■

जलक निजीकरण

उदारीकरण, निजीकरण ओ वैश्वीकरणक एहि युग मे सम्पूर्ण विश्व पर पूंजीवादी, साम्राज्यवादी ओ उपनिवेशवादी अर्थव्यवस्था थोपबाक प्रयास गति पर अछि। एहि प्रक्रिया मे बहुराष्ट्रीय कम्पनी सार्वजनिक क्षेत्रक मात्र उद्योगे मे नहि, राष्टक जल संसाधन पर कब्जा करबाक चेष्टा मे जोर-शोर स' सक्रिय अछि। विश्व बैंक कमजोर तथा ऋणग्रस्त राष्ट्र के ऋण स्वीकृत करबाक काल जल आपूर्तिक सार्वजनिक सेवाक निजीकरणक शर्त राखि रहल अछि। वर्ष 2000 मे विश्व बैंक 40टा राष्ट्र कें ऋण देने छल। जाहि मे 24टा राष्ट्र पर जल आपूर्ति सेवाक निजीकरणक शर्त थोपल गेल छल। भारत सरकार आस्ते-आस्ते जल आपूर्ति सेवाक निजीकरणक पक्षधर भेल जा रहल अछि। दसम योजना मे कहल गेल छैक जे जलक क्षेत्र मे निजी निवेश आकर्षित करबाक हेतु उपयुक्त प्रयास अपेक्षित छैक। आब सरकार लग जल विकास योजनाक हेतु आवश्यक धनक अभाव छैक। सरकार आम आदमीक मूल अधिकारक श्रेणी स' जल आपूर्ति कें निकालबाक प्रयास कय रहल अछि। यदि निजी कम्पनी जलक क्षेत्र मे निवेश कय लाभ कमयबाक दृष्टि स' जलक मूल्य मे वृद्धि करय आ जल आम आदमीक पहुंच स' बाहर भ' जाय त' सरकार कें कोनो आपत्ति नहि हेतै। एहि नीतिक अन्तर्गत मुंबई, दिल्ली, चेन्नई आ बंगलोरक राज्य सरकार महानगर मे जल आपूर्ति तथा गंदा जलक शुद्धीकरणक व्यवस्था कें निजी हाथ मे देबाक हेतु प्रयासरत अछि।

दिल्ली महानगर मे जलक निजीकरणक मार्ग कें विश्व बैंक प्रशस्त करबाक हेतु प्रयत्नशील अछि। एकटा विशाल फ्रांसीसी कम्पनी दिल्लीक जल आपूर्ति कें हस्तगत करबाक हेतु प्रयत्नशील देखल जा रहल अछि। वर्ष 2002 मे कर्नाटक सरकार बंगलोरक जलापूर्तिक लेल फ्रांसीसी बहुराष्ट्रीय कम्पनी नौर्थाम्प्रियन वाटर ग्रुप कें देबाक

हेतु प्रस्तुत छल। विपक्षी राजनैतिक दल ओ जनताक विरोधक कारणें रूकि गेलै। पश्चिम बंगालक बामपंथी सरकारक समर्थन स' एकटा बहुराष्ट्रीय कम्पनी हल्दियाक जल आपूर्ति हथियेबाक लेल प्रयासरत अछि। महानगर मे जलापूर्तिक निजीकरण मे विरोधक फलस्वरूप सरकार छोट-छोट नगरक जल आपूर्तिक निजीकरणक प्रयास करय लागल अछि। जाहि मे अछि उल्हासनगर निगम, सांगली, मथवाड ओ भोरज, कर्नाटकक तिरपुर क्षेत्र विकास निगम ओ अन्य।

पेयजल आपूर्तिक विरोधक बाद सरकार औद्योगिक जल आपूर्तिक निजीकरणक प्रक्रिया शुरू कयने अछि। केरल सरकार कोची-एलुआ औद्योगिक क्षेत्र कें 2500 लाख गैलन जल प्रतिदिन आपूर्ति हेतु पेरियार नदी ओ मालमपुझा सरोवर स' जल लेबाक योजना एकटा निजी फर्म कें देबाक तैयारी मे अछि। एहिना छत्तीसगढ़ सरकार द्वारा अर्द्ध-बारहमासी शिवनाथ नदीक 23.5 किमी लम्बाइक जल चारि करोड़ रुपया मे एक निजी फर्म रेडियस वाटर कें बेच देने अछि। रेडियस वाटर कम्पनी छत्तीसगढ़ औद्योगिक निगम कें जल बेचत। एहि नदीक दुनू तटक गामवासी पेयजल, सिंचाइ तथा अन्य काजक हेतु जल नहि लय सकताह। वर्ष 2002 मे संयुक्त राष्ट्र पेयजल आपूर्तिक हेतु निजी क्षेत्रक भागीदारी कें उपयुक्त मानने छल। वैह वर्ष 2004 मे कहलक जे निजी भागीदारीक प्रयास असफल रहल तें हेतु पेयजलक आपूर्ति सार्वजनिक क्षेत्र मे कयल जाय।

विश्व बैंक पुन: भारतक जल प्रबंधन व्यवस्था कें कमजोर प्रमाणित कय जलक निजीकरण योजना कें सरकारक समक्ष प्रस्तुत कयलक। फलस्वरूप, दिल्ली जल बोर्ड ओ विश्व बैंकक बीच जलक निजीकरणक हेतु एकटा समझौता भेल अछि। दिल्ली प्रदेशक जोन दू ओ तीन मे शुरू भ' रहल अछि। दिल्ली सरकार कें जलक निजीकरण योजनाक हेतु 150 मिलियन डॉलर (700 करोड़ रुपया) कर्ज भेट रहल छैक विश्व बैंक स'। विश्व बैंक अपन रिपोर्ट मे विद्युत समस्या ओ व्यवस्था, खेती ओ पेयजल आपूर्तिक संस्तुति कयने अछि। यदि एहि बैंकक रिपोर्ट कें कार्यान्वयन कयल जाय तखन आबयवला समय मे देशक भूमिगत जल व्यवस्था अरब देशक तेल भ' जायत। एहन स्थिति मे हैंड पम्प, पोखरि, इनार आदि परम्परागत संरक्षणक लेल निजी कम्पनी स' लाइसेन्स लेब अपरिहार्य भ' जायत। अमेरिका, फ्रांस, इंग्लैंड एवं आस्ट्रेलिया-विकसित देश मे जलापूर्ति प्रबंधन पूर्णत: निजीकरण भ' गेल छैक। जलक सौदागार विश्वक लगभग 30-35 करोड़ आबादी कें आच्छादित कय लेने अछि। एहि कारोबार मे एक हजार अरब डालर पूंजी निवेश भ' चुकल अछि। जल आब आस्ते-आस्ते कमोडिटी बनि रहल अछि। सुविचारित रणनीति स' बोतलबंद जल आबि चुकल छैक। भारत मे 50 करोड़ रुपयाक मिनरल वाटर बिका रहल अछि जे अतिशीघ्र एक अरब रुपया भ' जायत। विश्वबैंक 21म सदी मे जल कें सबस' पैघ मुद्दा घोषित कयने अछि। ■



जलक अन्तर्राष्ट्रीय परिदृश्य

विगत दशक मे अन्तर्राष्ट्रीय संगठन, सरकार, स्थानीय समुदाय पैघ स्तर पर स्वच्छ ओ सुरक्षित जल स' लय कय कृषिक लेल सम्पोषणीय जलक उपलब्धिक योजना बनौलक तथा ओकर क्रियान्वयनक लेल गम्भीर प्रयास प्रारम्भ कयलक। एहि मे सफलतम प्रयास वैह रहल जे स्थानीय सहयोग ओ सहभागिता, विशेष कय महिलाक सहभागिता, कम खर्च एवं सरल तकनीक पर आधारित छल। अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर 1977 मे संयुक्त राष्ट्र संघ जल पर सम्मेलन आयोजित कयलक। एहि मे जल संसाधन, उपयोग ओ क्षमताक आकलनक प्रयास कयल गेल। सम्मेलनक उद्देश्य ई छल जे राष्ट्रीय ओ अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर एहन प्रयास कयल जाय जाहि स' शताब्दीक अन्त तक विश्व मे संभावित जलसंकट स' बचल जाय। सम्मेलन मे एहि बात पर विशेष ध्यान देल गेल जे बढ़ैत जनसंख्याक सामाजिक-आर्थिक आवश्यकताक अनुकूल शुद्ध आ स्वच्छ जल उपलब्ध करायल जाय। एहि सम्मेलन स' निम्न अपेक्षा कयल गेल :

आशा कयल जाइछ जे ई सम्मेलन विश्व मे जलक विकास मे ऐतिहासिक डेग होयत ओ सब व्यक्तिक कल्याणक भावनाक प्रति एकटा नव प्रतिबद्धता, जल संबंधी समस्याक महत्ता ओ आवश्यकताक लेल नव जागरूकता, एहि समस्या कें बुझबा लेल नव वातावरण, विकासक लेल अन्तर्राष्ट्रीय साहाय्यक मार्ग स' अत्यधिक मात्रा मे धनराशिक उपलब्धता तथा सभ मे एक मजबूत प्रतिबद्धता उत्पन्न करत जाहि स' पृथ्वी रहबाक लेल एक विशिष्ट स्थान हुए। एहि सम्मेलन मे एक कार्ययोजना स्वीकृत भेल जे 'मार डेल प्लाटा कार्ययोजना' स' जानल जाइछ। एहि योजना मे जल प्रबंधनक सब अनिवार्य भाग स' संबंधित संस्तुति-आकलन, प्रयोग ओ क्षमता, पर्यावरण, स्वास्थ्य ओ प्रदूषण नियंत्रण, नीति

नियोजन ओ प्रबंधन, प्राकृतिक आपदा, सामाजिक सूचना, शिक्षा, प्रशिक्षण ओ शोध तथा क्षेत्रीय ओ अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग छल। एहि सम्मेलनक पैघ उपलब्धि छल जे 1980-1990 दशक कें अन्तर्राष्ट्रीय जलापूर्ति ओ स्वच्छता दशक घोषित कयल जाय। सम्पूर्ण विश्व कें स्पष्ट संकेत भेटय जे विश्व मे करोड़ों लोकक लेल शुद्धजल ओ स्वच्छताक सुविधा उपलब्ध नहि छैक। एहि स्थिति मे सुधारक लेल दृढ़ राजनीतिक इच्छाशक्ति ओ अधिक निवेशक आवश्यकता छैक।

'मार डेल प्लाटा' क बाद 1992 मे डबलिन मे अन्तर्राष्ट्रीय जल सम्मेलन भेल, जाहि मे 'जल ओ सम्पोषणीय विकास' पर चर्चा भेल। एहि मे चारिटा मुख्य मुद्दा बनल। जल सीमित संसाधन अछि जे जीवन, विकास ओ पर्यावरण कें दुरुस्त रखबाक हेतु आवश्यक अछि। दोसर, जलप्रबंधन ओ विकासक नीति सहभागिता पर आधारित होयबाक चाही जाहि मे उपभोक्ता, नियोजक ओ नीति निर्धारकक प्रत्येक स्तर पर सहभागिता परमावश्यक छैक। तेसर, जलक रखरखाव, बचाव ओ हस्तांतरण मे महिला केन्द्रीय भूमिकाक निर्वाह करैत छथि। चारिम, जलक सब तरहक उपयोग मे आर्थिक मूल्य छैक। अत: जल कें एक आर्थिक वस्तुक रूप मे मान्यता भेटक चाही। डबलिन सम्मेलनक खूब आलोचना भेल। एहि सम्मेलन स' कोनो ठोस सफलता नहि भेटल, किन्तु संयुक्त राष्ट्र संघक जल विकास रिपोर्ट, 2003 मे डबलिन सम्मेलन मे उठायल गेल पर्यावरण, शासन सम्पोषणीयता आदि मुद्दा एखनो महत्वपूर्ण ओ प्रासंगिक अछि। एहि मे राष्ट्रीय ओ अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर क्रियान्वनक हेतु निम्नलिखित 6टा कार्यक्रम स्वीकार कयल गेल :

1. जल संसाधनक समेकित विकास ओ प्रबंध;
2. जल संसाधनक आकलन;
3. जल संसाधन, जलक गुणवत्ता ओ जलीय पर्यावरणीय व्यवस्थाक सुरक्षा;
4. पेयजल आपूर्ति ओ स्वच्छता;
5. सम्पोषणीय खाद्यान्न उत्पादन ओ ग्रामीण विकासक लेल जल;
6. जलवायु परिवर्तनक जल संसाधन पर प्रभाव।

एहि जल विकास रिपोर्ट मे जल क्षेत्रक दूटा महत्वपूर्ण मुद्दा पर ध्यान केन्द्रित कयल गेल। जलक आवश्यकता ओ मांग तथा प्रबंधन।

मार्च 2000 मे हेग मे विश्व जल फोरम द्वारा विश्व जल परिदृश्य ओ 21म शताब्दी मे जल सुरक्षा पर मंत्रिस्तरीय घोषणा तैयार कयल गेल। विश्व जल परिदृश्य मे एहि बात पर जोर देल गेल जे जलक विषय मे एक सामान्य मत बनाओल जाय। एहि परिदृश्य मे एहि पर जोर देल गेल जे सम्पोषणीय जल संसाधनक विषय मे लोकक भूमिका ओ व्यवहार दुनू बदलयक चाही। एहि बैठकक उपरान्त जल स' संबंधित मूल तत्वक विषय मे सक्रिय प्रगति भेल। दिसम्बर 2001 मे जर्मनी मे जल पर एकटा अन्तर्राष्ट्रीय गोष्ठी

भेल जाहि मे व्यापक स्तर पर सहभागिताक संगे-संग जल संबंधी मूल मुद्दा पर गहन वाद-विवाद भेल। पांचटा मुख्य मुद्दा चिह्नित कयल गेल – निर्धनक लेल जलक सुरक्षा, विकेन्द्रीयकरण, साझेदारी, जल ओ शासन मे भागीदारी। सम्पोषणीय विकास पर विश्व शिखर सम्मेलन वर्ष 2002 मे जोहेन्सबर्ग मे आयोजित भेल। एहि सम्मेलनक पूर्व संयुक्त राष्ट्रसंघक महासचिव कोफी अन्नान घोषणा कयलनि जे एहि सम्मेलन मे जल विचार-विमर्शक एकटा विशेष मुद्दा होयबाक चाही। एहि सम्मेलन मे स्पष्ट भेल जे बिना जलक उचित प्रबंधन कें सम्पोषणीय विकास संभव नहि। जलक बिना भविष्यक कल्पना असंभव। उत्तम स्वच्छता कें अन्तर्राष्ट्रीय कार्ययोजनाक केन्द्र बिन्दुक रूप मे मान्यता प्राप्त भेल। शिखर सम्मेलनक कार्ययोजना मे जल संसाधन ओ निर्धनता उन्मूलन, आपदा प्रबंधन, स्वास्थ्य ओ खाद्य सुरक्षा आदिक बीच अन्तरसंबंध पर जोर देल गेल। कार्ययोजना मे जलक विषय मे उभरैत अन्तर्राष्ट्रीय मतैक्य प्रदर्शित कयल गेल।

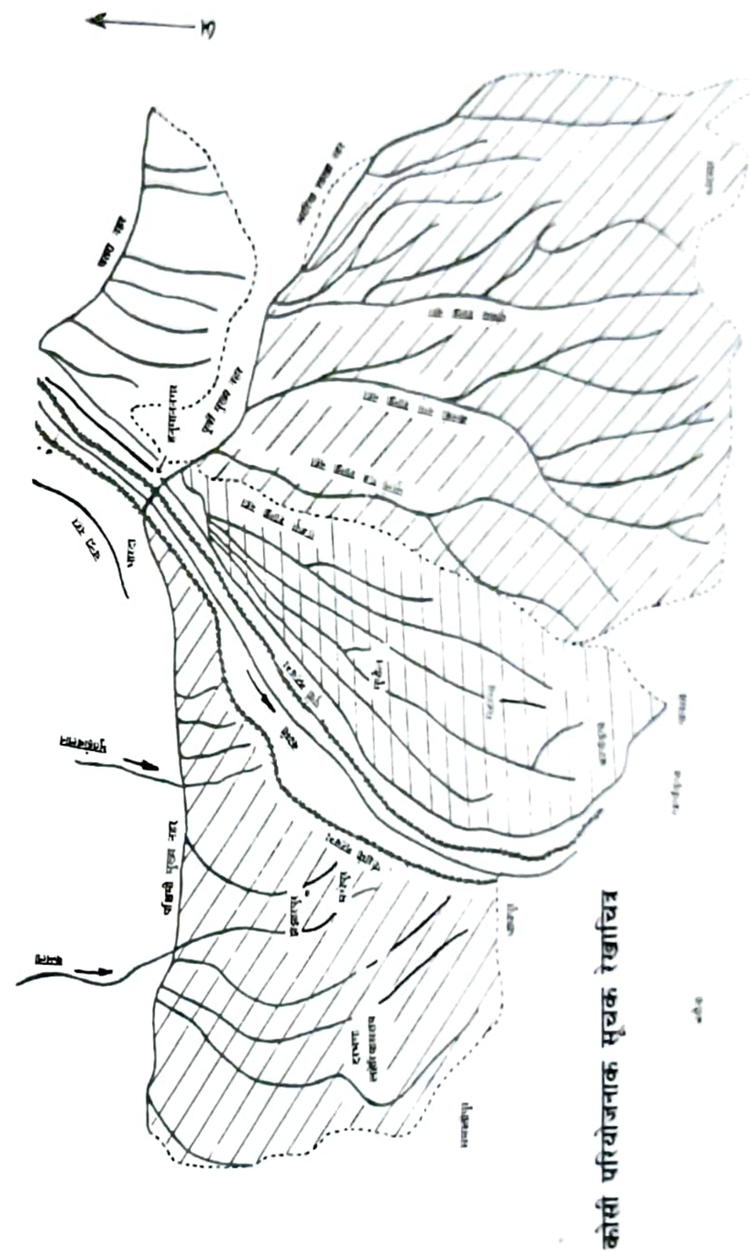
वर्ष 2002 मे विश्व बैंक एकटा नवीन जल संसाधन क्षेत्र रणनीतिक निर्माण कयलक जाहि मे जल, विकास ओ निर्धनताक कमीक बीच मजबूत अन्तरसंबंध पर जोर देल गेल। संगहि जल प्रबंधन ओ विकासक क्षेत्र मे विकसित ओ विकासशील राष्ट्रक परस्पर सहयोगक आवश्यकता कें चिह्नित कयल गेल। विकसित राष्ट्र ओ विश्व समुदाय स' अपेक्षा कयल गेल जे ओ निवेश आ गारन्टीक साधनक प्रयोग स' विकासशील राष्ट्रक जलक्षेत्र मे निवेशक जोखिम मे भागीदार बनय। विकासशील राष्ट्र मे जलनिवेश क्षेत्र मे पैघ बांधक निर्माण ओ निर्धन समुदायक लेल जल आपूर्ति योजना मे विकसित राष्ट्र जल प्रबंधनक एहि कार्ययोजना मे सहभागी बनय।

22 मार्च 2004 कें अन्तर्राष्ट्रीय जल दिवसक अवसर पर संयुक्त राष्ट्र संघक महासचिव कहलनि – हमरा पास अपार ज्ञान अछि ओ ओहि ज्ञान कें पृथ्वीक प्रत्येक कोन तक पहुंचेबाक क्षमता सेहो। विज्ञान प्रदत्त जानकारी सेहो अछि जाहि स' मौसमक भविष्यवाणी, कृषि प्रयोग, प्राकृतिक संसाधनक प्रबंधन तथा आपदा स' बचाव, तैयारी ओ प्रबंधन आदि मे सुधार भेल छैक। नवीन प्रौद्योगिकी भविष्य मे हमर प्रयास कें आधार प्रदान करैत रहत। किन्तु, मात्र एकटा तर्कसंगत राजनीतिक, सामाजिक ओ सांस्कृतिक प्रतिक्रिया तथा प्रत्येक स्तर पर जनसहभागिता ई सुनिश्चित कय सकैछ जे आपदाक प्रकोप कम हुए आ आपदा प्रबंधनक सीमा स' बाहर नहि जाय। स्पष्टत: जल ओ जल प्रबंधन कें अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर एकटा एहन महत्वपूर्ण तत्वक रूप मे चिन्हल गेल अछि जकरा निर्धनता तथा सम्पोषणीय विकासक वृहदतर प्रक्रिया मे केन्द्रीय स्थान छैक। एकरा लेल नीति, विधि तथा प्रबंधन प्रक्रिया मे परिवर्तनक आवश्यकता अछि। ई परिवर्तन सरल नहि परन्तु अपरिहार्य तथा आस्ते-आस्ते अन्तर्राष्ट्रीय चिन्तन ओ कार्ययोजना मे स्थान पाबि रहल अछि। जलक शासन संबंधित प्रमुख मुद्दा जे जल संबंधी नीति, विधि, संस्था ओ

प्रबंधन द्वारा संबोधित तथा ओहि मे प्रतिबिंबित होयबाक चाही ओ निम्नांकित अछि:

1. जलक वितरण ओ आवंटन स' संबंधित मूल सिद्धांत -समानता ओ कुशलता,
2. जल प्रबंधन हेतु समेकित ओ पूर्णतावादी प्रबंधकीय उपागमक आवश्यकता,
3. सरकार, समाज ओ निजी क्षेत्रक भूमिका ओ जल संसाधनक स्वामित्व प्रबंधन ओ प्रशासन संबंध मे ओकर उत्तरदायित्वक स्पष्टीकरण,
4. जल अधिकार संबंधी विधानक अभाव आ ओहि मे परस्पर संघर्ष,
5. जल प्रबंधन मे महिलाक भूमिका
6. जलक मात्रा तथा गुणवत्ताक मापदंडक अभाव।

विश्व नव शताब्दी मे प्रवेश कयलक मुदा भयंकर जल संकटक खतरा मड़रा रहल अछि। सब देश विशेषत: विकासशील देशक सम्मुख सुरक्षा, स्थायित्व तथा पर्यावरणीय सम्पोषणीयताक गम्भीर चुनौती उतपन्न भ' गेल छैक। एहि संकट कें देखैत संयुक्त राष्ट्र संघ आह्वान कयलक जे 2015 तक मनुष्यक संख्या औसत स' आधा करबाक प्रयास कयल जाय। एहि लक्ष्यक प्राप्तिक लेल 22 मार्च 2005 स' 2015 तकक दशक कें अन्तर्राष्ट्रीय जल दशक घोषित करैत संयुक्त राष्ट्र महासभा एहि तथ्य पर जोड़ देलक जे एहि दशक मे जल स' संबंधित मुद्दा पर अधिकाधिक ध्यान, जल स' संबंधित विकास कार्य मे महिलाक भागीदारी सुनिश्चित तथा जल स' संबंधित लक्ष्यक प्राप्तिक लेल सब स्तर पर सहयोगक लेल विशेष कार्य कयल जाय। एहन जल प्रबंधन रणनीति विकसित कयल जाय जाहि स' जल संसाधनक गैर सम्पोषणीय शोषण रोकल जा सकय तथा जाहि स' जल तक समान पहुंच ओ पर्याप्त आपूर्ति कें प्रोत्साहित कयल जा सकय। एकरा हेतु जलक शासन ओ प्रबंधन के समेकित ओ सुसंबंध उपागमक आवश्यकता अछि। ■



कोसी परियोजनाक सूचक रेखाचित्र

गण्डक परियोजनाक सूचक रेखाचित्र

परिशिष्ट

- वैदिक वांग्मय मे जलक एक सय पर्यायवाची ओ समानार्थी शब्द अछि।
- ऋग्वेदक आपसूक्त जल पर लिखल विश्वक पहिल कविता थिक।
- पृथ्वीक दू-तिहाई भाग मे जल अछि।
- भूमंडल पर कुल जल भंडारणक क्षेत्रक लम्बाईक आकलन लगभग 1400 किमी अछि। एहि मे 97.3 प्रतिशत खारा ओ 2.7 प्रतिशत पेयजल अछि। जल सृष्टिक केन्द्रीय तत्व अछि।
- घनगर बोन वर्षाक लगभग 90 प्रतिशत जल अपना मे समाहित करैत अछि। बाद मे वातावरण मे छोड़ैत अछि। बोन कें काटला स' बाढ़ि आयत तथा जलक अभाव रहत।
- जल दू तत्व स' मिलि कय बनैत अछि, जाहि मे दू भाग हाइड्रोजन ओ एक भाग ऑक्सीजन होइछ।
- मानवक शरीर मे 2/3 (70 प्रतिशत) जल अछि। स्वस्थ रहबाक हेतु 5 प्रतिशत भाग प्रतिदिन बदलक चाही। मानवक मस्तिष्क मे 75 प्रतिशत जल होइत अछि।
- पौधा मे 60 प्रतिशत जल अछि। पातवला तरकारी मे 90 प्रतिशत, टमाटर मे 95 प्रतिशत, दूध मे 95 प्रतिशत, अंडा मे 75 प्रतिशत
- संरक्षित नदी ओ झील मे मात्र 0.1 प्रतिशत जल अछि।
- पृथ्वी पर स्वच्छ जलक सब स' पैघ भंडार पोलर आइस कैम्प पर पाओल जाइछ।
- एक बेर वाष्पित भ' गेलाक बाद जलक एकटा कण लगभग दस दिन वायुमंडल मे रहैत अछि।

- दांत कें ब्रश स' साफ करय मे दू स' पांच गैलन जल खर्च होइत अछि।
- शौचालयक प्रयोग मे दू स' सात गैलन जल खर्च होइछ। मात्र पांच मिनट शॉवर लेला स' 100 गैलन जल खर्च होइछ। एक आदमी औसतन 50 गैलन जल व्यवहार करैत छथि।
- मिथिलाक क्षेत्रफल — 51.462 लाख हेक्टेयर
- बाढ़ि प्रभावित क्षेत्र — 44.46 लाख हेक्टेयर
- बाढ़ि प्रभावित क्षेत्रक प्रतिशत — 86.4
- तटबंधक कुल लम्बाई — 2952 किमी
- बाढ़ि सुरक्षित क्षेत्र — 27.16 लाख हेक्टेयर
- बाढ़ि स' सुरक्षित क्षेत्रक प्रतिशत — 61
- बाढ़ि स' असुरक्षित क्षेत्रक प्रतिशत — 39

■



सन्दर्भ

1.	मिथिला तत्व विमर्श	म.म. परमेश्वर झा, मैथिली अकादमी
2.	Mithila, A Union Republic	Dr. Lakshman Jha, Darbhanga
3.	The Northern Border	वैह
4.	Mithila will Rige	Dr. Lakshmi Narayan Singh, Darbbhang
5.	बिहार का आधुनिक भूगोल	डा. रामप्यारे सिंह बिहार हिन्दी ग्रंथ अकादमी, पटना
6.	बिहार की नदियां (प्रथम खंड)	हवलदार त्रिपाठी सहृदय, बिहार हिन्दी ग्रंथ अकादमी, पटना
7.	जल, कल आज और कल	रामअवतार शर्मा आकार बुक्स, मयूर बिहार, दिल्ली सुषमा यादव
8.	जब नदी बंधी	सम्पादक हेमंत/रणजीव जय प्रभा अध्ययन एवं अनुसंधान केन्द्र, मधुपुर
9.	साक्ष्य (नदियों की आग)	सम्पादक : जाबिर हुसैन बिहार विधान परिषद, पटना
10.	बाढ़ से त्रस्त-सिंचाई से पस्त (उत्तर बिहार की व्यथा कथा)	दिनेश कुमार मिश्र समता प्रकाश लि. पटना
11.	बन्दिनी महानन्दा	वैह
12.	भुतही नदी और तकनीकी झांड-फूंक	दिनेश कुमार मिश्र कस्तूरबा महिला मंडल, घोघड़डीहा
13.	कोसी-उमर कैद से सजा-ए-मौत तक	वैह
14.	गंडक क्षेत्र ओ जलजमाव का घाव	वैह
15.	बाढ़ मुक्ति अभियान	वैह

16. बाढ़ि, रौदी, बिजली संकटक स्थायी समाधान — योगेन्द्र झा, मातृभाषा प्रकाशन समिति, दरभंगा
17. कोसी तटबंध व हाइडैम का राज — भगवान जी पाठक, कोसी कंसोर्टियम, सुपौल
18. Water Resources Tents Five Year Plan (2002-07) — Majiv v Medium Irrigation Sector, Govt. of India, New Delhi
19. नदियां और हम — रामेश्वर मिश्र पंकज, गांधी शान्ति प्रतिष्ठान, दिल्ली
20. भारत का आर्थिक विकास — एम.एल. राय, नव विकास प्रकाशन, पटना
21. मिथिलाक आर्थिक विकास — नरेन्द्र झा, शिखा प्रकाशन, पटना
22. मिथिलाक जनपदीय विकास — नरेन्द्र झा, शिखा प्रकाशन, पटना
23. मिथिलांचल मे विद्युत समस्या (अक्टूबर-दिसम्बर 2002) — नरेन्द्र झा, घर-बाहर चेतना समिति, पटना
24. सप्तकोशिकी डेम परियोजना (11 अक्टूबर-दिसम्बर 2003) — नरेन्द्र झा
25. मिथिलाक कुशल मंगलक प्रतीक अछि माछ — शिशिर कुमार वर्मा, समय-साल पटना
26. पानी के निजीकरण की तैयार — डा. रामप्रताप गुप्ता, दैनिक जागरण, पटना
27. निजी हाथों मे जाती पानी — डा. विशेष गुप्ता, दैनिक जागरण, पटना

■





नरेन्द्र झा

दरभंगा जिलाक तरौनी गाम मे अनन्तचतुर्दशी, 1936 मे जन्म। दरभंगा, दिल्ली ओ कोलकाता मे अध्ययन। कोलकाता स' चार्टर्ड एकाउंटेंटक डिग्री आ ओतहि किछु वर्ष अपन पेशाक संगहि 'मिथिला दर्शन' आ 'मिथिला मिहिर' मे मिथिलाक अर्थव्यवस्था पर नियमित लेखन। मैथिली आंदोलन आ सांस्कृतिक गतिविधि मे संलग्न। सम्प्रति पटना मे पेशा स' जुड़ल रहैत विविध पत्र-पत्रिका मे लेखन।

कृति:

मिथिलाक आर्थिक विकास (वर्ष 2000)

मिथिलाक जनपदीय विकास (वर्ष 2005)

शेखर सम्मान, 2006 स' सम्मानित

सम्पर्क:

झा एण्ड एसोसिएट्स

मदनधारी भवन

एस. पी. वर्मा रोड

पटना- 800 001

